विक्रम पंचांग

# सम्राट विक्रमादित्य

उज्जयिनी के सार्वभौम सम्राट विक्रमादित्य अपने आकर्षक और प्रभावशाली व्यक्तित्व और स्वीकार्य कृतित्व के कारण सतत लोकप्रिय तथा भारतीय अस्मिता के उज्ज्वल प्रतीक रहे। वे शकारि तथा साहसांक थे। वे शक विजेता, सम्वत् प्रवर्तक, वीर, दानी, न्यायप्रिय, प्रजावत्सल, स्तत्व सम्पन्न थे। वे साहित्य, संस्कृति तथा विज्ञान के उत्प्रेरक रहे। उनकी सभा कालिदास, वराहमिहिर, वेतालभट्ट, अमरसिंह, घटखर्पर, धन्वन्तरि, वररुचि, शंकु, क्षपणक आदि नवरत्नों से उज्ज्वल थी। अपने गुणगौरव के कारण उनका नाम परवर्ती अनेक राजाओं की उपाधि बनता रहा। भारत के इतिहास में रामराज्य के बाद विक्रमादित्य के सुशासन का ही स्मरण किया जाता रहा। भारतीय सांस्कृतिक प्रभामंडल का वे आदर्श प्रतीक और लोकमान्य हैं।

**डॉ. मोहन यादव**
मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश शासन

# संदेश

उज्जयिनी के सार्वभौम `सम्राट विक्रमादित्य' द्वारा आरंभ किया गया ऐतिहासिक `विक्रम सम्वत्' दुर्जेय विदेशी शकों पर सम्राट विक्रमादित्य की विजय की अभूतपूर्व स्मृति है। `नव सम्वत्सर' के इस पावन अवसर पर महाराजा विक्रमादित्य शोधपीठ द्वारा प्रकाशित `विक्रम पंचांग' महादेव शिव के दिव्य रूपों और महिमा को दर्शाता है। महादेव शिव अनादि तथा सृष्टि प्रक्रिया के आदिस्रोत हैं और यह काल महाकाल ही ज्योतिषशास्त्र के आधार हैं। शिव का अर्थ कल्याणकारी माना गया है। भारत का सर्वमान्य सम्वत् `विक्रम सम्वत्' ही है। भारतीय संस्कृति के लिए यह गौरवपूर्ण बात है कि भारतवर्ष में सम्राट विक्रमादित्य द्वारा प्रवर्तित विक्रम सम्वत् संसार के प्रायः सभी प्रचलित ऐतिहासिक सम्वतों में प्राचीनतम है। भारतीय जनमानस की दैनिक गतिविधि में इस सम्वत् का सर्वोच्च स्थान है।

विक्रम सम्वत् एवं विक्रम पंचांग भारतीय पंचांगों और काल निर्धारण का आधार है। इस पंचांग की विशेषता है कि यह वैज्ञानिक रूप से काल की गणना के आधार पर निर्मित है। भारत में काल गणना की अनेक पद्धतियाँ प्रचलित रही हैं जिसमें सूर्य सिद्धांत सबसे प्राचीन पद्धति मानी जाती है। विक्रमादित्यकालीन ज्ञान परंपरा और उसकी विशेषताओं के कारण भारत वर्ष के विकास में एकरूपता, दिखाई देती थी। इस काल की ज्ञान परंपरा और शिक्षा ने भारत का पथ प्रदर्शन किया।

भारत ने ज्ञान के महत्वपूर्ण केंद्र के रूप में संपूर्ण विश्व का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया है। विक्रमादित्य भारतवर्ष के सांस्कृतिक विकास, शौर्य और वैभव के प्रतीक हैं। वे अपने औदार्य, विद्वत्ता, साहित्य-सेवा, अलौकिक प्रतिभा एवं दिग्विजय के कारण सर्वश्रुत थे।

हिंदू सनातन परंपरा में पंचांग का महत्व सर्वज्ञात है। विक्रम सम्वत् 2081 का विक्रम पंचांग भगवान श्रीमहाकालेश्वर की भिन्न-भिन्न छवियाँ, द्वादश ज्योतिर्लिंगों तथा शिव के मंगलकारी रूपों पर केंद्रित है। निश्चित ही यह हमारी प्राच्य विद्याओं और सनातनी ज्ञान को समकालीन समाज के सम्मुख अपने वृहद और विस्तृत स्वरूप में प्रस्तुत करेगा।

**डॉ. मोहन यादव**
मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश शासन


विक्रम पंचांग

नियामक — डॉ. मोहन यादव, मुख्यमंत्री मध्यप्रदेश
धर्मेन्द्र सिंह लोधी, राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) संस्कृति, पर्यटन एवं धार्मिक न्यास एवं धर्मस्व विभाग
शिव शेखर शुक्ला, प्रमुख सचिव, म.प्र. शासन, संस्कृति एवं पर्यटन
सम्पादक — श्रीराम तिवारी
सह सम्पादक — राजेश्वर त्रिवेदी
सहयोग — पं. चंदन श्यामनारायण व्यास, डॉ. सर्वेश्वर शर्मा
आकल्पन — मध्यप्रदेश जनजातीय संग्रहालय, भोपाल



स्वत्वाधिकार — प्रकाशकाधीन



विक्रम संवत् 2081
ईस्वी 2024-25

महाराजा विक्रमादित्य शोधपीठ
स्वराज संस्थान संचालनालय, संस्कृति विभाग
मध्यप्रदेश शासन का प्रकाशन
बिड़ला भवन, देवास रोड, उज्जैन-456010
दूरभाष : 0734-2521499

# श्रीमहाकालेश्वर
## मंदिर, उज्जैन

# आदि देव, अनादि देव, हर काल के देव 'महादेव'

भारतीय सनातन परंपरा में शिव का विशेष महत्व रहा है। जिस प्रकार इस ब्रह्माण्ड का ना कोई आरंभ है, और न ही कोई अंत उसी प्रकार महादेव शिव भी अनादि है। सम्पूर्ण ब्रह्मांड शिव के अंदर समाया हुआ है जब कुछ नहीं था तब भी शिव थे,जब कुछ न होगा तब भी शिव ही होंगे। शिव को महाकाल कहा जाता है, अर्थात समय। शिव अपने इस स्वरूप द्वारा पूर्ण सृष्टि का भरण-पोषण करते हैं। इसी स्वरूप द्वारा परमात्मा ने अपने ओज व उष्णता की शक्ति से सभी ग्रहों को एकत्र कर रखा है। परमात्मा का यह स्वरूप अत्यंत ही कल्याणकारी माना जाता है क्योंकि पूर्ण सृष्टि का आधार इसी स्वरूप पर टिका हुआ है। महादेव अर्थात् महाकाल को एक बार इस दुनिया को बचाने के लिए विष का पान करना पड़ा था और उस महाविनाशक विष को अपने कंठ में धारण करना पड़ा था। इसी कारण से उन्हें नीलकंठ के नाम से भी जाना जाता है। शिव में परस्पर विरोधी भावों का सामंजस्य देखने को मिलता है। शिव के मस्तक पर एक ओर चंद्र है, तो दूसरी ओर महाविषधर सर्प भी उनके गले का हार है। वे अर्धनारीश्वर होते हुए भी कामजित हैं। गृहस्थ होते हुए भी श्मशानवासी, वीतरागी हैं। सौम्य, आशुतोष होते हुए भी भयंकर रुद्र हैं। शिव परिवार भी इससे अछूता नहीं हैं। उनके परिवार में भूत-प्रेत, नंदी, सिंह, सर्प, मयूर व मूषक सभी का समभाव देखने को मिलता है। वे स्वयं द्वंद्वों से रहित सह-अस्तित्व के महान् विचार का परिचायक हैं। महाकाल को काल का नियंत्रक कहा जाता है। वैसे भी जीवन में काल अर्थात् समय की महत्ता निर्विवादित है। संसार में सभी कुछ समय के आधीन है। जो व्यक्ति समय का सदुपयोग करते हुए उसके अनुसार चलता है, वही प्रगति करता है और जो समय को सम्मान नहीं देता, वह जीवन में पिछड़ जाता है। पौराणिक ग्रंथों में अवंतिका (उज्जैन) को काल के देवता भगवान श्रीमहाकालेश्वर की नगरी के रूप में गौरव प्राप्त है। द्वादश ज्योतिर्लिंगों में गिने जाने वाले भगवान श्रीमहाकालेश्वर को शास्त्रों में मृत्युलोक (भूलोक) का अधिपति कहा गया है। शिव की जटाएँ सूर्य केशी और शिव कपर्दी कही जाती हैं। शिव मस्तक पर चन्द्रमा अमृतमय सोमात्मक मन है। मन की ज्योतिष्मती समाधि ही अमृत की प्राप्ति है। इन्द्रियों के नवद्वारों की विषयवृत्तियों को जीत लेना ही विषपान है। मृत्यु पर विजय प्राप्त करना ही विजय है। शिव के मस्तक पर चन्द्रमा और कण्ठ में विष 'चन्द्रमा मनसो जात' मन चैतन्य या अमृत का प्रतीक है और कण्ठ-पंचभूतों का प्रतीक है। मन और कठ-प्राण इन दोनों के बीच में हैं। जब वह मन के साथ जुड़ता है तो अमृतात्मा बन जाता है और जब पंचभूत के साथ मिलता है तो मृत्यु का अनुगामी बन जाता है। शिव का नटराज स्वरूप सृष्टि की स्थिति और संहार का प्रतीक है। सत्य-असत्य दोनों शिव के स्वरूप एक साथ विद्यमान हैं। शिव का नन्दी आनन्द का प्रतीक है। वेदों में सूर्य को वृष कहा गया है। शिव त्र्यम्बक हैं-जिनकी तीन माताएँ हैं। सूर्य, चन्द्र और अग्नि-ये तीन नेत्र हैं। पृथ्वी, अन्तरिक्ष और द्यौ-मन, प्राण और वाक, यही तो तीन माताएँ हैं। द्यावापृथ्वी रूप विश्व है, इसमें द्युलोक पिता और पृथ्वी माता है। इसे ही रोदसी ब्रह्माण्ड कहते हैं। यह बाहर भी है और प्रत्येक प्राण केन्द्र में भी है। यही रुद्र की सृष्टि है। शिव, सनातन हिंदू परम्परा के, आध्यात्मिक तथा यौगिक प्रतीक चिन्हों में परमचैतन्य के सम्भवत: सर्वोच्च उद्बोधक प्रतीक हैं। वास्तव में शिव स्वयं परमचैतन्य हैं, वह नित्य अस्तित्व हैं, शिव ही सत्ज़्य हैं। शिव अनंत चैतन्य हैं। शिव वह परम शून्य हैं जिससे समस्त सृष्टि जन्म लेती है। शून्यस्वरूपी शिव वह अतिब्रह्माण्डीय गर्भाशय हैं जिसमें से सभी प्राणियों की उत्पत्ति हुई है। समस्त ब्रह्माण्डों के आदि बीज भी शिव हैं। शिव के अंतर में ही शक्ति, प्रकृति की अनंत संभावनाओं के रूप में, विश्रामरत हैं। शिव तब तक अव्यक्त हैं, जब तक शक्ति; प्रकृति को अभिव्यक्त करते हुए, जागृत और गतिशील नहीं होती। प्रकृति में वह सब अंतरभूत है जो भी ब्रह्माण्ड स्वरूप में प्रकट होता है, जगत और जीव, जिसको हम व्यावहारिक भाषा में सृष्टि की संज्ञा देते हैं। यद्यपि शिव समस्त सृष्टि में व्याप्त हैं, फिर भी कोई भी शिव का पूर्ण ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकता, क्योंकि शिव स्वयं ही सकल सृष्टि के ज्ञाता एवं दृष्टा हैं, सर्व अस्तित्व के महासाक्षी वह स्वयं हैं। भगवान शिव ने हर काल में लोगों को दर्शन दिए हैं। वे सतयुग में समुद्र मंथन के समय भी थे और त्रेता में राम के समय भी। वेद उपदेश देते हैं कि जो सृष्टि का मूल कारण अग्नि है वही रुद्र या शिव है। अग्निवैरुद्रः की घोषणा ब्राह्मण ग्रंथों में वर्णित है। भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में रुद्राणां शकराश्चास्मि और श्रीमद्भागवत में रुद्राणां नील लोहितरू कहा है। मन्यु, मनु, महिनस, महान्, शिव ऋतध्वज, उग्ररेता, भव, काल, वामदेव और धृतव्रत ये एकादश रुद्र रूप है। शिव के साथ ही हृदय, इन्द्रिय, प्राण आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी, सूर्य, चन्द्र और तप में शिव के ग्यारह स्थान है। धी वृत्ति, उशना, उमा, नियुति, सर्पि, इला, अम्बिका, इरावती, सुधा और दीक्षा ये क्रमशः शिव की पत्नियाँ हैं। इसी प्रकार प्रेत, पिशाच, भैरव, विनायक, यातुधान, डाकिनी, शाकिनी, कूष्माण्ड, बेताल, योगिनी आदि शिव के गण व उनकी रचनाएँ है। भारतवर्ष में ऐसा कोई ग्राम नहीं, जहाँ शिव का मंदिर न हो। पंचवक्त एकवक्त आदि श्री विग्रह प्राचीन काल से प्रचलित है। अनादि ऋषि परम्परा में प्रतिष्ठित शिव लिंगोपासना श्रुति-स्मृति आगम-निगम पुराणों में अर्चित हैं। लिंगपूजा शक्ति और शक्तिमान का प्रतीक है। भारतीय संस्कृति में प्रतिमा काल्पनिक नहीं हुआ करती। ऋणात्मक इलेक्ट्रान या धनात्मक प्रोटोन दोनों की शक्ति का क्या रूप होता है? शिवशक्ति इसी का प्रतीक है। अत लिंगविग्रह शिव का शक्ति समन्वित प्रतीक है। यह विग्रह साधक को उस परमपुरुष में एकाग्र कर देता है, ऊर्जावान बना देता है। इस प्रकार शिव की बड़ी महिमा है। सम्पूर्ण विद्याओं कलाओं के भगवान शंकर आचार्य है। व्याकरण तो महेश्वर सूत्रों से ही निकला। उनका डमरू नादकाल का प्रतीक है। ताण्डव और लास्य नृत्यों के तो मूल श्रोत हैं। आयुर्वेद, धनुर्वेद समस्त ज्ञान-विज्ञान शिव के द्वारा ही सृजित है। शैव दर्शन भारतीय संस्कृति एवं साहित्य की प्राण ऊर्जा है। कश्मीर के शैव दर्शन ने विदेशी साहित्यकारों को आकृष्ट किया। कालिदास के सम्पूर्ण साहित्य में शैवदर्शन, प्रत्यभिज्ञा दर्शन की अप्रतिम उद्भावना देखी जा सकती है। द्वापर युग के महाभारत काल में भी शिव थे और कलिकाल में विक्रमादित्य के काल में भी शिव के दर्शन होने का उल्लेख मिलता है। असुर, दानव, राक्षस, गंधर्व, यक्ष, आदिवासी और सभी वनवासियों के आराध्य देव शिव ही हैं। शैव धर्म भारत के आदिवासियों का धर्म है। सभी दसनामी, शाक्त, सिद्ध, दिगंबर, नाथ, लिंगायत, तमिल शैव, कालमुख शैव, कश्मीरी शैव, वीरशैव, नाग, लकुलीश, पाशुपत, कापालिक, कालदमन और महेश्वर सभी शैव धर्म से जुड़े हुए हैं। चंद्रवंशी, सूर्यवंशी, अग्निवंशी और नागवंशी भी शिव की ही परंपरा से माने जाते हैं। भारत ही नहीं विश्व के अन्य अनेक देशों में भी प्राचीनकाल से शिव की पूजा होती रही है। इसके अनेक प्रमाण समय-समय पर प्राप्त हुए हैं। ऐतिहासिक प्रमाणों के अनुसार विक्रम सम्वत् के कुछ सहस्राब्ज़्दी पूर्व संपूर्ण धरती पर उल्कापात का अधिक प्रकोप हुआ। आदिमानव को यह रुद्र (शिव) का आविर्भाव दिखा। जहाँ-जहाँ ये पिंड गिरे, वहाँ-वहाँ इन पवित्र पिंडों की सुरक्षा के लिए मंदिर बना दिए गए। इस तरह धरती पर हजारों शिव मंदिरों का निर्माण हो गया। उनमें से प्रमुख थे 108 ज्योतिर्लिंग। शिवपुराण के अनुसार उस समय आकाश से ज्ज़्योति पिंड पृथ्ज़्वी पर गिरे और उनसे थोड़ी देर के लिए प्रकाश फैल गया। इस तरह के अनेक उल्का पिंड आकाश से धरती पर गिरे थे। पुरातात्विक निष्कर्षों के अनुसार प्राचीन शहर मेसोपोटेमिया और बेबीलोन में भी शिवलिंग की पूजा किए जाने के सबूत मिले हैं। इसके अलावा मोहन-जोदड़ो और हड़प्पा की विकसित संस्कृति में भी शिवलिंग की पूजा किए जाने के पुरातात्विक अवशेष मिले हैं। सभ्यता के आरंभ में लोगों का जीवन पशुओं और प्रकृति पर निर्भर था इसलिए वह पशुओं के संरक्षक देवता के रूप में पशुपति की पूजा करते थे। सैंधव सभ्यता से प्राप्त एक सील पर तीन मुँह वाले एक पुरुष को दिखाया गया है जिसके आस-पास कई पशु हैं। इसे भगवान शिव का पशुपति रूप माना जाता है। सुमेरिया, बेबीलोनिया, ईरान, मिस्र, असीरिया, ग्रीस (यूनान) रोम की सभ्यताएँ विद्यमान थीं। इन सभी से पूर्व महाभारत का युद्ध लड़ा गया था। उस काल में भारत में एक पूर्ण विकसित सभ्यता थी। आयरलैंड के एक पहाड़ पर एक रहस्यमय पाषाण रखा हुआ है, जो शिवलिंग की तरह ही है। इसे भाग्यशाली पाषाण कहा जाता है।

फ्रांसीसी भिक्षुओं द्वारा लिखित एक प्राचीन दस्तावेज के अनुसार इसको अलौकिक लोगों द्वारा स्थापित किया गया था। दक्षिण अफ्रीका की सुद्वारा नामक एक गुफा में पुरातत्वविदों को महादेव की छह हजार वर्ष पुरानी शिवलिंग की मूर्ति मिली जिसे कठोर ग्रेनाइट पत्थर से बनाया गया है। इस शिवलिंग को खोजने वाले पुरातत्ववेत्ता हैरान हैं कि यह शिवलिंग यहाँ अभी तक सुरक्षित कैसे रहा? हर काल में शिव पूजा के शिव दर्शन दर्शन के प्रमाण मिलते रहे हैं। उनके जीवन की कथाएँ दुनिया के अनेक धर्मों और उनके ग्रंथों में अलग-अलग रूपों में विद्यमान है। आदि देव महादेव सनातन सृष्टि के प्रतीक है।

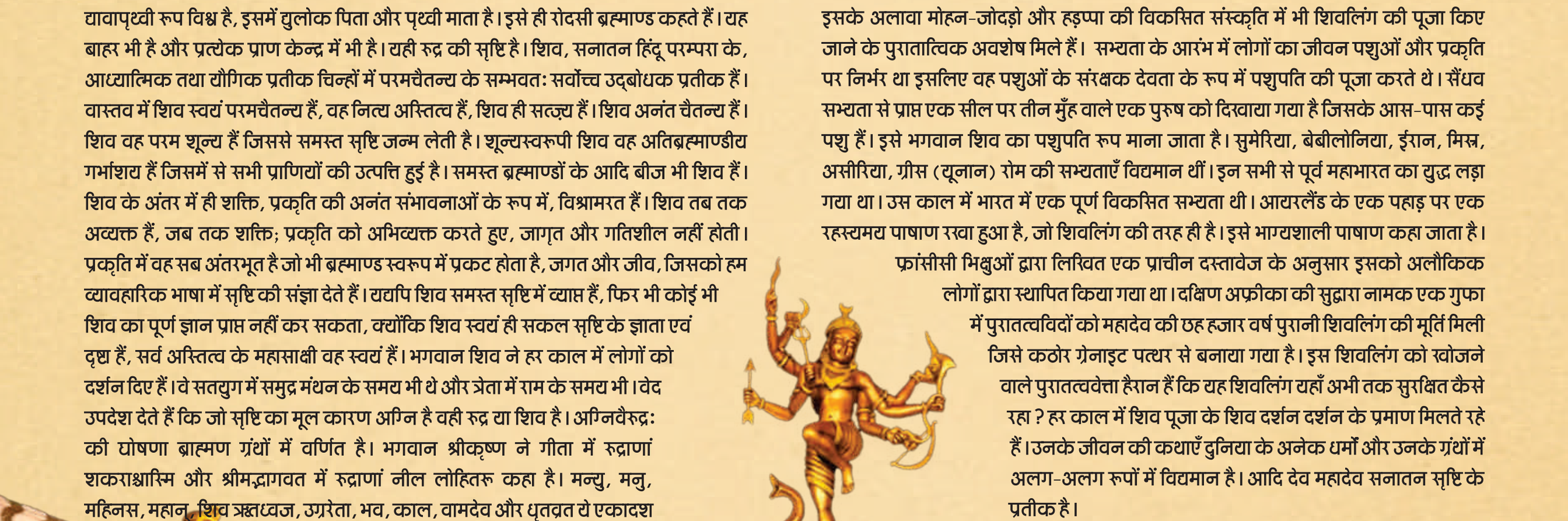

# श्रीमहाकालेश्वर

# ।। विविध सम्वत्सर ।।

देश में चर्चित, प्रचलित और अब विस्मृत हो चले विविध संवत्सर विक्रम सम्वत् की शुरूआत लगभग ईसा पूर्व 57 वर्ष पहले चैत्र शुक्ल प्रतिपदा तिथि से की गयी थी। ईसवी सन् और विक्रम सम्वत् में 57 वर्षों का अंतर है। इस हिसाब से ईसवी सन् 2022 में विक्रम सम्वत् 2079 चल रहा है। वैसे भारत में 36 तरह के प्राचीन कैलेंडर वर्ष की चर्चा की जाती रही है। हालाँकि, इनमें से अधिकांश अब प्रचलन से बाहर हैं। दुनियाभर में कई देशों के जो अपने कैलेंडर हैं उनमें नये वर्ष की शुरूआत जनवरी से अप्रैल के मध्य होती है। हमारे यहाँ फिलहाल विक्रम सम्वत्, ईस्वी सन्, हिजरी सन् आदि प्रचलित हैं। विक्रम सम्वत् अत्यन्त प्राचीन सम्वत् है। भारत के सांस्कृतिक इतिहास की दृष्टि से सर्वाधिक लोकप्रिय लोकमान्य राष्ट्रीय सम्वत् विक्रम सम्वत् ही है।

1. **सप्तर्षि सम्वत्**
   सात तारों की गति के साथ इसका संबंध माना जाता है।

2. **कृष्ण सम्वत्** (3179 वि.पू. 3236 ई.पू.)

3. **कलियुग सम्वत्** (3045 वि.पू. 3102 ई.पू.)
   इसका प्रयोग धार्मिक तिथियों के लिए इस्तेमाल वर्षों पूर्व किया गया था।

4. **युधिष्ठिर सम्वत्** (2391 वि.पू. 2448 ई.पू.)

5. **बुद्ध निर्वाण सम्वत्** (430 वि.पू. 487 ई.पू.)
   गौतम बुद्ध के निर्वाण वर्ष से इस सम्वत् का आरंभ हुआ था।

6. **वीर निर्वाण सम्वत्** (370 वि.पू. 527 ई.पू.)
   अंतिम जैन तीर्थंकर महावीर के निर्वाण वर्ष विक्रम सम्वत् में 470 एवं ई.पू. 527 से इसका आरंभ माना जाता है।

7. **मौर्य सम्वत्** (263 वि.पू. 320 ई.पू.)
   चंद्रगुप्त मौर्य ने चाणक्य की सहायता से मौर्य साम्राज्य की स्थापना की थी। इसके साथ ही उसने मौर्य सम्वत् को आरंभ किया था।

8. **सेल्यूसिडियन सम्वत्** (255 वि.पू. 312 ई.पू.)
   सिकंदर के सेनापति सेल्यूकस ने जब पश्चिमी एशिया का साम्राज्य प्राप्त किया तब अपने नाम का सम्वत् चलाया था।

9. **लौकिक सम्वत्** (32 वि.पू. 25 ई.पू.)

10. **विक्रम सम्वत्** (57 ई.पू.)
    इसकी शुरूआत उज्जैन के लोकप्रिय सम्राट विक्रमादित्य ने शकों पर विजय प्राप्त करने के उपलक्ष्य में की थी। इसको मालव सम्वत् भी कहते हैं। मालवराज विक्रमादित्य ने शकों को परास्त कर अपने नाम का सम्वत् चलाया, यह चैत्र शुक्ल 1 से आरंभ होता है।

11. **ईस्वी सन्**
    ईसा मसीह के जन्म वर्ष से इसका आरंभ माना जाता है। ई.स. 527 को रोम निवासी पादरी डायोनिसियस ने गणना कर रोम नगर की स्थापना से 795 वर्ष बाद ईसा मसीह का जन्म होना निश्चित किया था। 1000 ईस्वी तक जाकर यूरोप सहित विश्व के अनेक देशों में इसका प्रचलन शुरू हुआ।

12. **शक सम्वत्** (135 विक्रम सम्वत्, 78 ई.)
    इसकी शुरूआत शकों द्वारा विक्रमादित्य के शासन के 137 वर्ष बाद उज्जैन पर पुनः विजय प्राप्त करने के उपलक्ष्य में की गयी थी।

13. **कलचुरि सम्वत्** (305 विक्रम सम्वत्, 248 ई.)
    इसको चेदि सम्वत् और त्रैकुटक सम्वत् भी कहते हैं। इसको त्रैकुटक नामक एक राजवंश द्वारा आरंभ किया गया था।

**14. गुप्त सम्वत्** (377 विक्रम सम्वत्, 320 ई.)
इसकी शुरूआत चन्द्रगुप्त प्रथम ने की थी। इसको गुप्त काल या गुप्त वर्ष भी कहा जाता है।

**15. शाहूर सन्**
तुगलक द्वारा चलाया गया यह सन् हिजरी सन् का संशोधित रूप है। चंद्र मास के बदले सौर मास के अनुसार माना गया है। इसमें 650 जोड़ने पर विक्रम सम्वत् बनता है। मराठी पंचांग में यह अभी-भी मिलता है।

**16. बंगाल सन्**
इसे `बंगाब्द' भी कहते हैं। इसका आरंभ वैशाख से होता है। इसमें 651 जोड़ने से विक्रम सम्वत् बनता है। बंगाल के अनेक भागों में कभी यह व्यापक रूप से प्रचलित था।

**17. गांगेय सम्वत्**
यह सम्वत् कलिंगनगर (तमिलनाडु) के गंगा वंशी राजा द्वारा चलाया हुआ सम्वत् माना जाता है। दक्षिण भारत में अनेक स्थानों पर इसका उल्लेख मिला है। 633 जोड़ने से विक्रम सम्वत् बनता है।

**18. हर्ष सम्वत्** (663 विक्रम सम्वत्, 606 ई.)
इसकी शुरूआत कन्नौज के शासक हर्षवर्धन ने की थी और हर्षवर्धन की मृत्यु के बाद एक सदी तक यह उत्तर भारत में चलन में था।

**19. हिजरी सन्**
इस्लामिक कैलेंडर के हिसाब से (679 विक्रम सम्वत्) 622 ईस्वी सन् से इसका आरंभ माना जाता है। यह चंद्र वर्ष है, चाँद देखकर इसका आरंभ किया जाता है। इसकी तारीख एक शाम से दूसरी शाम तक चलती है।

**20. भट्टिक सम्वत्**
यह सम्वत् जैसलमेर के राजा भट्टीक (भाटी) द्वारा शुरू किया गया था। इसमें 680 जोड़ने से विक्रम सम्वत् बनता है।

**21. कोल्लम सम्वत्**
केरल मालाबार के लोग इसे परशुराम सवंत् भी कहते हैं। तमिल में इसे कोल्लम और संस्कृत में कोलंब सम्वत् कहा गया है। 881 जोड़ने पर विक्रम सम्वत् बनता है।

**22. नेवार (नेपाल) सम्वत्**
नेपाल के राजा जयदेव मल्ली ने इस सम्वत् को आरंभ किया था, इसमें 936 जोड़ने पर विक्रम सम्वत् बनता है।

**23. यहूदी सन्**
इजराइल और विश्व के यहूदी इसका प्रयोग करते हैं।

**24. फसली सन्**
अकबर ने टोडरमल के परामर्श से लगान वसूली के लिए हिजरी सन् 971 (1506 विक्रम सम्वत्) में चलाया था। यह भी हिजरी सन् का संशोधित रूप ही था। क्योंकि इसके महीने सौर मास के अनुसार चलते थे।

**25. इलाही सन्**
अकबर ने बीरबल के सहयोग से दीन-ए-इलाही के साथ इस सन् को हिजरी सन् 992 (विक्रम सम्वत् 1527 एवं 1584 ई.) में चलाया। इसमें 1 महीना 32 दिनों का होता था। बाद में शाहजहाँ ने इसे समाप्त कर दिया।

**26. चालुक्य विक्रम सम्वत्**
दक्षिण के चालुक्य राजा विक्रमादित्य (छठे) ने शक सम्वत् के स्थान पर चालुक्य विक्रम सम्वत् चलाया। इसको चालुक्य `विक्रम का काल' वह `विक्रम वर्ष' भी कहा जाता है। इसमें 1132 जोड़ने पर विक्रम सम्वत् बनता है।

**27. सिंह सम्वत्**
इस सम्वत् की शुरूआत काठियावाड़ के गोहिल शासकों ने की थी। इस सम्वत् को शिवसिंह सम्वत् के नाम से भी जाना जाता है। इसमें 1170 जोड़ने से विक्रम सम्वत् बनता है।

**28. लक्ष्मणसेन सम्वत्**
बंगाल के सेनवंशी राजा लक्ष्मण सेन के राज्याभिषेक से इसका आरंभ हुआ। इसका प्रचलन बंगाल, बिहार और उड़ीसा में था। इसमें 1175 जोड़ने से विक्रम सम्वत् बनता है।

**29. पुडेचैप्पू सम्वत्**
यह (1398 विक्रम सम्वत्) 1341 में केरल के कोच्चि के पास एक टापू की स्मृति में चलाया गया था। इसका प्रचलन कोचीन राज्य के आसपास ही रहा।

**30. राज्याभिषेक सम्वत्** (विक्रम सम्वत् 1731 ईस्वी 1674)
ज्येष्ठ शुक्ल त्रयोदशी को शिवाजी का राज्याभिषेक हुआ था, जिसे आनंदनाम सम्वत् का नाम दिया गया। महाराष्ट्र में रायगढ़ किले में एक भव्य समारोह में शिवाजी पूर्णरूप से छत्रपति अर्थात् एक प्रखर हिंदू सम्राट के रूप में स्थापित हुए।

शांति, काल,योग, ध्यान, नृत्य, प्रलय, वैराग्य और विनाश के
देवता, सृष्टि के संहारकर्ता और जगतपिता

# ।। महादेव ।।

**शास्त्रों और पुराणों में भगवान शिव के अनेक नाम है, जिसमें से 108 नामों का विशेष महत्व है-**

1. **शिव:** कल्याण स्वरूप
2. **महेश्वर:** माया के अधिश्वर
3. **शम्भू:** आनंद स्वरूप वाले
4. **पिनाकी:** पिनाक धनुष धारण करने वाले
5. **शशिशेखर:** सिर पर चंद्रमा धारण करने वाले
6. **वामदेव:** अत्यंत सुंदर स्वरूप वाले
7. **विरूपाक्ष :** विचित्र आँख वाले
8. **कपर्दी :** जटाजूट धारण करने वाले
9. **नीललोहित :** नीले और लाल रंग वाले
10. **शंकर :** सबका कल्याण करने वाले
11. **शूलपाणी :** हाथ में त्रिशूल धारण करने वाले
12. **खटवांगी :** खटिया का एक पाया रखने वाले
13. **विष्णुवल्लभ :** भगवान विष्णु के अति प्रिय
14. **शिपविष्ट :** सितुहा में प्रवेश करने वाले
15. **अंबिकानाथ :** देवी भगवती के पति
16. **श्रीकण्ठ :** सुंदर कण्ठ वाले
17. **भक्तवत्सल :** भक्तों को अत्यंत स्नेह करने वाले
18. **भव :** संसार के रूप में प्रकट होने वाले
19. **शर्व :** कष्टों को नष्ट करने वाले
20. **त्रिलोकेश :** त्रिलोकों के स्वामी
21. **शितिकण्ठ :** सफेद कण्ठ वाले
22. **शिवाप्रिय :** पार्वती के प्रिय
23. **उग्र :** अत्यंत उग्र रूप वाले
24. **कपाली :** कपाल धारण करने वाले
25. **कामारी :** कामदेव के शत्रु, अंधकार हरने वाले
26. **सुरसूदन :** अंधक दैत्य को मारने वाले
27. **गंगाधर :** गंगा जी को धारण करने वाले
28. **ललाटाक्ष :** ललाट में आँख वाले
29. **महाकाल :** कालों के भी काल
30. **कृपानिधि :** करूणा की खान
31. **भीम :** भयंकर रूप वाले
32. **परशुहस्त :** हाथ में फरसा धारण करने वाले
33. **मृगपाणी :** हाथ में हिरण धारण करने वाले
34. **जटाधर :** जटा रखने वाले
35. **कैलाशवासी :** कैलाश के निवासी
36. **कवची :** कवच धारण करने वाले
37. **कठोर :** अत्यंत मजबूत देह वाले
38. **त्रिपुरांतक :** त्रिपुरासुर को मारने वाले
39. **वृषांक :** बैल के चिह्न वाली ध्वजा वाले
40. **वृषभारूढ़ :** बैल की सवारी वाले
41. **भस्मोद्धूलितविग्रह :** सारे शरीर में भस्म लगाने वाले
42. **सामप्रिय :** सामगान से प्रेम करने वाले
43. **स्वरमयी :** सातों स्वरों में निवास करने वाले
44. **त्रयीमूर्ति :** वेदरूपी विग्रह करने वाले
45. **अनीश्वर :** जो स्वयं ही सबके स्वामी है
46. **सर्वज्ञ :** सब कुछ जानने वाले
47. **परमात्मा :** सब आत्माओं में सर्वोच्च
48. **सोमसूर्याग्निलोचन :** चंद्र, सूर्य और अग्निरूपी आँख
49. **हवि :** आहूति रूपी द्रव्य वाले
50. **यज्ञमय :** यज्ञस्वरूप वाले
51. **सोम :** उमा के सहित रूप वाले
52. **पंचवक्त्र :** पाँच मुख वाले
53. **सदाशिव :** नित्य कल्याण रूप वाल
54. **विश्वेश्वर :** सारे विश्व के ईश्वर
55. **वीरभद्र :** वीर होते हुए भी शांत स्वरूप वाले
56. **गणनाथ :** गणों के स्वामी
57. **प्रजापति :** प्रजाओं का पालन करने वाले
58. **हिरण्यरेता :** स्वर्ण तेज वाले
59. **दुर्धुर्ष :** किसी से नहीं दबने वाले
60. **गिरीश :** पर्वतों के स्वामी
61. **गिरिश्वर :** कैलाश पर्वत पर सोने वाले
62. **अनघ :** पापरहित
63. **भुजंगभूषण :** सांपों के आभूषण वाले
64. **भर्ग :** पापों को भूंज देने वाले
65. **गिरिधन्वा :** मेरू पर्वत को धनुष बनाने वाले
66. **गिरिप्रिय :** पर्वत प्रेमी
67. **कृत्तिवासा :** गजचर्म पहनने वाले
68. **पुरारति :** पुरों का नाश करने वाले
69. **भगवान् :** सर्वसमर्थ ऐश्वर्य संपन्न
70. **प्रमथाधिप :** प्रमथगणों के अधिपति
71. **मृत्युंजय :** मृत्यु को जीतने वाले
72. **सूक्ष्मतनु :** सूक्ष्म शरीर वाले
73. **जगद्व्यापी :** जगत् में व्याप्त होकर रहने वाले
74. **जगद्गुरू :** जगत् के गुरू
75. **व्योमकेश :** आकाश रूपी बाल वाले
76. **महासेनजनक :** कार्तिकेय के पिता
77. **चारुविक्रम :** सुन्दर पराक्रम वाले
78. **रूद्र :** भयानक
79. **भूतपति :** भूतप्रेत या पंचभूतों के स्वामी
80. **स्थाणु :** स्पंदन रहित कूटस्थ रूप वाले
81. **अहिर्बुध्न्य :** कुण्डलिनी को धारण करने वाले
82. **दिगम्बर :** नग्न, आकाशरूपी वस्त्र वाले
83. **अष्टमूर्ति :** आठ रूप वाले
84. **अनेकात्मा :** अनेक रूप धारण करने वाले
85. **सात्त्विक :** सत्व गुण वाले
86. **शुद्धविग्रह :** शुद्धमूर्ति वाले
87. **शाश्वत :** नित्य रहने वाले
88. **खण्डपरशु :** टूटा हुआ फरसा धारण करने वाले
89. **अज :** जन्म रहित
90. **पाशविमोचन :** बंधन से छुड़ाने वाले
91. **मृड :** सुखस्वरूप वाले
92. **पशुपति :** पशुओं के स्वामी
93. **देव :** स्वयं प्रकाश रूप
94. **महादेव :** देवों के भी देव
95. **अव्यय :** खर्च होने पर भी न घटने वाले
96. **हरि :** विष्णुस्वरूप
97. **पूषदन्तभित् :** पूषा के दांत उखाड़ने वाले
98. **अव्यग्र :** कभी भी व्यथित न होने वाले
99. **दक्षाध्वरहर :** दक्ष के यज्ञ को नष्ट करने वाले
100. **हर :** पापों व तापों को हरने वाले
101. **भगनेत्रभिद् :** भग देवता की आँख फोड़ने वाले
102. **अव्यक्त :** इंद्रियों के सामने प्रकट न होने वाले
103. **सहस्राक्ष :** हजार आँखों वाले
104. **सहस्रपाद :** हजार पैरों वाले
105. **अपवर्गप्रद :** कैवल्य मोक्ष देने वाले
106. **अनंत :** देशकालवस्तु रूपी परिछेद से रहित
107. **तारक :** सबको तारने वाले
108. **परमेश्वर :** परम ईश्वर

# महादेवः विभिन्न स्वरूप

*भगवान शिव, जिन्हें महादेव के नाम से भी जाना जाता है, हिंदू धर्म में सबसे सम्मानित देवताओं में से एक हैं। वह विनाश और परिवर्तन के देवता हैं, लेकिन सृजन और उत्थान के भी। भगवान शिव को अक्सर विभिन्न रूपों में चित्रित किया जाता है, प्रत्येक उनकी प्रकृति और शक्तियों के एक अलग पहलू का प्रतीक है।*

## रुद्र

रुद्र को भगवान शिव के सबसे पुराने और सबसे आदिम रूपों में से एक माना जाता है, और अक्सर उन्हें एक भयंकर और जंगली देवता के रूप में चित्रित किया जाता है। 'रुद्र' नाम संस्कृत शब्द 'रुड' से लिया गया है, जिसका अर्थ है ' दहाड़ना' और यह प्रकृति की विनाशकारी शक्ति से जुड़ा है। वेदों में, रुद्र को तूफान, शिकार और जंगली जानवरों का देवता माना जाता है, और अक्सर इसे हवा, गड़गड़ाहट और बिजली के प्राकृतिक तत्वों से जोड़ा जाता है। पौराणिक कथाओं में, रुद्र को विभिन्न विशेषताओं के रूप में वर्णित किया गया है, जिसमें उनकी भयंकर और भयानक उपस्थिति, शिकार और जंगली के साथ उनका जुड़ाव और उनकी विनाशकारी शक्ति शामिल है। उन्हें अक्सर उलझे हुए बाल, माथे पर तीसरी आँख और धनुष और बाण, त्रिशूल या तलवार जैसे हथियार ले जाने के रूप में चित्रित किया जाता है। उन्हें कभी-कभी जंगली जानवरों द्वारा खींचे जाने वाले रथ की सवारी करते हुए भी चित्रित किया गया है। अपने भयानक रूप और प्रतिष्ठा के बावजूद, रुद्र उपचार और सुरक्षा से भी जुड़ा हुआ है। उन्हें अक्सर बुरी आत्माओं और बीमारी से बचाने वाले के रूप में पूजा जाता है और उन्हें अपने भक्तों को वरदान और आशीर्वाद देने की शक्ति भी माना जाता है। कुछ परंपराओं में रुद्र को उर्वरता और वृद्धि से भी जोड़ा जाता है, क्योंकि कहा जाता है कि उनमें पौधों और फसलों को उगाने की शक्ति है। रुद्र का तूफान और शिकार के साथ जुड़ाव बुराई और नकारात्मकता के विनाशक के रूप में उनकी भूमिका में भी परिलक्षित होता है। इस पहलू में उन्हें शिकार का स्वामी माना जाता है, जो बुराई का नाश करते हैं और निर्दोषों की रक्षा करते हैं। उन्हें अक्सर एक उग्र और जंगली प्रकृति के रूप में चित्रित किया जाता है, जो प्रकृति की अदम्य शक्ति और उसका सम्मान करने की आवश्यकता का प्रतीक है। रुद्र भगवान शिव का एक महत्वपूर्ण और जटिल पहलू है, जो प्रकृति के आदिम और अदम्य पहलुओं के साथ-साथ विनाश और नवीकरण की शक्ति का प्रतिनिधित्व करता है। उनकी पूजा अक्सर रक्षा और चंगा करने की शक्ति के साथ-साथ प्राकृतिक दुनिया का सम्मान करने की आवश्यकता से जुड़ी होती है।

## पशुपति

पशुपति हिंदू धर्म में भगवान शिव के रूपों में से एक है। यह एक संस्कृत शब्द है जिसका अनुवाद 'जानवरों के भगवान' के रूप में किया जाता है और इस रूप में, भगवान शिव को सभी जीवित प्राणियों के रक्षक और शासक के रूप में पूजा जाता है। पशुपति को अक्सर हिंदू पौराणिक कथाओं में एक योगी के रूप में चित्रित किया गया है जो अपनी पत्नी पार्वती के साथ ध्यान मुद्रा में बैठें है। वे विभिन्न जानवरों की खाल से सुशोभित है और उनका शरीर राख से ढका हुआ है, जो भौतिक इच्छाओं से उनके अलगाव का प्रतीक है। पशुपति का महत्व इस तथ्य में निहित है कि माना जाता है कि भगवान शिव का जानवरों के साम्राज्य के साथ एक विशेष संबंध है। उन्हें अक्सर अपने गले में एक साँप के साथ चित्रित किया जाता है, जो पृथ्वी पर सबसे घातक प्राणियों पर उसकी शक्ति का प्रतिनिधित्व करता है। इसके अतिरिक्त, भगवान शिव को उनके वाहन के रूप में एक बैल, नंदी माना जाता है, जो जानवरों की दुनिया से उनके संबंध का प्रतीक है। पशुपति की पूजा भारत के विभिन्न भागों में प्रचलित है, विशेषकर नेपाल और हिमाचल प्रदेश के क्षेत्रों में। नेपाल की राजधानी काठमांडू में स्थित पशुपतिनाथ मंदिर, दुनिया के सबसे महत्वपूर्ण और पूजनीय हिंदू मंदिरों में से एक है। यह भगवान पशुपति को समर्पित है और हिंदू तीर्थयात्रियों के लिए सबसे पवित्र स्थलों में से एक माना जाता है। हिंदू पौराणिक कथाओं में, भगवान पशुपति करुणा, शक्ति और सुरक्षा के गुणों से जुड़े हैं। माना जाता है कि उनकी पूजा करने वालों को आशीर्वाद, समृद्धि और सफलता मिलती है। पशुपति जन्म और मृत्यु के चक्र से भी जुड़े हुए हैं और माना जाता है कि उनकी पूजा से लोगों को आध्यात्मिक मुक्ति प्राप्त करने और पुनर्जन्म के चक्र से मुक्त होने में मदद मिलती है।

## महादेव

महादेव हिंदू धर्म में भगवान शिव के सबसे महत्वपूर्ण रूपों में से एक हैं। महादेव शब्द का अर्थ है 'महान् ईश्वर' या 'सर्वोच्च ईश्वर', जो दर्शाता है कि भगवान शिव के इस रूप को अन्य सभी रूपों में सबसे शक्तिशाली और पूजनीय माना जाता है। महादेव को लॉर्ड्स ऑफ लॉर्ड्स या महान् भगवान् के रूप में भी जाना जाता है, जो हिंदू पंथों में सर्वोच्च अधिकार के रूप में अपनी स्थिति पर जोर देते हैं। महादेव को अक्सर हिंदू पौराणिक कथाओं में चार भुजाओं वाली एक विशाल आकृति के रूप में चित्रित किया जाता है, जिसमें एक त्रिशूल, एक ड्रम, एक सर्प और एक आग का कटोरा होता है। वह आमतौर पर सांपों से सुशोभित होता है, जो मृत्यु और पुनर्जन्म पर उनकी शक्ति का प्रतीक है और उनके माथे पर एक वर्धमान चाँद दिखाई देता है, जो समय पर उनके नियंत्रण और चंद्रमा के बदलते चरणों का प्रतिनिधित्व करता है। महादेव के रूप में, भगवान शिव को ब्रह्माण्ड का परम निर्माता, संरक्षक और संहारक माना जाता है। उन्हें सभी अस्तित्व और जीवन और मृत्यु के चक्रों को नियंत्रित करने वाली शक्ति का स्रोत माना जाता है। इस रूप में, भगवान शिव सत्य, करुणा और ज्ञान के दिव्य सिद्धांतों से भी जुड़े हुए हैं। महादेव की पूजा अक्सर पूरे भारत और दुनिया के अन्य हिस्सों में भगवान शिव को समर्पित मंदिरों में की जाती है जहाँ हिंदू धर्म का पालन किया जाता है। भक्त सुरक्षा, समृद्धि और आध्यात्मिक ज्ञान के लिए भगवान शिव से प्रार्थना, फूल और प्रसाद इस रूप में चढ़ाते हैं। कई लोगों का यह भी मानना है कि महादेव की पूजा करने से व्यक्ति मोक्ष और शाश्वत शांति प्राप्त कर सकता है।

## अर्धनारीश्वर

अर्धनारीश्वर भगवान शिव का एक रूप है जिसमें उन्हें आधे पुरुष और आधी स्त्री के रूप में चित्रित किया गया है, जो मर्दाना और स्त्री ऊर्जा की अविभाज्य प्रकृति का प्रतीक है। शब्द 'अर्धनारीश्वर' संस्कृत के शब्द 'अर्ध' से लिया गया है जिसका अर्थ है आधा, 'नार' का अर्थ है महिला, और 'ईश्वर' का अर्थ है भगवान। भगवान शिव का यह रूप सृष्टि के पुरुष और स्त्री पहलुओं की एकता और समानता के विचार का प्रतिनिधित्व करता है। अर्धनारीश्वर रूप में, शरीर का दाहिना आधा भाग भगवान शिव की मर्दाना ऊर्जा का प्रतिनिधित्व करता है, जबकि बायां आधा उनकी पत्नी, देवी पार्वती की स्त्री ऊर्जा का प्रतिनिधित्व करता है। मर्दाना आधे भाग को आमतौर पर उलझे हुए बालों, माथे पर एक अर्धचंद्र और एक त्रिशूल और एक सांप को पकड़े हुए दिखाया गया है। स्त्रैण आधा भाग आमतौर पर एक अच्छी तरह से सजाए गए स्त्रैण रूप के साथ दिखाया जाता है, जिसमें गहने और फूल शामिल होते हैं और एक दर्पण और एक कमल धारण करते हैं। भगवान शिव का यह रूप इस विचार का प्रतिनिधित्व करता है कि संपूर्ण ब्रह्माण्ड दो पूरक ऊर्जाओं - पुल्लिंग और स्त्रैण से बना है। जैसे दिन और रात, प्रकाश और अंधेरा, सूर्य और चंद्रमा अविभाज्य और पूरक हैं, वैसे ही ब्रह्माण्ड के संतुलन के लिए मर्दाना और स्त्री ऊर्जा भी पूरक और आवश्यक हैं। भगवान शिव का अर्धनारीश्वर रूप मानव मानस के तर्कसंगत और भावनात्मक पहलुओं के बीच संतुलन सहित जीवन के सभी पहलुओं में संतुलन और सामंजस्य के महत्व पर जोर देता है। भगवान शिव का यह रूप सिखाता है कि आत्मज्ञान और सच्ची समझ प्राप्त करने के लिए, पुरुष और स्त्री ऊर्जा के मिलन सहित सभी चीजों की एकता को पहचानना और गले लगाना चाहिए। भगवान शिव के अर्धनारीश्वर रूप को अक्सर कला और मूर्तिकला में चित्रित किया जाता है । भगवान शिव के इस रूप का प्रतीकवाद हिंदू दर्शन और आध्यात्मिकता का एक महत्वपूर्ण पहलू बना हुआ है, जो सृष्टि के सभी पहलुओं की एकता और संतुलन पर जोर देता है।

## नटराज

नटराज हिंदू धर्म में भगवान शिव के सबसे प्रसिद्ध और पूजनीय रूपों में से एक है, और इसे ब्रह्माण्डीय नर्तक के रूप में दर्शाया गया है, जो तांडव करता है, जो एक शक्तिशाली और गतिशील नृत्य है जो ब्रह्माण्ड के निर्माण, संरक्षण और विनाश के चक्र का प्रतिनिधित्व करता है। इस रूप में, भगवान शिव को अक्सर चार भुजाओं के

साथ दिखाया जाता है, जिनमें से दो को नृत्य की मुद्रा में होती है, जबकि अन्य दो में एक ड्रम (डमरू) और एक लौ (अग्नि) होती है। नटराज की छवि प्रतीकात्मकता से समृद्ध है और चित्रण के प्रत्येक तत्व का गहरा महत्व है। उदाहरण के लिए, भगवान शिव की नृत्य मुद्रा ब्रह्माण्ड की लय, जन्म, मृत्यु और पुनर्जन्म के चक्रों का प्रतिनिधित्व करने के लिए है। उनका उठा हुआ पैर मुक्ति और बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतिनिधित्व करता है, जबकि उनका दूसरा पैर राक्षस अपस्मार पर टिका है, जो अज्ञानता और आध्यात्मिक अंधकार का प्रतीक है। कहा जाता है कि भगवान शिव अपने हाथ में जो ड्रम (डमरू) धारण करते हैं, वह सृष्टि की ध्वनि का प्रतिनिधित्व करता है, जबकि ज्वाला (अग्नि) विनाश की ऊर्जा का प्रतिनिधित्व करती है। भगवान शिव के शरीर के चारों ओर आग का घेरा उस ब्रह्माण्डीय ऊर्जा का प्रतीक है जो ब्रह्माण्ड को बनाए रखता है और चलाता है, जबकि उनकी गर्दन के चारों ओर कुंडलित सांप कुंडलिनी ऊर्जा का प्रतिनिधित्व करता है जो हर इंसान के भीतर रहता है।

## भोलेनाथ

भोलेनाथ भगवान शिव के सबसे प्रिय रूपों में से एक हैं, खासकर उत्तर भारत में उनके भक्तों के बीच। भगवान शिव के इस रूप की विशेषता उनकी सरलता, विनम्रता और बच्चों जैसी मासूमियत है। 'भोलेनाथ' शब्द संस्कृत के 'भोले' शब्द से बना है जिसका अर्थ है निर्दोष और 'नाथ' का अर्थ है स्वामी। इस प्रकार, भोलेनाथ को अक्सर 'मासूम भगवान' या 'मासूमियत के भगवान' के रूप में जाना जाता है। भोलेनाथ को अक्सर उनके चेहरे पर एक शांत अभिव्यक्ति के साथ चित्रित किया जाता है, उनकी आँखें गहरे ध्यान में बंद होती हैं। उन्हें आमतौर पर अपने गले में रुद्राक्ष की माला पहने दिखाया जाता है और उनके बाल अक्सर अस्त-व्यस्त और अर्धचंद्र से सुशोभित होते हैं। कुछ चित्रणों में, उन्हें चिलम (एक प्रकार का धूम्रपान पाइप) या भांग पीते हुए भी दिखाया गया है, जिसके बारे में माना जाता है कि यह परमात्मा के साथ उनके संबंध को बढ़ाता है। भोलेनाथ से जुड़ी सबसे प्रसिद्ध कहानियों में से एक समुद्र मंथन या दूध के सागर का मंथन है। हिंदू पौराणिक कथाओं के अनुसार, अमरत्व का अमृत प्राप्त करने के लिए देवताओं और राक्षसों ने मिलकर दूध के सागर का मंथन किया। हालाँकि, इस प्रक्रिया के दौरान, उन्होंने हलाहला नामक एक घातक ज़हर भी छोड़ा, जिसने दुनिया को नष्ट करने की धमकी दी। तब भगवान शिव ने आगे आकर विष को पी लिया, लेकिन उसे निगलने के बजाय, उन्होंने उसे अपने कंठ में धारण कर लिया और उसे नीला कर दिया। निस्वार्थता और बलिदान के इस कार्य ने उन्हें नीलकंठ नाम दिया, जिसका अर्थ है 'नीले गले वाला'। इस घटना को अक्सर कला में दर्शाया जाता है और यह भोलेनाथ से जुड़ी सबसे लोकप्रिय कहानियों में से एक है। भोलेनाथ भक्ति की अवधारणा से भी जुड़े हुए हैं। ऐसा माना जाता है कि वह अपने भक्तों की सामाजिक स्थिति या धार्मिक पृष्ठभूमि की परवाह किए बिना उनकी भक्ति और प्रेम से आसानी से प्रसन्न हो जाते हैं। यह उनके जीवन के सरल तरीके से और अपने भक्तों से प्रसाद स्वीकार करने की उनकी इच्छा में परिलक्षित होता है, चाहे वह कितना भी छोटा या महत्वहीन क्यों न हो।

## कालभैरव

कालभैरव भगवान शिव के कई रूपों में से एक हैं, जो उनके उग्र और भयानक पहलू का प्रतिनिधित्व करते हैं। हिंदू पौराणिक कथाओं में, भैरव को आतंक के देवता के रूप में जाना जाता है और उन्हें अक्सर एक भयावह रूप के साथ चित्रित किया जाता है, जिसमें त्रिशूल और ड्रम जैसे हथियार होते हैं। उनका नाम संस्कृत शब्द 'भीरू' से लिया गया है, जिसका अर्थ है भयभीत या भयानक। भैरव को विनाश और सुरक्षा की शक्ति से भी जोड़ा जाता है। उन्हें सभी बाधाओं का नाश करने वाला और उनकी मदद माँगने वाले भक्तों का रक्षक माना जाता है। ऐसा कहा जाता है कि भैरव की पूजा करने से जीवन में भय और बाधाओं को दूर करने में मदद मिल सकती है। हिंदू आइकनोग्राफी में भैरव को अक्सर एक कुत्ते के साथ चित्रित किया जाता है, जो उनकी वफादारी और एक रक्षक के रूप में उनकी भूमिका का प्रतीक है। उन्हें कभी-कभी कुत्ते की सवारी करते या कुत्तों द्वारा खींचे जाने वाले रथ पर भी दिखाया जाता है। माना जाता है कि कुत्ता वफादारी और निडरता का प्रतिनिधित्व करता है, साथ ही यह विचार भी है कि भैरव जाति और वर्ग की सीमाओं से परे हैं। भारत में भैरव को समर्पित कई मंदिर हैं, खासकर राजस्थान राज्य में। इनमें से सबसे प्रसिद्ध वाराणसी में काल भैरव मंदिर है, जिसे 64 शक्तिपीठों में से एक या देवी शक्ति से जुड़े पवित्र स्थलों में से एक माना जाता है। भैरव की पूजा विभिन्न रूपों और अनुष्ठानों में की जाती है।

## महायोगी

महायोगी भी भगवान शिव का एक रूप हैं। इस रूप में, भगवान शिव को एक महान् योगी के रूप में दर्शाया गया है, जो ध्यान, आध्यात्मिक प्रथाओं और आंतरिक परिवर्तन पर उनकी निपुणता का प्रतीक है। 'योगी' शब्द का अर्थ किसी ऐसे व्यक्ति से है जो योग का अभ्यास करता है, जो एक ऐसा अनुशासन है जो किसी व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक कल्याण पर केंद्रित होता है। भगवान शिव, महायोगी के रूप में, अक्सर ध्यान मुद्रा में बैठे हुए चित्रित किए जाते हैं, उनकी आँखें बंद होती हैं और उनका ध्यान भीतर की ओर होता है। उनका शरीर राख में ढँका हुआ है और वह सांपों और अन्य प्रतीकात्मक तत्वों से सुशोभित है जो उनकी आध्यात्मिक शक्ति और ज्ञान का प्रतिनिधित्व करती हैं। भगवान शिव का यह रूप योग और ध्यान के अभ्यास से जुड़ा हुआ है, जिसके बारे में माना जाता है कि यह आत्म-साक्षात्कार और ज्ञान की ओर ले जाता है। भगवान शिव के महायोगी रूप को सर्वोच्च गुरु के रूप में सम्मानित किया जाता है, जो अपने भक्तों को आध्यात्मिक विकास और परिवर्तन के मार्ग पर मार्गदर्शन करते हैं। ऐसा माना जाता है कि उनके पास गहरा ज्ञान है और उनकी शिक्षाओं को दिव्य प्रेरणा और मार्गदर्शन का स्रोत माना जाता है। भगवान शिव को आदि योगी या प्रथम योगी के रूप में भी जाना जाता है, क्योंकि ऐसा माना जाता है कि उन्होंने प्राचीन भारत के संतों को योग का प्राचीन ज्ञान सिखाया था। भगवान शिव का महायोगी रूप तप और वैराग्य के अभ्यास से भी जुड़ा हुआ है, जो आध्यात्मिक विकास और ज्ञान के लिए आवश्यक माने जाते हैं। भगवान शिव को अक्सर एक भटकते तपस्वी के रूप में चित्रित किया जाता है, जिन्होंने आध्यात्मिक ज्ञान की खोज में सभी सांसारिक सुखों और आसक्तियों को त्याग दिया है।

## त्र्यंबक

भगवान शिव का त्र्यंबक रूप देवता के कम ज्ञात रूपों में से एक है, लेकिन फिर भी हिंदू धर्म में महत्वपूर्ण है। त्र्यंबक शब्द दो संस्कृत शब्दों से बना है, 'त्रि' का अर्थ है तीन, और 'अंबका' का अर्थ है आँखें और भगवान शिव के इस रूप को तीन आँखों से दर्शाया गया है। इस रूप में, भगवान शिव को उनके माथे पर तीसरी आँख के साथ चित्रित किया गया है, जो उनके आध्यात्मिक ज्ञान का प्रतिनिधित्व करता है। हिंदू पौराणिक कथाओं के अनुसार, भगवान शिव ने वासना के देवता काम, जो उन्हें अपने ध्यान से विचलित कर रहे थे, को नष्ट करने के लिए अपनी तीसरी आँख खोली। भगवान शिव का त्र्यंबक रूप भी अजना चक्र या तीसरे नेत्र चक्र से जुड़ा हुआ है, जिसे माथे के केंद्र में स्थित माना जाता है। तीसरा नेत्र चक्र अंतर्ज्ञान, आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि और मानसिक क्षमताओं से जुड़ा हुआ है और इसकी सक्रियता को आध्यात्मिक जागृति और ज्ञान की ओर ले जाने के लिए कहा जाता है। तीसरी आँख के अलावा, त्र्यंबक रूप में भगवान शिव को उनकी दो नियमित आँखों से दर्शाया गया है, जो भूत, वर्तमान और भविष्य को देखने की उनकी क्षमता का प्रतिनिधित्व करते हैं। यह प्रतीकात्मकता भगवान शिव की सर्वज्ञता और समय के स्वामी के रूप में उनकी भूमिका का प्रतिनिधित्व करती है। भगवान शिव के त्र्यंबक रूप को अक्सर कलाकृति और मूर्तियों में चित्रित किया जाता है, जिसमें उनके माथे पर अर्धचंद्र सुशोभित होता है, उनके गले में एक सांप होता है और उनके उलझे हुए बाल एक जटा या जूड़े में बँधे होते हैं। उन्हें आमतौर पर एक ध्यान मुद्रा में चित्रित किया जाता है, उनकी आँखें बंद होती हैं या भीतर की ओर देखती हैं, जो आंतरिक दुनिया पर उनकी महारत का प्रतीक है।

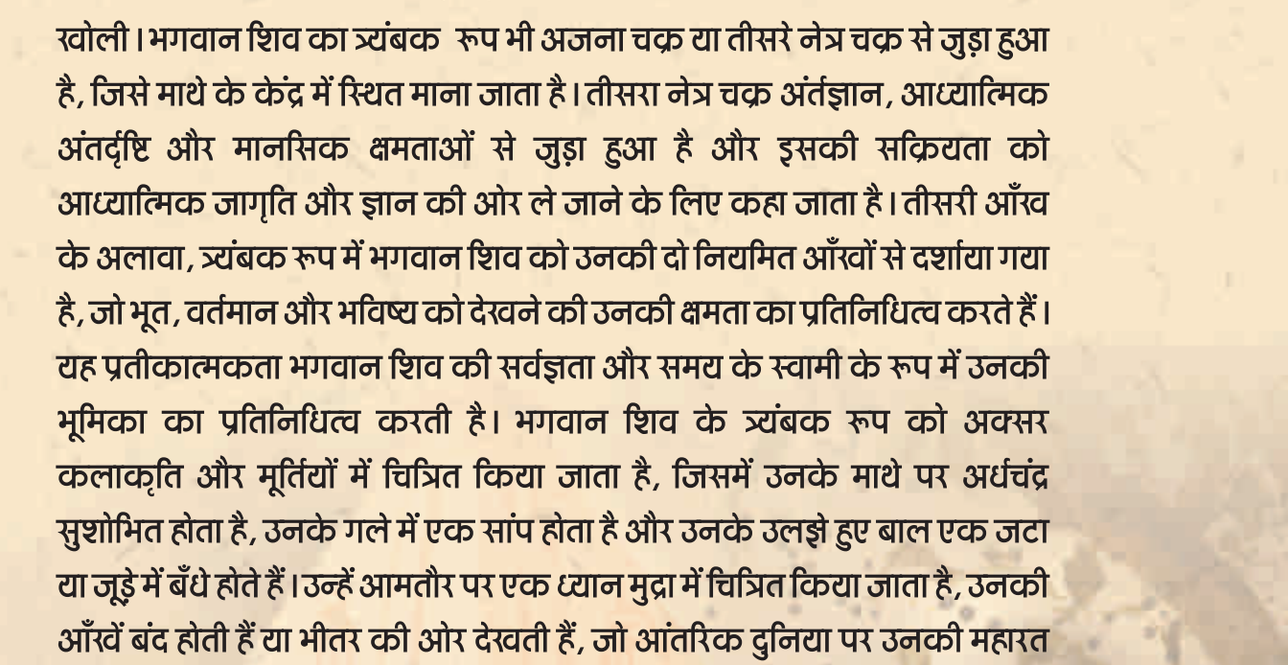

# विक्रम पंचांग

श्री सोमनाथ मंदिर

**चैत्र शुक्ल पक्ष**
09 अप्रैल 2024 से 23 अप्रैल 2024
(वसंत/ग्रीष्म ऋतु)

## सम्राट विक्रमादित्य सम्वत् 2081

पिंगल नाम सम्वत्सर

• कलि संवत 5125 • सृष्टि आरम्भ 1955885125 • राजा – मंगल • मंत्री – शनि

**वैशाख कृष्ण पक्ष**
24 अप्रैल 2024 से 08 मई 2024
(ग्रीष्म ऋतु)

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | 14 अप्रैल षष्ठी डॉ. अम्बेडकर जयंती वैशाखी | 21 अप्रैल त्रयोदशी महावीर जयंती | **रविवार** | | 28 अप्रैल चतुर्थी पंचमी गुरु तेगबहादुर जयंती | 05 मई द्वादशी संत सेन जयंती |
| | 15 अप्रैल सप्तमी | 22 अप्रैल चतुर्दशी हाटकेश्वर जयंती | **सोमवार** | | 29 अप्रैल षष्ठी | 06 मई त्रयोदशी |
| 09 अप्रैल प्रतिपदा गुड़ी पड़वा महर्षि गौतम जयंती | 16 अप्रैल अष्टमी दुर्गाष्टमी व्रत सम्राट अशोक कार्य जयंती | 23 अप्रैल पूर्णिमा हनुमान जयंती | **मंगलवार** | | 30 अप्रैल सप्तमी गुरु अर्जुन देव जयंती | 07 मई चतुर्दशी |
| 10 अप्रैल द्वितीया झुलेलाल जयंती चैती चांद | 17 अप्रैल नवमी रामनवमी | | **बुधवार** | 24 अप्रैल प्रतिपदा | 01 मई अष्टमी श्रमिक दिवस | 08 मई अमावस्या विश्व रेडक्रास दिवस |
| 11 अप्रैल तृतीया ईद-उल-फितर | 18 अप्रैल दशमी | | **गुरुवार** | 25 अप्रैल द्वितीया | 02 मई नवमी | |
| 12 अप्रैल चतुर्थी | 19 अप्रैल एकादशी | | **शुक्रवार** | 26 अप्रैल द्वितीया | 03 मई दशमी पत्रकारिता दिवस | |
| 13 अप्रैल पंचमी | 20 अप्रैल द्वादशी मदन द्वादशी | | **शनिवार** | 27 अप्रैल तृतीया | 04 मई एकादशी वल्लभाचार्य जयंती | |

## श्री सोमनाथ ज्योतिर्लिंग

यह ज्योतिर्लिंग सौराष्ट्र प्रदेश में समुद्र के किनारे स्थित है। इसकी स्थापना सोम अर्थात् स्वयं चन्द्रदेव ने की थी। अत: यह सोमनाथ नाम के ज्योतिर्लिंग रूप में पूजित है। शिव महापुराण में सोमनाथ के संबंध में कथा इस प्रकार है कि चन्द्रदेव को दक्ष प्रजापति की अश्विनी आदि सत्ताईस कन्याएँ ब्याही गई थीं। इनमें से चन्द्रदेव रोहणी पर अति आसक्त थे और शेष दूसरी छब्बीस पत्नियों का प्राय: निरादर करते थे। चन्द्रमा की पत्नियों ने इस दु:ख को अपने पिता दक्ष से निवेदन किया। दक्ष ने चन्द्रमा को अनेक बार समझाया, पर चन्द्रमा के व्यवहार में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। वह उसी भाँति मात्र रोहणी में आसक्त तथा अन्य पत्नियों की उपेक्षा करता रहा। दु:खी होकर दक्ष प्रजापति ने चन्द्रमा को क्षय रोगी होने का श्राप दे दिया। दक्ष के श्राप से चन्द्रमा क्षय रोग ग्रस्त हो क्षीण होने लगा। जगत में हा-हा-कार मच गया। देवता सब दुखी हो गये। सब सोचने लगे कि इस बड़ी आपत्ति को कैसे दूर किया जा सकता है ? वे सब ब्रह्मा के पास गये। ब्रह्मा जी ने चन्द्रमा के निरोग होने के लिए उपाय बताया कि प्रभास क्षेत्र में जाकर चन्द्रदेव मृत्युंजय मंत्र की उपासना शिवलिंग के समीप करें। इस प्रकार प्रसन्न होकर भगवान शिव इन्हें क्षय रहित कर देंगे। चन्द्रदेव प्रभास क्षेत्र गये और शिवलिंग की स्थापना की तथा छ: महीने तक निरंतर स्थिर चित्त होकर मृत्युंजय जप ध्यानपूर्वक स्थानक मुद्रा (खड़े होकर) में किया। इस कठिन तपस्या से भगवान शिव प्रसन्न होकर प्रकट हुए। चन्द्रमा से उन्होंने वर माँगने को कहा। चन्द्रमा ने शिव से पूर्व कृत अपराध की क्षमा और क्षय रोग के निवारण करने की प्रार्थना की। शिवजी ने कहा- हे चन्द्रदेव, एक पक्ष में प्रतिदिन तुम्हारी कला क्षीण होगी और दूसरे पक्ष में फिर वह प्रतिदिन बढ़कर पूर्णिमा को पूर्ण कलाएँ हो जाएँगी। अब से यही क्रम चलेगा। इसके बाद चन्द्रमा ने भगवान शंकर की स्तुति की, जिससे प्रसन्न होकर उस प्रभास क्षेत्र के महत्व को बढ़ाने तथा चन्द्रमा के यश विस्तार करने के लिए भगवान शंकर सोमनाथ के नाम से तीनों लोकों में विख्यात हुए तथा सोमेश्वर ज्योतिर्लिंग के रूप में पूजित हुए। सोमनाथ का पूजन करने से भगवान शिव उपासक के क्षय और कण्ठ आदि रोगों को ठीक कर देते हैं।

### श्री विक्रम शुभ सम्वत् 2081

09 अप्रैल से 23 अप्रैल 2024 तक

उत्तरायण — वसंत/ग्रीष्म ऋतु

दि.२२/०४/२०२४स्टे.टा. ०५/३०

| तिथि | वार | समाप्ति घं. | समाप्ति मि. | नक्षत्र | समाप्ति घं. | समाप्ति मि. | योग | समाप्ति घं. | समाप्ति मि. | सू.उ. घ.मि. | सू.अ. घ.मि. | चन्द्रराशि प्रवेश | सूर्य स्पष्ट स्टे.टा ५/३० | | | अप्रैल | यहाँ पर दिया गया, सभी समय, भा.स्टे.स्टा.में है जो सम्पूर्ण भारत में समान रूप से ग्राह्य रहेगा । |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ०१ | मंगल | २० | ३० | रेव अश्वि | ०७ २९ | ३१ ०५ | वैधृ | १४ | १६ | ०६ १५ | १८ ४२ | मे.०७।३३ | ११ | २५ | २६ | 09 | नवचान्द्र सम्वत्सर प्रारंभ, वासन्ती नवरात्र प्रा. गुड़ी पडवा, ज्योतिष दिवस |
| ०२ | बुध | १७ | ३२ | भर | २७ | ०५ | विष्क | १० | ३५ | १५ | ४२ | मेष | ११ | २६ | २५ | 10 | चन्द्रदर्शन, सर्वार्थसिद्धि २७।८ से ३०।१३ तक,सिंधारा दूज |
| ०३ | गुरू | १५ | ०३ | कृति | २५ | ३६ | प्रीति आय | ०७ २८ | १७ २६ | १४ | ४२ | वृ. ०८।३१ | ११ | २७ | २४ | 11 | भ. २६।०९ से, श्री मत्स्य जयंती, गणगौरी पूजा (गौरी मनोरथ तृतीया) |
| ०४ | शुक्र | १३ | १० | रोहि | २४ | ४८ | सौभा | २६ | १० | १३ | ४३ | वृष | ११ | २८ | २३ | 12 | भ. १३।१२ तक, श्री विनायक चतुर्थी व्रत, श्री लक्ष्मी पंचमी, रवियोग २४।५१ से |
| ०५ | शनि | १२ | ०३ | मृग | २४ | ४६ | शोभ | २४ | ३२ | १२ | ४३ | मि.१२।४५ | ११ | २९ | २२ | 13 | नाग पंचमी |
| ०६ | रवि | ११ | ४१ | आर्द्रा | २५ | ३३ | अति | २३ | ३० | ११ | ४४ | मिथुन | ०० | ०० | २१ | 14 | यमुनाजयंती, स्कन्दष्ठी , रवियोग २५।३५ तक, सूर्य अशोक षष्ठी |
| ०७ | सोम | १२ | ०९ | पुन | २७ | ०४ | सुक | २३ | ०५ | १० | ४४ | क.२०।३९ | ०० | ०१ | १९ | 15 | भ. १२।११ से २४।४८ तक, सर्वार्थसिद्धि २७।७ से ३०।८ तक |
| ०८ | मंगल | १३ | २२ | पुष्य | २९ | १५ | धृति | २३ | ११ | ०९ | ४४ | कर्क | ०० | ०२ | १८ | 16 | श्री दुर्गाष्टमी, अशोकाष्टमी, भवानी उत्पत्ति |
| ०९ | बुध | १५ | १२ | श्ले | अ. | रा. | शूल | २३ | ४७ | ०८ | ४५ | कर्क | ०० | ०३ | १७ | 17 | श्रीरामनवमी व्रत, नवरात्र पूर्ण मन्वादि, अयोध्या परिक्रमा |
| १० | गुरू | १७ | २९ | श्ले | ०७ | ५६ | गण्ड | २४ | ४१ | ०७ | ४५ | सिं.०७।५८ | ०० | ०४ | १६ | 18 | धर्मराज दशमी दशहरा |
| ११ | शुक्र | २० | ०३ | मघा | १० | ५६ | वृद्धि | २५ | ४२ | ०७ | ४६ | सिंह | ०० | ०५ | १४ | 19 | भ. ०६।४८ से २०।५ तक, कामदा एकादशीव्रत (लोंग), लक्ष्मीकांत दोलोत्सव |
| १२ | शनि | २२ | ४१ | पूफा | १४ | ०३ | ध्रुव | २६ | ४५ | ०६ | ४६ | कं.२०।५१ | ०० | ०६ | १३ | 20 | श्री वामन द्वादशी, श्री विष्णु दमनोत्सव |
| १३ | रवि | २५ | ११ | उफा | १७ | ०६ | व्या | २७ | ४० | ०५ | ४६ | कन्या | ०० | ०७ | ११ | 21 | प्रदोष व्रत, श्री महावीर जयंती, अनंग त्रयोदशी, सर्वार्थसिद्धि ०६।५ से १७।८. |
| १४ | सोम | २७ | २५ | हस्त | २० | ०० | हर्ष | २८ | २४ | ०४ | ४७ | कन्या | ०० | ०८ | १० | 22 | भ. २७।२७ से, श्री शिवदमनोत्सव, शिव दमनक चतुर्दशी |
| १५ | मंगल | २९ | १७ | चित्रा | २२ | ३१ | वज्र | २८ | ५४ | ०६ ०४ | १८ ४७ | तु.०९।११ | ०० | ०९ | ०८ | 23 | भ. १६।२३ तक, श्री सत्यनारायण पूर्णिमा व्रत, श्री हनुमान जयंती, स्नान दान व्रत की चैत्र पूर्णिमा |

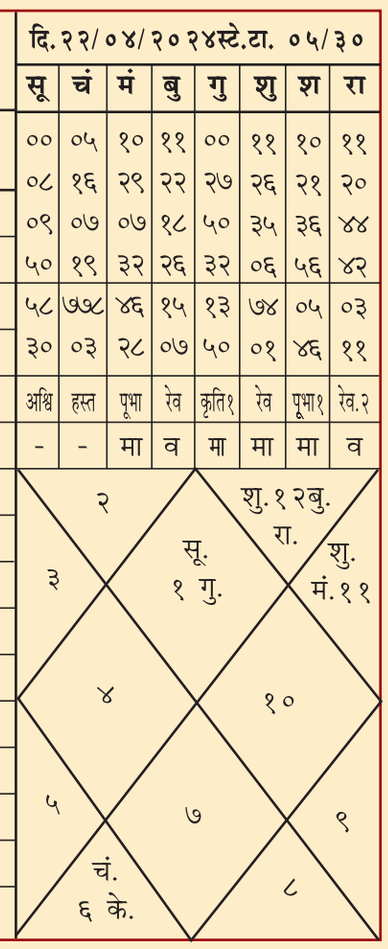




### श्री विक्रम शुभ सम्वत् 2081

24 अप्रैल से 08 मई 2024 तक

उत्तरायण — ग्रीष्म ऋतु

दि.०६/०५/२०२४स्टे.टा. ०५/३०

| तिथि | वार | समाप्ति घं. | समाप्ति मि. | नक्षत्र | समाप्ति घं. | समाप्ति मि. | योग | समाप्ति घं. | समाप्ति मि. | सू.उ. घ.मि. | सू.अ. घ.मि. | चन्द्रराशि प्रवेश | सूर्य स्पष्ट स्टे.टा ५/३० | | | अप्रैल मई | यहाँ पर दिया गया, सभी समय, भा.स्टे.स्टा.में है जो सम्पूर्ण भारत में समान रूप से ग्राह्य रहेगा । |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ०१ | बुध | अ. | रा. | स्वा | २४ | ३८ | सिद्ध | २९ | ०२ | ०६ ०३ | १८ ४८ | तुला | ०० | १० | ०७ | 24 | शिवलायों में गलन्तिका बांधे, पोशाला लगावें, वैशाख स्नान प्रा. |
| ०१ | गुरू | ०६ | ४५ | विशा | २६ | २२ | व्य | २८ | ४१ | ०२ | ४८ | वृ.२०।०१ | ०० | ११ | ०५ | 25 | बुध मार्गी १८।२१, सर्वार्थसिद्धि २६२४ से ३०।०० तक |
| ०२ | शुक्र | ०७ | ४६ | अनु | २७ | ३८ | वरी | २८ | १७ | ०१ | ४८ | वृश्चिक | ०० | १२ | ०४ | 26 | भ. २०।०४ से, शुक्र का वार्धक्य प्रा. २९।२५ |
| ०३ | शनि | ०८ | १८ | ज्ये | २८ | २७ | परि | २७ | २० | ०६ ०० | ४९ | ध.२८।२९ | ०० | १३ | ०२ | 27 | भ. ०८।२० तक, श्री संकष्टातुर्थीव्रत, चन्द्रोदय २१।१४, माता अनुसूया जयंती |
| ०४ | रवि | ०८ | २० | मूल | २८ | ४८ | शिव | २६ | ०३ | ०६ ०० | ४९ | धनु | ०० | १४ | ०० | 28 | सर्वार्थसिद्धि ६।०० से २८।५० तक |
| ०५ | सोम | ०७ | ५६ | पूषा | २८ | ४० | सिद्ध | २४ | २२ | ०५ ५९ | ५० | धनु | ०० | १४ | ५९ | 29 | रवियोग २८।४३ से |
| ०६ | मंगल | ०७ | ०३ | उषा | २८ | ०६ | साध्य | २२ | २१ | ५८ | ५० | म.१०।३६ | ०० | १५ | ५७ | 30 | भ. ०७।०५ से १८।२६ तक, रवियोग २८।०८ तक, वैताल षष्ठी |
| ०७ | मंगल | २९ | ४४ | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | 00 | सप्तमी का क्षय |
| ०८ | बुध | २८ | ०० | श्रव | २७ | ०८ | शुभ | २० | ०० | ५८ | ५१ | मकर | ०० | १६ | ५५ | 01 | कालाष्टमी, मई मास प्रा., गुरू कृतिका २ वृष में १२।५५ |
| ०९ | गुरू | २५ | ५२ | धनि | २५ | ४७ | शुक्ल | १७ | १७ | ५७ | ५१ | कुं. १४।३१ | ०० | १७ | ५३ | 02 | पंचक प्रा. १४।३१ से |
| १० | शुक्र | २३ | २४ | शत | २४ | ०४ | ब्रह्म | १४ | १५ | ५६ | ५१ | कुम्भ | ०० | १८ | ५२ | 03 | भ. १२।४० से २३।२६ तक, पंचक्रोशीयात्रा प्रारंभ |
| ११ | शनि | २० | ३८ | पूभा | २२ | ०६ | ऐंन्द्र | ११ | ०० | ५६ | ५२ | मी.१६।३८ | ०० | १९ | ५० | 04 | वरूथिनी एकादशीव्रत (खरबुजा), श्री वल्लभाचार्य जयंती, |
| १२ | रवि | १७ | ४० | उभा | १९ | ५६ | वैध विष्कु | ०७ २८ | ३६ ०२ | ५५ | ५२ | मीन | ०० | २० | ४८ | 05 | प्रदोष व्रत, शुक्र भर. में १९।४२, राहु रेव १, केतु हस्त ३ में २९।४४, |
| १३ | सोम | १४ | ३८ | रेव | १७ | ४२ | प्रीति | २४ | २५ | ५४ | ५३ | मे.१७।४४ | ०० | २१ | ४६ | 06 | भ. १४।४० से २५।१० तक, शिवरात्रिव्रत, पंचक समाप्त १७।४४ पर |
| १४ | मंगल | ११ | ३८ | अश्वि | १५ | ३० | आयु | २० | ५७ | ५४ | ५३ | मेष | ०० | २२ | ४४ | 07 | पितृ अमावस्या, अमृतसिद्धि ५।५४ से १५।३२ तक |
| ३० | बुध | ०८ | ५० | भर | १३ | ३१ | सौभा | १७ | ३७ | ०५ ५३ | १८ ५४ | वृ.१९।०७ | ०० | २३ | ४२ | 08 | स्नान दान की वैशाखी अमावस्या पुण्य, पंचक्रोशी यात्रा पूर्ण, गुरू अस्त १९।५१ |

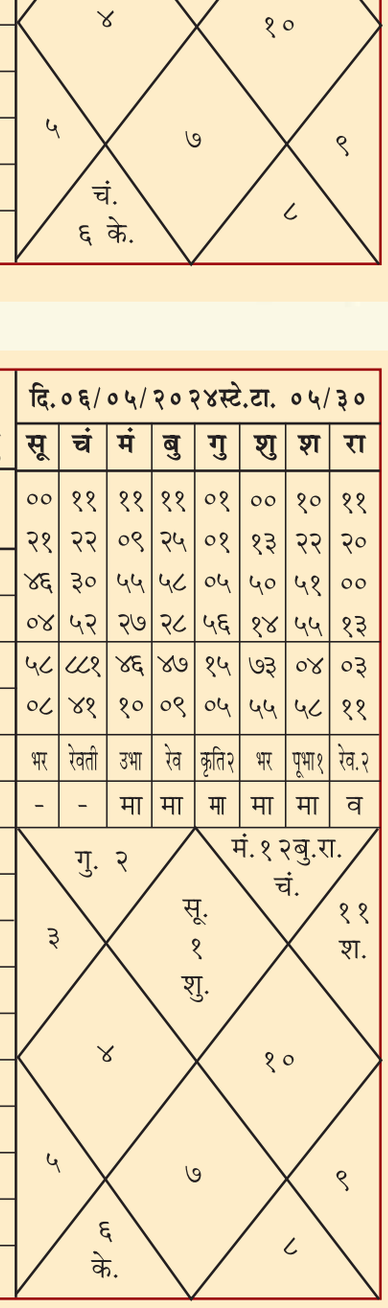

**वैशाख शुक्ल पक्ष**
09 मई 2024 से 23 मई 2024
(ग्रीष्म ऋतु)

# सम्राट विक्रमादित्य सम्वत् 2081

पिंगल नाम सम्वत्सर

• कलि संवत 5125 • सृष्टि आरम्भ 1955885125 • राजा – मंगल • मंत्री – शनि

**ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष**
24 मई 2024 से 06 जून 2024
(ग्रीष्म ऋतु)

| वार | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| रविवार | | 12 मई पंचमी (आद्य शंकराचार्य जयंती) | 19 मई एकादशी | | 26 मई तृतीया (गणेश चतुर्थी व्रत) | 02 जून एकादशी |
| सोमवार | | 13 मई षष्ठी (रामानुजाचार्य जयंती) | 20 मई द्वादशी | | 27 मई चतुर्थी | 03 जून द्वादशी |
| मंगलवार | | 14 मई सप्तमी (गंगा सप्तमी, चित्रगुप्त जयंती) | 21 मई त्रयोदशी (नरसिंह चतुर्दशी) | | 28 मई पंचमी (वीर सावरकर जयंती) | 04 जून त्रयोदशी |
| बुधवार | | 15 मई सप्तमी (केवट जयंती) | 22 मई चतुर्दशी (गुरु अमरदास जयंती) | | 29 मई षष्ठी | 05 जून चतुर्दशी |
| गुरुवार | 09 मई प्रतिपदा (गुरु अनंगदेव जयंती) | 16 मई अष्टमी (सीता नवमी, जानकी जयंती) | 23 मई पूर्णिमा (बुद्ध पूर्णिमा, कुर्मावतार जयंती) | | 30 मई सप्तमी | 06 जून अमावस्या (वट सावित्री व्रत, शनि जयंती) |
| शुक्रवार | 10 मई द्वितीया तृतीया (परशुराम जयंती, अक्षय तृतीया) | 17 मई नवमी | | 24 मई प्रतिपदा | 31 मई अष्टमी (रानी अहिल्याबाई जयंती) | |
| शनिवार | 11 मई चतुर्थी | 18 मई दशमी | | 25 मई द्वितीया (महर्षि नारद जयंती) | 01 जून नवमी दशमी | |

## श्री मल्लिकार्जुन ज्योतिर्लिंग

आन्ध्र प्रदेश के कृष्णा जिले में कृष्णा नदी के तट पर श्रीशैल पर्वत पर श्री मल्लिकार्जुन विराजमान हैं। इसे दक्षिण का कैलाश कहते हैं। अनेक धर्मग्रन्थों में इस स्थान की महिमा बतायी गई है। महाभारत के अनुसार श्रीशैल पर्वत पर भगवान शिव का पूजन करने से अश्वमेघ यज्ञ करने का फल प्राप्त होता है। कुछ ग्रन्थों में तो यहाँ तक लिखा है कि श्रीशैल के शिखर के दर्शन मात्र करने से सभी प्रकार के कष्ट दूर होते हैं, उसे अनन्त सुखों की प्राप्ति होती है और आवागमन के चक्कर से मुक्त हो जाता है। भगवान शिव के ज्येष्ठ पुत्र कार्तिकेय जी सारी पृथ्वी की परिक्रमा करके जब लौटे तो उन्होंने पाया कि उनके छोटे भाई गणेश की प्रथम पूज्य देव रूप में प्रतिष्ठा एवं उनका विवाह संस्कार सम्पन्न हो चुका है। यह बात जानकर बहुत खिन्न हुए। वे तपस्या करने के लिए क्रौन्च पर्वत पर चले गये। उनके पिता भगवान शिव और माता पार्वती जी ने उनसे बहुत अनुरोध किया कि वे क्रौन्च पर्वत से लौटकर कैलाश पर्वत चले, पर वे और भी खिन्न होकर बारह कोस दूर चले गये। तब से शिव और पार्वती ज्योतिर्मय स्वरूप धारण करके वही प्रतिष्ठत हो गये और वे पुत्र स्नेह से आतुर होकर प्रत्येक पर्व पर अपने पुत्र को देखने के लिए उनके पास जाने लगे। अमावस्या के दिन भगवान शंकर कार्तिकेय के पास जाते हैं और पूर्णमासी के दिन पार्वती जी पधारती हैं। उसी दिन से लेकर भगवान शंकर का वह श्री मल्लिकार्जुन नामक लिंग तीनों लोकों में प्रसिद्ध हुआ है। इस लिंग में शंकर और पार्वती की ज्योतियाँ प्रतिष्ठित हैं। मल्लिका का अर्थ है पार्वती तथा अर्जुन शब्द शिव का सूचक है। यह श्री मल्लिकार्जुन नामक ज्योतिर्लिंग सम्पूर्ण अभीष्ट पदार्थों को प्राप्त कराने वाला है।

### श्री विक्रम शुभ सम्वत् 2081

**09 मई से 23 मई 2024 तक**

उत्तरायण — ग्रीष्म ऋतु

यहाँ पर दिया गया, सभी समय, भा.स्टे.स्टा.में है जो सम्पूर्ण भारत में समान रूप से ग्राहय रहेगा ।

| तिथि | वार | समाप्ति घं. | मि. | नक्षत्र | समाप्ति घं. | मि. | योग | समाप्ति घं. | मि. | सू.उ. घ.मि. | सू.अ. घ.मि. | चन्द्रराशि प्रवेश | सूर्य स्पष्ट स्टे.टा ५/३० | | | मई | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ०१ | गुरू | ०६ | १९ | कृति | ११ | ५३ | शोभ | १४ | ३९ | ०५ ५३ | १८ ५४ | वृष | ०० | २४ | ४० | 09 | नवीन चन्द्रदर्शन, श्री शिवाजी जयंती |
| ०२ | गुरू | २८ | १६ | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | 00 | द्वितीया का क्षय |
| ०३ | शुक्र | २६ | ५० | रोहि | १० | ५५ | अति | १२ | ०२ | ५२ | ५५ | मि.२२।२५ | ०० | २५ | ३८ | 10 | भ.१५।३५ से २६।५२ तक, बद्रीकेदार यात्रा श्री परशुराम जयंती, श्री अक्षय तृतीया |
| ०४ | शनि | २६ | ०४ | मृग | १० | १२ | सुक | १० | ०० | ५२ | ५५ | मिथुन | ०० | २६ | ३६ | 11 | श्री विनायक चतुर्थी व्रत, सूर्य कृति. में ७।०२, शनि पूभा २ में २८।४४ |
| ०५ | रवि | २६ | ०३ | आर्द्रा | १० | २५ | धृति | ०८ | ३० | ५१ | ५५ | क.२९।०५ | ०० | २७ | ३४ | 12 | श्री आद्य शंकराचार्य जयंती, रवियोग १०।२४ तक |
| ०६ | सोम | २६ | ४९ | पुन | ११ | २३ | शूल | ०७ | ३९ | ५१ | ५६ | कर्क | ०० | २८ | ३२ | 13 | श्री रामानुजाचार्य जयंती, सर्वार्थसिद्धि ११।१६ से २९।४९ तक , चंदन षष्ठी |
| ०७ | मंगल | २८ | १८ | पुष्य | १३ | ०४ | गण्ड | ०७ | २३ | ५० | ५६ | कर्क | ०० | २९ | ३० | 14 | भ. २८।२० से, सूर्य वृष में १७।५३, मंगल रेवती में २४।५१ |
| ०८ | बुध | अ. | रा. | श्ले | १५ | २४ | वृद्धि | ०७ | ३९ | ५० | ५७ | सिं१५।२६ | ०१ | ०० | २८ | 15 | भ. १७।२२ तक, श्री दुर्गाष्टमी, गुरू कृति.३ में |
| ०८ | गुरू | ०६ | २२ | मघा | १८ | १२ | ध्रुव | ०८ | २० | ४९ | ५७ | सिंह | ०१ | ०१ | २६ | 16 | श्री सीतानवमी, मातृलक्ष्मी९, रवियोग १८।१५ से, जानकी जयंती |
| ०९ | शुक्र | ०८ | ४८ | पूफा | २१ | १६ | व्या | ०९ | १८ | ४९ | ५८ | कं.२८।०४ | ०१ | ०२ | २४ | 17 | सर्वार्थसिद्धि ५।४९ से २१।१८ तक बुध अश्विमेष में १८।४७ |
| १० | शनि | ११ | २१ | उफा | २४ | २२ | हर्ष | १० | २२ | ४९ | ५८ | कन्या | ०१ | ०३ | २२ | 18 | भ. २४।३७से, रवियोग २४।२४ तक रवियोग १०।१५ से |
| ११ | रवि | १३ | ४८ | हस्त | २७ | १५ | वज्र | ११ | २२ | ४८ | ५९ | कन्या | ०१ | ०४ | १९ | 19 | भ. १३।५० तक, मोहिनी एकादशीव्रत (गोमूत्र), शुक्र वृष में ८।४३, |
| १२ | सोम | १५ | ५६ | चित्रा | २९ | ४३ | सिद्धि | १२ | ०७ | ४८ | ५९ | तु.१६।३४ | ०१ | ०५ | १७ | 20 | सोमप्रदोष व्रत |
| १३ | मंगल | १७ | ३७ | स्वा | अ. | रा. | व्य | १२ | ३२ | ४७ | १८ ५९ | तुला | ०१ | ०६ | १५ | 21 | श्री नृसिंह जयंती, रवियोग सूर्योदय से छिन्नमस्तका जयंती |
| १४ | बुध | १८ | ४६ | स्वा | ०७ | ४४ | वरी | १२ | ३५ | ४७ | १९ ०० | वृ.२६।५६ | ०१ | ०७ | १२ | 22 | भ. १८।४८ से, रवियोग ७।४६ तक A वैशाख दान पुण्य पुर्णीमा |
| १५ | गुरू | १९ | २१ | विशा | ०९ | १२ | परि | १२ | १० | ०५ ४७ | १९ ०१ | वृश्चिक | ०१ | ०८ | १० | 23 | भ. ०७।०६ तक, श्री सत्यनारायण पूर्णिमा व्रत, श्री कूर्मजयंती, श्री बुधाष्टामी A |

दि.२०/०५/२०२४स्टे.टा. ०५/३०

| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ०१ | ०५ | ११ | ०० | ०१ | ०१ | १० | ११ |
| ०५ | २४ | २० | ११ | ०४ | ०१ | २३ | १९ |
| १७ | २६ | ३७ | ३० | २३ | ०३ | ५३ | १५ |
| ०३ | ५५ | २१ | ५७ | ५६ | ५८ | १५ | ४४ |
| ५७ | ७२५ | ४५ | ८६ | १४ | ७३ | ०३ | ०३ |
| ४४ | ५५ | ३२ | २० | ०७ | ५१ | ४२ | ११ |
| कृति | चित्रा | रेवती | अश्वि | कृति३ | कृति | पूभा२ | रेव१ |
| - | - | मा | मा | मा | मा | मा | व |

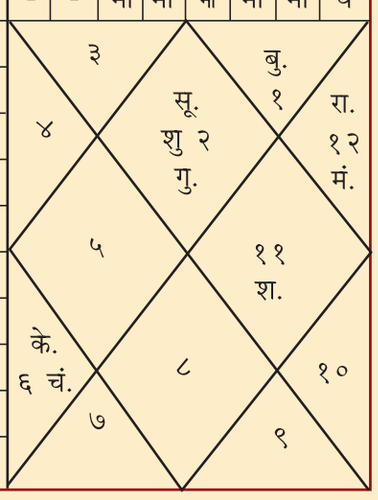






### श्री विक्रम शुभ सम्वत् 2081

**24 मई से 06 जून 2024 तक**

उत्तरायण — ग्रीष्म ऋतु

यहाँ पर दिया गया, सभी समय, भा.स्टे.स्टा.में है जो सम्पूर्ण भारत में समान रूप से ग्राहय रहेगा ।

| तिथि | वार | समाप्ति घं. | मि. | नक्षत्र | समाप्ति घं. | मि. | योग | समाप्ति घं. | मि. | सू.उ. घ.मि. | सू.अ. घ.मि. | चन्द्रराशि प्रवेश | सूर्य स्पष्ट स्टे.टा ५/३० | | | मई जून | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ०१ | शुक्र | १९ | २२ | अनु | १० | ०८ | शिव | ११ | २० | ०५ ४५ | १९ ०१ | वृश्चिक | ०१ | ०९ | ०८ | 24 | श्री नारद जयंती, वीणादान, वृन्दावन विहार परिक्रमा, नवतपा प्रा. |
| ०२ | शनि | १८ | ५६ | ज्ये | १० | ३३ | सिद्ध | १० | ०६ | ४६ | ०१ | ध.१०।३५ | ०१ | १० | ०५ | 25 | - |
| ०३ | रवि | १८ | ०४ | मूल | १० | ३४ | साध्य | ०८ | ३० | ४६ | ०२ | धनु | ०१ | ११ | ०३ | 26 | भ.६।३२ से १८।०६ तक, श्री संकष्टातुर्थी व्रत, चन्द्रोदय २२।०४, स.सि. ५।४६ से १०।३६ |
| ०४ | सोम | १६ | ५२ | पूषा | १० | १३ | शुभ शुक्ल | ०६ २८ | ३५ २५ | ४६ | ०२ | म.१६।०५ | ०१ | १२ | ०१ | 27 | शुक्र रोहि. में ११।५७ |
| ०५ | मंगल | १५ | २३ | उषा | ०९ | ३२ | ब्रह्म | २६ | ०६ | ४६ | ०३ | मकर | ०१ | १२ | ५८ | 28 | - |
| ०६ | बुध | १३ | ३९ | श्रव | ०८ | ३७ | ऐन्द्र | २३ | ३४ | ४५ | ०३ | कुं.२०।०४ | ०१ | १३ | ५६ | 29 | भ. १३।४१ से २४।४३ तक, पंचक प्रा. २०।०४ से, बुध कृति. में १६।१५ |
| ०७ | गुरू | ११ | ४२ | धनि | ०७ | ३० | वैधृ | २० | ५३ | ४५ | ०४ | कुम्भ | ०१ | १४ | ५३ | 30 | कालाष्टमी, श्री त्रिलोकनाथ अष्टमी, श्री भुवनेश्वरीमाता पाटोत्सव, रवियोग ७।३२ तक |
| ०८ | शुक्र | ०९ | ३७ | शत पूभा | ०६ २८ | १३ २६ | विष्कु | १८ | ०२ | ४५ | ०५ | मी.२३।१० | ०१ | १५ | ५१ | 31 | बुध वृष में १२।१३ |
| ०९ | शनि | ०७ | २४ | उभा | २७ | १५ | प्रीति | १५ | ०१ | ४५ | ०५ | मीन | ०१ | १६ | ४८ | 1 | भ. १८।१५ से २९।०४ तक, जून मास प्रा. मंगल अश्विमेष में १५।३६ |
| १० | शनि | २९ | ०२ | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०१ | ०० | ०० | 00 | दशमी का क्षय |
| ११ | रवि | २६ | ४० | रेव | २५ | ३७ | आयु | १२ | ११ | ४५ | ०५ | मे.२५।३९ | ०१ | १७ | ४६ | 02 | अपरा एकादशीव्रत, (खरबुजा, ककडी) पंचक स. २५।३९ |
| १२ | सोम | २४ | १८ | अश्वि | २४ | ०२ | सौभा | ०९ | १० | ४५ | ०५ | मेष | ०१ | १८ | ४३ | 03 | उत्तरा एकादशी व्रत वैष्णव |
| १३ | मंगल | २२ | ०१ | भर | २२ | ३३ | शोभ अति | ०६ २७ | ०९ १६ | ४५ | ०६ | वृ.२८।१४ | ०१ | १९ | ४१ | 04 | भ.२२।०३ से, भौमप्रदोषव्रत, शिवरात्रि व्रत, सर्वार्थसिद्धि २२।३६ से |
| १४ | बुध | १९ | ५४ | कृति | २१ | १४ | सुक | २४ | ३५ | ४५ | ०६ | वृष | ०१ | २० | ३८ | 05 | भ. ०९।०० तक, बुध रोहि. में १५।२१, गुरू का बाल्यत्व स. २९।१२ |
| ३० | गुरू | १८ | ०६ | रोहि | २० | १६ | धृति | २२ | ०९ | ०५ ४५ | १९ ०७ | वृष | ०१ | २१ | ३६ | 06 | भावुका दर्श, स्नान दान पितृ अमावस्या पुण्य, श्री शनि जयंती, वटसावित्रीव्रत (अमा. पक्ष) |

दि.०३/०६/२०२४स्टे.टा. ०५/३०

| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ०१ | ०० | ०० | ०१ | ०१ | ०१ | १० | ११ |
| १८ | ०२ | ०१ | ०५ | ०७ | १८ | २४ | १८ |
| ४३ | १६ | ११ | ११ | ४१ | १६ | ३८ | ३१ |
| २० | ४५ | ०४ | ०५ | ०८ | ३३ | २६ | १४ |
| ५७ | ८५६ | ४४ | ११८ | १४ | ७३ | ०२ | ०३ |
| २८ | २० | ५८ | २५ | ०१ | ४० | ४१ | ११ |
| रोहि | अश्वि | अश्वि | कृति | कृति४ | रोहि | पूभा२ | रेव.१ |
| - | - | मा | मा | मा | मा | मा | व |

# विक्रम पंचांग

*श्री महाकालेश्वर मंदिर*

**ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष**
07 जून 2024 से 22 जून 2024
(ग्रीष्म/वर्षा ऋतु)

## सम्राट विक्रमादित्य सम्वत् 2081

पिंगल नाम सम्वत्सर

• कलि संवत 5125 • सृष्टि आरम्भ 1955885125 • राजा – मंगल • मंत्री – शनि

**आषाढ़ कृष्ण पक्ष**
23 जून 2024 से 05 जुलाई 2024
(वर्षा ऋतु)

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| **09 जून** तृतीया<br>बिरसामुण्डा शहीदी दिवस<br>महाराणा प्रताप जयंती<br>छत्रसाल जयंती | **16 जून** दशमी<br>गंगा दशहरा | **रविवार** | **23 जून** प्रतिपदा द्वितीया<br>गुरु हरगोविंद जयंती | **30 जून** नवमी |
| **10 जून** चतुर्थी<br>गुरु अर्जुनदेव पुण्यतिथि | **17 जून** एकादशी<br>ईदुज्जुहा | **सोमवार** | **24 जून** तृतीया<br>विरांगना दुर्गावती<br>बलिदान दिवस | **01 जुलाई** दशमी |
| **11 जून** पंचमी | **18 जून** द्वादशी | **मंगलवार** | **25 जून** चतुर्थी | **02 जुलाई** एकादशी |
| **12 जून** षष्ठी | **19 जून** द्वादशी | **बुधवार** | **26 जून** पंचमी | **03 जुलाई** द्वादशी त्रयोदशी<br>संत नामदेव पुण्यतिथि |
| **13 जून** सप्तमी | **20 जून** त्रयोदशी<br>बड़ा महादेव पूजन | **गुरुवार** | **27 जून** षष्ठी | **04 जुलाई** चतुर्दशी |
| **07 जून** प्रतिपदा | **14 जून** अष्टमी<br>धूमावती जयंती | **21 जून** चतुर्दशी<br>वट सावित्री पूर्णिमा व्रत | **शुक्रवार** | **28 जून** सप्तमी | **05 जुलाई** अमावस्या |
| **08 जून** द्वितीया | **15 जून** नवमी<br>महेश जयंती | **22 जून** पूर्णिमा<br>संत कबीर जयंती | **शनिवार** | **29 जून** अष्टमी |

## श्री महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग

श्री महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग मध्यप्रदेश में सुप्रसिद्ध उज्जयिनी नगरी में क्षिप्रा नदी के तट पर स्थित है। द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से यही एक मात्र दक्षिणामुखी शिवलिंग हैं। अतः यहाँ दक्षिणामूर्ति शिव की गुरु रूप में उपासना करने का भी विशेष महत्व है। अतः शैवों और शाक्तों दोनों ही सम्प्रदायों में समान रूप से इनकी महत्ता स्वीकृत है। इनके पूजन का महत्व सबसे अधिक माना गया है। इनकी राशि मिथुन है, फलतः मिथुन राशि के जातकों को ग्रह बाधा दूर करने और अन्य दूसरे व्यक्तियों को भी अल्पायु, मारकेश आदि मृत्यु अथवा मारक रोगों के अरिष्टों को भगवान शिव का यह महाकालेश्वर स्वरूप वैसे ही दूर कर देता है। वर्तमान उज्जैन का प्राचीन नाम अवन्तिका था। इस अवन्तिका पुरी में किसी समय वेदों के स्वाध्याय में संलग्न एक ब्राह्मण रहता था। उसका नाम था वेदप्रिय। यथा नाम तथागुण। वे वेदप्रिय, वैदिक कर्मों के अनुष्ठान में तत्पर रहने वाले थे। प्रतिदिन अग्निहोत्र करते थे, शिव की उपासना करते थे। वे गृहस्थ थे, उनके चार पुत्र थे- वेदप्रिय, प्रियमेधा, सुकृत और सुव्रत। ये चारों भी पिता की तरह चरित्र- निष्ठ सद्गुण सम्पन्न और कर्म निष्ठ थे। वे परम शिवभक्त तपस्वी थे। फलस्वरूप उनके कारण अवन्ती नगरी उनके ब्रह्मवर्चस् से परिपूर्ण हो गई थी। संयोग से उसी समय रत्नमाल पर्वत पर दूषण नाम का एक असुर ब्रह्मा जी की तपस्या कर रहा था। उसकी कठोर तपस्या से ब्रह्मा जी प्रसन्न हुए। वर प्राप्त होते ही वह असुर अपने स्वाभाविक दोषों से प्रेरित होकर विधर्मी और धर्मात्माओं का नाश करने लगा। अहंकार में भरे हुए असुर ने अवन्ती के ऊपर आक्रमण कर दिया। उसकी भयानक सेना चारों दिशाओं में उज्जयिनी को नष्ट करने लगी। वे शिवभक्त वेदप्रिय, प्रियमेधा, सुकृत और सुव्रत चारों ब्राह्मण डरे नहीं। उन्होंने नगर के लोगों को आश्वासन दिया कि आप लोग भगवान शंकर पर विश्वास करें, वे कल्याण करेंगे। यह कह करके वे चारों ध्यान करने लगे। पार्थिव शिवलिंग उनके सामने था। सेना सहित वह दूषण असुर वहाँ आया। उसने उन ब्राह्मणों को देखा और उन्हें मारने का आदेश दिया,पर वे ब्राह्मण तो शिव के ध्यान में थे। जैसे ही उन्होंने ब्राह्मणों को मारने का प्रयत्न किया, त्यों ही उस पूजित शिवलिंग के स्थान पर भयंकर आवाज के साथ एक गड्ढा प्रकट हो गया और उस गड्ढे से भूतभावन भगवान शंकर प्रकट हो गये। उन्होंने दैत्यों को ललकारा कि- अरे दुष्टों! मैं महाकाल हूँ, इन ब्राह्मणों से दूर हट जाओ, ऐसा कहकर उन आक्रामक असुरों की सेना के सैनिकों को और दूषण को हुँकार की ध्वनि से नष्ट कर दिया। जो सेना शेष बची वह भाग खड़ी हुई, देवताओं की दुंदुभी बजने लगी। देवता पुष्प वर्षा करने लगे। महाकाल स्वरूप शिव ने उन ब्राह्मणों से प्रसन्न होकर कहा कि वर माँगों। ब्राह्मणों ने प्रार्थना की- हे प्रभु! आप महाकाल के रूप में यहीं स्थित हो जायें और अपने दर्शन करने वाले मनुष्यों का उद्धार करें। भगवान शिव ऐसा ही हो, यह कहकर अदृश्य हो गये। लिंग रूपी भगवान शिव वहाँ स्थापित हो गये, जो श्री महाकालेश्वर कहे गये। वहाँ के चारों ओर एक-एक कोष तक की भूमि शिव का स्थल बन गई। इस प्रकार से श्री महाकालेश्वर शिवलिंग की यह कथा शिवपुराण में कोटि रुद्र संहिता में वर्णित है।

**श्री विक्रम शुभ सम्वत् 2081** — 07 जून से 22 जून 2024 तक — उत्तरायण/दक्षिणायन — ग्रीष्म/वर्षा ऋतु

| दि. | वार | समाप्ति घं. | समाप्ति मि. | नक्षत्र | समाप्ति घं. | समाप्ति मि. | योग | समाप्ति घं. | समाप्ति मि. | सू.उ. घ.मि. | सू.अ. घ.मि. | चन्द्रराशि प्रवेश | सूर्य स्पष्ट स्टे.टा ५/३० | | | जून | यहाँ पर दिया गया, सभी समय, भा.स्टे.स्टा.में है जो सम्पूर्ण भारत में समान रूप से ग्राह्य रहेगा । |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ०१ | शुक्र | १६ | ४३ | मृग | १९ | ४१ | शूल | २० | ०२ | ०५ ४५ | १९ ०७ | मि.०७।५६ | ०१ | २२ | ३३ | 07 | चन्द्रदर्शन, सूर्य मृगशीर्ष में २५।५ वाहन हस्ति वर्षा मध्यम |
| ०२ | शनि | १५ | ५३ | आर्द्रा | १९ | ४१ | गण्ड | १८ | २५ | ४५ | ०७ | मिथुन | ०१ | २३ | ३१ | 08 | रम्भा तृतीया (द्वितीयाविद्धा), रम्भा व्रत |
| ०३ | रवि | १५ | ४३ | पुन | २० | १९ | वृद्धि | १७ | १८ | ४५ | ०८ | क.१४।०६ | ०१ | २४ | २८ | 09 | भ.२८।०० से, श्री महाराणा प्रताप जयंती, श्री विनायक चतुर्थी A |
| ०४ | सोम | १६ | १३ | पुष्य | २१ | ३८ | ध्रुव | १६ | ४५ | ४५ | ०८ | कर्क | ०१ | २५ | २५ | 10 | - A सर्वार्थसिद्धि (रविपुष्य) २०।२२ से |
| ०५ | मंगल | १७ | २५ | श्ले | २३ | ३८ | व्या | १६ | ४४ | ४५ | ०८ | सिंह२३।३८ | ०१ | २६ | २३ | 11 | सर्वार्थसिद्धि ५।४५ से २३।३८ तक, रवियोग २३।३९ से, संत टेऊराम पुण्य तिथि |
| ०६ | बुध | १९ | १५ | मघा | २६ | ०९ | हर्ष | १७ | १२ | ४५ | ०९ | सिंह | ०१ | २७ | २० | 12 | रवियोग २६।११ तक, अरण्य षष्ठी, आरोग्य षष्ठी |
| ०७ | गुरू | २१ | ३२ | पूफा | २९ | ०५ | वज्र | १८ | ०३ | ४५ | ०९ | सिंह | ०१ | २८ | १७ | 13 | भ. २१।३४ से, गुरू रोहिणी १ में २९।३६ रवियोग २०।२२ से |
| ०८ | शुक्र | २४ | ०२ | उफा | अ. | रा. | सिद्धि | १९ | ०५ | ४५ | ०९ | कं.११।५५ | ०१ | २९ | १५ | 14 | भ. १०।४९ तक, श्री दुर्गाष्टमी, सूर्य मिथुन में २४।२७ |
| ०९ | शनि | २६ | ३० | उफा | ०८ | १३ | व्य | २० | ०८ | ४५ | १० | कन्या | ०२ | ०० | १२ | 15 | श्री महेश नवमी, रवियोग ०८।१६ से, धूमावती जयंती |
| १० | रवि | २८ | ४३ | हस्त | ११ | ४९ | वरी | २१ | ०० | ४५ | १० | तु.१२।३५ | ०२ | ०१ | ०९ | 16 | श्री गंगादशहरा (गंगादशमी), श्री बटुक भैरव जयंती |
| ११ | सोम | अ. | रा. | चित्रा | १३ | ५३ | परि | २१ | ३२ | ४५ | १० | तुला | ०२ | ०२ | ०७ | 17 | भ. १७।३५ से, बुध आर्द्रा में २४।९, शुक्र आर्द्रा में २८।४४, रवियोग १३।५१ |
| ११ | मंगल | ०६ | २३ | स्वा | १५ | २० | शिव | २१ | ३७ | ४५ | १० | तुला | ०२ | ०३ | ०४ | 18 | भ. ०६।२५ तक, निर्जला एकादशीव्रत (आम), गायत्री जयंती |
| १२ | बुध | ०७ | २८ | विशा | १७ | ०८ | सिद्धि | २१ | ०८ | ४५ | ११ | वृ.११।०४ | ०२ | ०४ | ०१ | 19 | प्रदोष व्रत, अमृतसिद्धि १७।२३ से २९।४४ तक |
| १३ | गुरू | ०७ | ४८ | अनु | १८ | १८ | साध्य | ० | १० | ४५ | ११ | वृश्चिक | ०२ | ०४ | ५८ | 20 | सर्वार्थसिद्धि ५।४५ से १८।१० तक, रवियोग १८।१० तक |
| १४ | शुक्र | ०७ | ३० | ज्ये | १८ | ५२ | शुभ | १८ | ४० | ४६ | ११ | ध.१८।२० | ०२ | ०५ | ५६ | 21 | भ. ७।३२ से १९।०६ तक, श्री सत्यनारायण व्रत, वट सावित्री व्रत (पूर्णिमा पक्ष) |
| १५ | शनि | ०६ | ३७ | मूल | १७ | | शुक्ल | १६ | ४२ | ०५ ४५ | १९ ०७ | धनु | ०२ | ०६ | ५३ | 22 | जेठी पूर्णिमा अमृतसिद्धि ५४५ से ११।१३ तक, कबीर जयंती |

दि.१७/०६/२०२४स्टे.टा. ०५/३०

| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ०२ | ०६ | ०० | ०२ | ०१ | ०२ | १० | ११ |
| ०२ | ०२ | ११ | ०४ | १० | ०५ | २५ | १७ |
| ०६ | २७ | ३४ | ५८ | ५४ | २८ | ०६ | ४६ |
| ४१ | ५६ | ४१ | ३९ | ३७ | ४५ | ४४ | ४५ |
| ५७ | ७२९ | ७४ | १३० | १३ | ७३ | ०१ | ०३ |
| १६ | ५७ | ०७ | ४१ | ४० | ४२ | १६ | ११ |
| मृग | चित्रा | अश्वि | मृग | रोहि१ | मृग | पूभा२ | रेव.१ |
| - | - | मा | मा | मा | मा | मा | व |

**श्री विक्रम शुभ सम्वत् 2081** — 23 जून से 05 जुलाई 2024 तक — दक्षिणायन — वर्षा ऋतु

| दि. | वार | समाप्ति घं. | समाप्ति मि. | नक्षत्र | समाप्ति घं. | समाप्ति मि. | योग | समाप्ति घं. | समाप्ति मि. | सू.उ. घ.मि. | सू.अ. घ.मि. | चन्द्रराशि प्रवेश | सूर्य स्पष्ट स्टे.टा ५/३० | | | जून जुलाई | यहाँ पर दिया गया, सभी समय, भा.स्टे.स्टा.में है जो सम्पूर्ण भारत में समान रूप से ग्राह्य रहेगा । |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ०१ | शनि | २९ | १२ | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | 00 | प्रतिपदा का क्षय, अशुन्य व्रत, गुरूगोविंद जयंती |
| ०२ | रवि | २७ | २६ | पूषा | १७ | ०२ | ब्रह्म | १४ | २४ | ०५ ४७ | १९ १२ | म.२३।४७ | ०२ | ०७ | ५० | 23 | सर्वार्थसिद्धि १७।५ से २९।४६ तक |
| ०३ | सोम | २५ | २३ | उषा | १५ | ५१ | ऐन्द्र | ११ | ४९ | ४७ | १२ | मकर | ०२ | ०८ | ४७ | 24 | भ. १४।२७ से २५।२५ तक, बुध पुन. में ८।१४, |
| ०४ | मंगल | २३ | १० | श्रव | १४ | ५० | वैधृ | ०९ | ०३ | ४७ | १२ | कुं. २५।४९ | ०२ | ०९ | ४५ | 25 | श्री संकष्टातुर्थी व्रत, चन्द्रोदय २२।२४, पंचक प्रा. २५।४९ से, |
| ०५ | बुध | २० | ५३ | धनि | १३ | ०२ | विष्क प्रीति | ०६ २७ | १४ १९ | ४७ | १२ | कुम्भ | ०२ | १० | ४२ | 26 | नागपंचमी बंगाल, कोकिला पंचमी (जैन) |
| ०६ | गुरू | १८ | ३७ | शत | ११ | ३५ | आयु | २४ | २६ | ४८ | १२ | मी.२८।३२ | ०२ | ११ | ३९ | 27 | भ. १८।३९ से २९।३३ तक, गुरू रोहि. २ में २५।५६, रवियोग ११।३८ से |
| ०७ | शुक्र | १६ | २५ | पूभा | १० | १० | सौभा | २१ | ३३ | ४८ | १२ | मीन | ०२ | १२ | ३६ | 28 | कालाष्टमी, शुक्र पुन. में २५।१३, रवियोग १०।१२ तक |
| ०८ | शनि | १४ | १९ | उभा | ०८ | ४७ | शोभ | १८ | ५१ | ४८ | १२ | मीन | ०२ | १३ | ३३ | 29 | बुध कर्क में १२।२६, शनि वक्री २४।४०, भल-भलाष्टमी |
| ०९ | रवि | १२ | १८ | रेव | ०७ | ३३ | अति | १६ | १२ | ४९ | १२ | मे.०७।३५ | ०२ | १४ | ३१ | 30 | भ. २३।२४ से, पंचक स. ७।३५ पर, सर्वार्थसिद्धि ७।३६ से २९।४८ तक |
| १० | सोम | १० | २६ | अश्वि भर | ०६ २९ | २७ २६ | सुक | १३ | ३९ | ४९ | १२ | मेष | ०२ | १५ | २८ | 01 | भ. १०।२८ तक, जुलाई मास प्रा., बुध पुष्य में ८।३५ |
| ११ | मंगल | ०८ | ४१ | कृति | २८ | ३९ | धृति | ११ | १४ | ४९ | १२ | वृ.११।१३ | ०२ | १६ | २५ | 02 | योगिनी एकादशी व्रत (मिश्री), महापात दोष १३।८ से १९।८ तक, |
| १२ | बुध | ०७ | १० | रोहि | २८ | ०६ | शूल | ०९ | ०० | ५० | १२ | वृष | ०२ | १७ | २२ | 03 | प्रदोष व्रत, सर्वार्थसिद्धि ५।५० से २८।८ तक |
| १३ | गुरू | ०५ | ५४ | मृग | २७ | ५२ | गण्ड वृद्धि | ०६ २९ | २७ २६ | ५० | १२ | मि.१५।५८ | ०२ | १८ | १९ | 04 | भ. ५।५६ से १७।२७ तक, शिवरात्रि व्रत, शुक्रोदय पश्चिम में २०।२४ |
| १४ | गुरू | २८ | ५६ | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | 00 | चतुर्दशी का क्षय |
| ३० | शुक्र | २८ | २४ | आर्द्रा | २८ | ०४ | ध्रुव | २७ | ४६ | ०५ ५० | १९ १२ | मिथुन | ०२ | १९ | १७ | 05 | आषाढ़ी अमावस्या पुण्य, सूर्य पुनर्वसु में २३।४० वाहन जम्बुक वर्षा श्रेष्ठ |

दि.०१/०७/२०२४स्टे.टा. ०५/३०

| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ०२ | ०० | ०० | ०३ | ०१ | ०२ | १० | ११ |
| १५ | १२ | २१ | ०३ | १४ | २२ | २५ | १७ |
| २७ | ४७ | ४५ | ०६ | ०१ | ४० | १३ | ०२ |
| ५० | १९ | ५७ | २८ | ०७ | ४६ | ४३ | १५ |
| ५७ | ८३४ | ४३ | १०६ | १३ | ७३ | ०० | ०३ |
| १३ | १२ | १० | ०३ | ०५ | ४२ | १७ | ११ |
| आर्द्रा | अश्वि | भर | पुन | रोहित२ | पुन | पूभा२ | रेव १ |
| - | - | मा | मा | मा | मा | व | व |

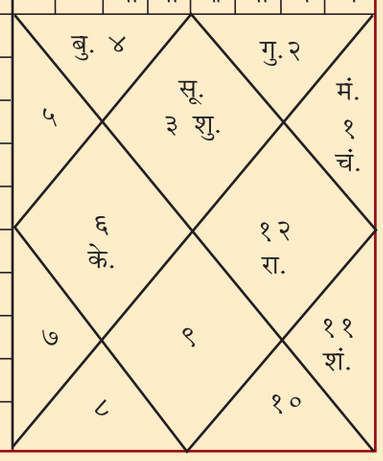

# विक्रम पंचांग

*श्री ओंकारेश्वर मंदिर*

**आषाढ़ शुक्ल पक्ष**
06 जुलाई 2024 से 21 जुलाई 2024
(वर्षा ऋतु)

## सम्राट विक्रमादित्य सम्वत् 2081

पिंगल नाम सम्वत्सर

• कलि संवत 5125 • सृष्टि आरम्भ 1955885125 • राजा – मंगल • मंत्री – शनि

**श्रावण कृष्ण पक्ष**
22 जुलाई 2024 से 04 अगस्त 2024
(वर्षा ऋतु)

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 21 जुलाई पूर्णिमा<br>गुरु पुर्णिमा व्यास पूजन | 07 जुलाई द्वितीया | 14 जुलाई अष्टमी | रविवार | | 28 जुलाई अष्टमी | 04 अगस्त अमावस्या<br>हरियाली अमावस्या |
| | 08 जुलाई तृतीया | 15 जुलाई नवमी<br>गुप्त नवरात्रि समाप्त भड़ली नवमी | सोमवार | 22 जुलाई प्रतिपदा<br>श्रावण सोमवार महाकाल सवारी प्रथम | 29 जुलाई नवमी<br>हरिकिशन जयंती श्रावण सोमवार सवारी | |
| | 09 जुलाई चतुर्थी | 16 जुलाई दशमी | मंगलवार | 23 जुलाई द्वितीया | 30 जुलाई दशमी | |
| | 10 जुलाई चतुर्थी | 17 जुलाई एकादशी<br>देवशयनी एकादशी चातुर्मास प्रारंभ, मोहर्रम | बुधवार | 24 जुलाई तृतीया | 31 जुलाई एकादशी<br>मुंशी प्रेमचंद्र जयंती | |
| | 11 जुलाई पंचमी | 18 जुलाई द्वादशी | गुरुवार | 25 जुलाई चतुर्थी पंचमी | 01 अगस्त द्वादशी | |
| | 12 जुलाई षष्ठी | 19 जुलाई त्रयोदशी | शुक्रवार | 26 जुलाई षष्ठी | 02 अगस्त त्रयोदशी | |
| 06 जुलाई प्रतिपदा<br>गुप्त नवरात्रि आरंभ | 13 जुलाई सप्तमी | 20 जुलाई चतुर्दशी | शनिवार | 27 जुलाई सप्तमी | 03 अगस्त चतुर्दशी | |

## श्री ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग

मध्यप्रदेश के खंडवा जिले में स्थित है। यह नर्मदा नदी के बीच मन्धाता या शिवपुरी नामक द्वीप पर स्थित है। यह भगवान शिव के बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक है। यहाँ नर्मदा नदी ने इस प्रकार से अपना मार्ग बनाया है कि यह क्षेत्र ओंकार की आकृति का बन गया है। इसी से इस पवित्र क्षेत्र को ओंकार क्षेत्र कहा जाता रहा है। यहाँ स्थित भगवान ओंकार क्षेत्र के ईश्वर अर्थात् ओंकारेश्वर रूप कहे जाते हैं। यह प्राचीन क्षेत्र है। पूर्व में यहाँ प्रसिद्ध राजर्षि माधाता राज करते थे, यह त्रेता के पूर्व की बात है। अभी कलियुग में यहीं इसी क्षेत्र में आदि शंकराचार्य के गुरु श्री गोविन्दपादाचार्य यही तपस्यारत थे। शंकराचार्य ने यहीं नर्मदा के तट पर जहाँ आज ओंकारेश्वर का मन्दिर बना है उसी के पास दीक्षा ली थी। शंकर दिग्विजय नामक ग्रन्थ में इसकी चर्चा है। इस ज्योतिर्लिंग की राशि कर्क मानी गई है। कर्क के जातकों की यहाँ पूजन करने से ग्रह जन्य बाधा दूर होती है। यहाँ पहले एक ही शिवलिंग था पर बाद में देवों की प्रार्थना से यही दो भागों में ओंकारेश्वर और परमेश्वर (ममलेश्वर या अमलेश्वर नाम से) नर्मदा नदी के दोनों तटों पर विराजित हो गये हैं। इनकी पूजा वैदिक विधि से होती है। कर्क राशि के जातक को श्वेत आक के पुष्पों, बिल्व पत्तों, अपामार्ग के शमी के हरे पत्तों, गौदुग्ध (कच्चे) और पचामृत द्वारा पचाक्षर मंत्र से तथा अभिषेक रुद्र सूक्त से करने या कराने से जातक के अभीष्ट की सिद्धि होती है। माधाता वाला शिवलिंग वैभव देता है और अमलेश्वर (ममलेश्वर) शुद्ध बुद्धि और भक्ति प्रदान करता है। अतः दोनों ही विशेष रूप से पूजनीय है। इसके उद्भव के संबंध में जो कथा है वह इस प्रकार है कि एक समय नारदजी गोकर्ण क्षेत्र में जाकर शिव की साधना करने लगे। फिर वहाँ से जब वे लौटे और गिरिराज विन्ध्यांचल पर्वत पर आये तो विन्ध्य ने ऋषि का पूजन किया और कहा कि- हे मुनिवर! आप मेरे यहाँ तपस्या क्यों नहीं करते। आपको मेरे यहाँ कौन सी कमी दिखती है। नारद जी ने लम्बी साँस ली और कोई उत्तर नहीं दिया फिर कुछ देर बाद नारद जी ने उत्तर दिया और कहा कि तुम्हारे यहाँ सब कुछ है, किन्तु तुमसे ऊँचा हिमालय पर्वत है। उसके शिखर देवताओं के लोक में भी पहुँचे हैं। किन्तु तुम्हारे यहाँ का कोई भी शिखर देवलोक तक कभी भी नहीं पहुँचा। इतना कह करके नारद जी तो चले गये। विन्ध्य ने सोचा-मेरा जीवन व्यर्थ है। ऐसे जीवन को धिक्कार है। वह भारी मन से भगवान शिव की आराधना करने के विचार में लीन हो गया और फिर दृढ संकल्प के साथ वह अपने ऊँकार क्षेत्र में गया। वहाँ पर पार्थिव शिव की मूर्ति बनाई। शिव जी की छः मास तक अडिंग, अचल स्थिति में रहकर कठोर साधना की। भगवान भूतभावन शिव प्रसन्न हुए। भगवान ने विन्ध्याचल को अपना वह स्वरूप दिखाया जो योगियों के लिए भी दुर्लभ है। प्रसन्न होकर शिव ने विन्ध्य से कहा कि मैं तुम्हारी तपस्या से प्रसन्न हूँ, वर माँगों। विन्ध्य ने भगवान से कहा कि- हे शम्भु। आप मुझ पर प्रसन्न है, अतः कृपा करके मुझे ऐसी श्रेष्ठ बुद्धि प्रदान करें जो सदा अपने कार्य को सिद्ध करने वाली हो। भगवान शिव ने विन्ध्य को इष्ट वर प्रदान किया। उसी समय वहाँ पर देवगण और ऋषि आ गये, उन्होंने शिव शंकर की पूजा की और भगवान शिव से प्रार्थना की कि आप यहाँ स्थिर रूप से निवास करें। ऋषियों और देवताओं की बात सुनकर परमेश्वर शिव हर्षित हुए और लोक मंगल के लिए उन्होंने वैसा ही किया। उस ओम्कार क्षेत्र में जो एक ही ओमकार लिंग था, जो दो स्वरूपों में विभक्त हो गया। प्रणव में जो सदाशिव थे, वे ओमकार नाम से विख्यात हुए और पार्थिव मूर्ति में जो शिव ज्योति प्रतिष्ठित हुई, उसकी परमेश्वर संज्ञा हुई। परमेश्वर को ही ममलेश्वर भी कहते हैं। इस प्रकार ओमकार और परमेश्वर अर्थात् ओमकारेश्वर और ममलेश्वर दोनों ही भक्तों को अभीष्ट प्रदान करने वाले हैं।

### श्री विक्रम शुभ सम्वत् 2081

**06 जुलाई से 21 जुलाई 2024 तक**

**दक्षिणायन** — **वर्षा ऋतु**

| तिथि | वार | समाप्ति घं. | मि. | नक्षत्र | समाप्ति घं. | मि. | योग | समाप्ति घं. | मि. | सू.उ. घ.मि. | सू.अ. घ.मि. | चन्द्रराशि प्रवेश | सूर्य स्पष्ट स्टे.टा ५/३० | | | जुलाई | यहाँ पर दिया गया, सभी समय, भा.स्टे.स्टा.में है जो सम्पूर्ण भारत में समान रूप से ग्राह्य रहेगा । |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ०१ | शनि | २८ | २४ | पुन | २८ | ४६ | व्या | २६ | ४७ | ०५ ५१ | ११ १२ | क.२२।३४ | ०२ | २० | १४ | 06 | गुप्त नवरात्रा प्रा., शुक्र कर्क में २८।३१ |
| ०२ | रवि | २९ | ०० | पुष्य | अ. | रा. | हर्ष | २६ | ११ | ५१ | १२ | कर्क | ०२ | २१ | ११ | 07 | चन्द्रदर्शन, श्री जगदीश रथयात्रा (पुरी), मनोरथ द्वितीया |
| ०३ | सोम | अ. | रा. | पुष्य | ०६ | ०३ | व्रज | २६ | ०४ | ५१ | १२ | कर्क | ०२ | २२ | ०८ | 08 | सर्वार्थसिद्धि ५४१ से ६।२ तक |
| ०३ | मंगल | ०६ | १० | श्ले | ०७ | ५० | सिद्धि | २६ | २३ | ५२ | १२ | सिं.०७।५२ | ०२ | २३ | ०६ | 09 | भ. १९।०२ से, श्री विनायक चतुर्थी व्रत, बुध श्ले. में १२।२७, शुक्र पुष्य में |
| ०४ | बुध | ०७ | ५२ | मघा | १० | १२ | व्य | २७ | ०८ | ५२ | १२ | सिंह | ०२ | २४ | ०३ | 10 | भ. ७।५४ तक, रवियोग १०।१४ तक, हेरा पंचमी |
| ०५ | गुरू | १० | ०२ | पूफा | १३ | ०२ | वरी | २८ | ०५ | ५३ | १२ | कं.१९।४७ | ०२ | २५ | ०० | 11 | कुमार स्कन्द षष्ठी, रवियोग १३।५ से शिवशयनोत्सव, कुसुम्बा ६ |
| ०६ | शुक्र | १२ | ३१ | उफा | १६ | ०७ | परि | २९ | १२ | ५३ | १२ | कन्या | ०२ | २५ | ५७ | 12 | मंगल वृष में १८।५७, रवियोग १६।९ तक १८।३, रवियोग २५।४९ तक |
| ०७ | शनि | १५ | ०३ | हस्त | १९ | १४ | शिव | अ. | रा. | ५३ | १२ | कन्या | ०२ | २६ | ५५ | 13 | भ. १५।५ से २८।१८ तक, विवस्त् सप्तमी, गुरू रोहि. ३ में १९।५० |
| ०८ | रवि | १७ | २५ | चित्रा | २२ | ०६ | शिव | ०६ | १३ | ५४ | १२ | तु.०८।४३ | ०२ | २७ | ५२ | 14 | दुर्गाष्टी, रवियोग २२।९ से |
| ०९ | सोम | १९ | १७ | स्वा | २४ | २८ | सिद्ध | ०७ | ०० | ५५ | ११ | तुला | ०२ | २८ | ४९ | 15 | भड्डली नवमी, गुप्त नवरात्र विधान पूर्ण |
| १० | मंगल | २० | ३१ | विशा | २६ | ११ | साध्य | ०७ | १६ | ५५ | ११ | वृ.१९।०० | ०२ | २९ | ४६ | 16 | सूर्य कर्क में ११।१८, आशा दशमी, रवियोग |
| ११ | बुध | २१ | ०० | अनु | २७ | १० | शुभ | ०७ | ०२ | ५६ | ११ | वृश्चिक | ०३ | ०० | ४३ | 17 | भ. ८।४८ से २१।०२ तक, देवशयनी एकादशीव्रत (दाख), श्री विष्णु शयनोत्सव |
| १२ | गुरू | २२ | ४३ | ज्ये | २७ | २३ | शुक्ल ब्रह्म | ०६ २८ | १० ४१ | ५६ | १० | ध.२७।२५ | ०३ | ०१ | ४१ | 18 | रवियोग २७।२६ से चातुर्मास्यव्रत नियम प्रा., अमृतसिद्धि ५।५५ से २७।१२ तक |
| १३ | शुक्र | १९ | ४० | मूल | २६ | ५३ | ऐन्द्र | २६ | ४९ | ५६ | १० | धनु | ०३ | ०२ | ३८ | 19 | प्रदोष व्रत, सूर्य पुष्य में २३।१० वाहन गर्दभ वर्षा श्रेष्ठ |
| १४ | शनि | १८ | ०० | पूषा | २५ | ४६ | वैधृ | २४ | ०६ | ५६ | १० | धनु | ०३ | ०३ | ३५ | 20 | भ. १८।१ से २८।५४ तक, श्री सत्यनारायण व्रत, कोकिला व्रत |
| १५ | रवि | १५ | ४५ | उषा | २४ | ११ | विष्कु | २१ | ०९ | ०५ ५७ | १९ १० | म. ७।२७ | ०३ | ०४ | ३२ | 21 | गुरू पूर्णिमा व्यास पूजा, पूर्णिमा व्रत, गोवर्धन परिक्रमा, सर्वार्थसिद्धि ५।५७ से २४।१३ तक |

दि.१५/०७/२०२४स्टे.टा. ०५/३०

| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ०२ | ०६ | ०१ | ०३ | ०१ | ०३ | १० | ११ |
| २८ | १० | ०१ | २४ | १६ | ०९ | २५ | १६ |
| ४८ | २२ | ४२ | ३३ | ५७ | ५२ | ०२ | १७ |
| ५८ | २४ | ५७ | ३४ | २० | ५८ | १९ | ४४ |
| ५७ | ७३१ | ४२ | ७५ | ११ | ७३ | ०१ | ०३ |
| १३ | ३० | ०५ | ०७ | ५८ | ४० | ४० | ११ |
| पुन नी | स्वा वा | कृति च | श्ले अ | रोहि३ वा | पुष्य ज | पूभा२ नी | उभा४ सी |
| - | - | मा | मा | मा | मा | व | व |

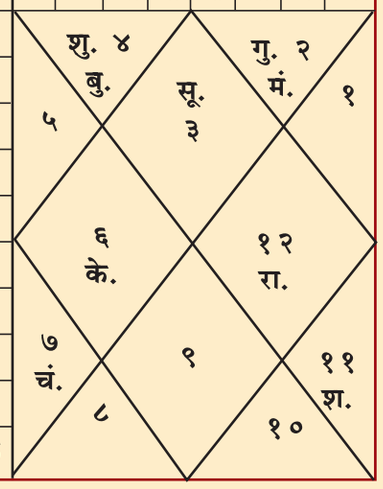






### श्री विक्रम शुभ सम्वत् 2081

**22 जुलाई से 04 अगस्त 2024 तक**

**दक्षिणायन** — **वर्षा ऋतु**

| तिथि | वार | समाप्ति घं. | मि. | नक्षत्र | समाप्ति घं. | मि. | योग | समाप्ति घं. | मि. | सू.उ. घ.मि. | सू.अ. घ.मि. | चन्द्रराशि प्रवेश | सूर्य स्पष्ट स्टे.टा ५/३० | | | जुलाई अगस्त | यहाँ पर दिया गया, सभी समय, भा.स्टे.स्टा.में है जो सम्पूर्ण भारत में समान रूप से ग्राह्य रहेगा । |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ०१ | सोम | १३ | ०९ | श्रव | २२ | १९ | प्रीति | १७ | ५६ | ०५ ५७ | १९ ०९ | मकर | ०३ | ०५ | ३० | 22 | चातुर्मासान्तर्गत श्रावण में शाकभक्षण त्याग, अशून्यशयन व्रत, हिंडोला उत्सव प्रा. |
| ०२ | मंगल | १० | २० | धनि | २० | १६ | आयु | १४ | ३३ | ५८ | ०९ | कुं.०९।२० | ०३ | ०६ | २७ | 23 | भ. २०।५७ से, पंचक प्रा. ९।२० से |
| ०३ | बुध | ०७ | २९ | शत | १८ | ११ | सौभा | ११ | ०८ | ५८ | ०८ | कुम्भ | ०३ | ०७ | २४ | 24 | भ. ७।३१ तक, श्री संकष्ट चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय २१।४१, जयापार्वती व्रत पूर्ण |
| ०४ | बुध | २८ | ३७ | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०३ | ०० | ०० | 00 | चतुर्थी का क्षय |
| ०५ | गुरू | २६ | ०० | पूभा | १६ | १३ | शौभ अति | ०७ २८ | ४८ ३३ | ५९ | ०८ | मी.१०।४४ | ०३ | ०८ | २१ | 25 | - |
| ०६ | शुक्र | २३ | ३० | उभा | १४ | २७ | सुक | २५ | ३० | ५९ | ०८ | मीन | ०३ | ०९ | १९ | 26 | भ. २३।३२ से, मंगल रोहिणी में २८।३७, अमृतसिद्धि १४।३० से |
| ०७ | शनि | २१ | १८ | रेव | १३ | ०० | धृति | २२ | ४० | ०५ ५९ | ०७ | मे.१३।०० | ०३ | १० | १६ | 27 | भ. १०।२६ तक, पंचक स. १३।०० पर, रवियोग १३।०० तक |
| ०८ | रवि | १९ | २६ | अश्वि | ११ | ४७ | शूल | २० | ०८ | ०६ ०० | ०७ | मेष | ०३ | ११ | १३ | 28 | कालाष्टी, महापात दोष २०।१३ से २४।४९ तक, |
| ०९ | सोम | १७ | ५३ | भर | १० | ५४ | गण्ड | १७ | ५३ | ०६ ०० | ०६ | वृ.१६।४५ | ०३ | १२ | ११ | 29 | भ. २९।२० से, श्री महाकालेश्वर सवारी |
| १० | मंगल | १६ | ४३ | कृति | १० | २२ | वृद्धि | १५ | ५४ | ०१ | ०६ | वृष | ०३ | १३ | ०८ | 30 | भ. १६।४५ तक, गुरू रोहि. ४ में २५।३०, सर्वार्थसिद्धि ६०१ से १०।२४ तक |
| ११ | बुध | १५ | ५३ | रोहि | १० | १२ | ध्रुव | १४ | १२ | ०१ | ०५ | मि.२२।१४ | ०३ | १४ | ०५ | 31 | कामदा एकादशी व्रत (गोदुग्ध), सर्वार्थसिद्धि दिन-रात |
| १२ | गुरू | १५ | २७ | मृग | १० | २२ | व्या | १२ | ४८ | ०१ | ०५ | मिथुन | ०३ | १५ | ०३ | 01 | प्रदोषव्रत, अगस्त मास प्रा. सर्वार्थसिद्धि ६०० से ११४९ तक |
| १३ | शुक्र | १५ | २४ | आर्द्रा | १० | ५६ | हर्ष | ११ | ४२ | ०२ | ०४ | क.२९।४० | ०३ | १६ | ०० | 02 | भ. १५।२६ से २७।३९ तक, शिवरात्रिव्रत, सूर्य आश्लेषा में २२।६ |
| १४ | शनि | १५ | ४९ | पुन | ११ | ५६ | वज्र | ११ | ०० | ०२ | ०३ | कर्क | ०३ | १६ | ५८ | 03 | वाहन मण्डूक वर्षा श्रेष्ठ सर्वार्थसिद्धि १०।५९ से ३०।०१ तक |
| १५ | रवि | १६ | ४१ | पुष्य | १३ | २४ | सिद्धि | १० | ३५ | ०६ ०३ | १९ ०३ | कर्क | ०३ | १७ | ५५ | 04 | हरियाली अमावस्या पुण्य, रविपुष्य योग ६।३ से १३।२६ तक |

दि.२९/०७/२०२४स्टे.टा. ०५/३०

| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ०३ | ०० | ०१ | ०४ | ०१ | ०३ | १० | ११ |
| १२ | २३ | ११ | ०७ | १९ | २७ | २४ | १५ |
| १० | ३३ | २३ | ४८ | ३९ | ०४ | ३२ | ३३ |
| ४५ | ३४ | २७ | १५ | ३२ | ५१ | ३१ | १३ |
| ५७ | ८२० | ४० | ३१ | १० | ७३ | ०२ | ०३ |
| २१ | ४५ | ५२ | ३२ | ५६ | ४३ | ५५ | ११ |
| पुष्य ज | भर च | रोहि अ | मघा वा | रोहि३ अ | श्ले नी | पूभा२ सी | उभा४ सौ |
| - | - | मा | मा | मा | मा | व | व |

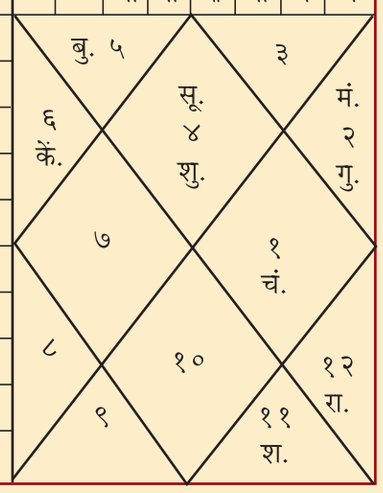

**श्रावण शुक्ल पक्ष**
05 अगस्त 2024 से 19 अगस्त 2024
(वर्षा ऋतु)

# सम्राट विक्रमादित्य सम्वत् 2081

पिंगल नाम सम्वत्सर

• कलि संवत 5125 • सृष्टि आरम्भ 1955885125 • राजा – मंगल • मंत्री – शनि

**भाद्रपद कृष्ण पक्ष**
20 अगस्त 2024 से 03 सितम्बर 2024
(वर्षा/शरद ऋतु)

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | 11 अगस्त सप्तमी गोस्वामी तुलसीदास जयंती | 18 अगस्त चतुर्दशी पेशवा बाजीराव जयंती | **रविवार** | | 25 अगस्त षष्ठी | 01 सितम्बर चतुर्दशी गुरू ग्रंथ साहिब प्रकाश दिवस |
| 05 अगस्त प्रतिपदा श्रावण सोमवार महाकाल सवारी | 12 अगस्त अष्टमी श्रावण सोमवार महाकाल सवारी | 19 अगस्त पूर्णिमा रक्षाबंधन पर्व संस्कृत दिवस श्रावण सोमवार महाकाल | **सोमवार** | | 26 अगस्त सप्तमी श्रीकृष्ण जन्माष्टमी भाद्रपद सोमवार महाकाल सवारी | 02 सितम्बर अमावस्या महाकाल शाही सवारी |
| 06 अगस्त द्वितीया | 13 अगस्त नवमी वीर दुर्गादास राठौर जयंती | | **मंगलवार** | 20 अगस्त प्रतिपदा | 27 अगस्त अष्टमी नवमी गोगा नवमी | 03 सितम्बर अमावस्या |
| 07 अगस्त तृतीया | 14 अगस्त दशमी | | **बुधवार** | 21 अगस्त द्वितीया | 28 अगस्त दशमी | |
| 08 अगस्त चतुर्थी | 15 अगस्त दशमी एकादशी स्वतंत्रता दिवस | | **गुरुवार** | 22 अगस्त तृतीया | 29 अगस्त एकादशी | |
| 09 अगस्त पंचमी नागपंचमी जनजातीय दिवस | 16 अगस्त द्वादशी पं. अटलबिहारी वाजपेयी पुण्यतिथि | | **शुक्रवार** | 23 अगस्त चतुर्थी | 30 अगस्त द्वादशी | |
| 10 अगस्त षष्ठी | 17 अगस्त त्रयोदशी | | **शनिवार** | 24 अगस्त पंचमी | 31 अगस्त त्रयोदशी | |

## श्री केदारनाथ ज्योतिर्लिंग

केदारनाथ उत्तराखण्ड  के रुद्रप्रयाग जिले में स्थित प्रसिद्ध मंदिर है। उत्तराखण्ड में हिमालय पर्वत की गोद में केदारनाथ मन्दिर बारह ज्योतिर्लिंग में सम्मिलित होने के साथ चार धाम और पंच केदार में से भी एक है। इस मन्दिर के बारे में कहा जाता है कि इसका निर्माण पाण्डवों के पौत्र महाराजा जन्मेजय ने कराया था। यहाँ स्थित स्वयम्भू शिवलिंग अति प्राचीन है। आदि शंकराचार्य ने इस मन्दिर का जीर्णोद्धार करवाया था। केदारेश्वर की उत्पत्ति के संबंध में सूत जी ने कहा है कि सतयुग में भगवान विष्णु का नर-नारायण नाम से जो युगल स्वरूप पृथ्वी पर अवतीर्ण हुआ था, वे भगवान नर-नारायण दोनों जन बद्रिकाश्रम तीर्थ में तपस्या करने गये। हिमालय के उस पावन क्षेत्र में उन दोनों ने वहाँ पार्थिव शिवलिंग बनाकर भगवान शिव की पूजा ग्रहण करने हेतु प्रार्थना की। भगवान शिव स्वभाव से ही भक्तों के अधीन होने के कारण प्रतिदिन पार्थिव लिंग में पूजित होने के कारण आया करते थे। पार्थिव शिव पूजन चलता रहा। एक दिन परमेश्वर शिव ने नर-नारायण से कहा कि मैं आराधना से संतुष्ट हूँ, वर माँगों। नर-नारायण ने लोगों के हित की कामना से कहा कि-प्रभु यदि आप प्रसन्न हैं तो अपने स्वरूप से पूजा ग्रहण करने के लिए यहीं स्थित हो जाइये। नर-नारायण के इस प्रकार अनुरोध करने पर भगवान महेश्वर हिमालय के उस केदार तीर्थ में स्वयं ज्योतिर्लिंग के रूप में स्थित हो गये। उसी दिन से जिसने भी केदारेश्वर ज्योतिर्लिंग का पूजन किया, उसके दुःख स्वप्न में भी दुर्लभ हो गये। प्रसिद्धि है कि केदारेश्वर की पूजा कर वहाँ का जल पी लेने के पश्चात् मनुष्य का पुनर्जन्म नहीं होता है।

### श्री विक्रम शुभ सम्वत् 2081

**05 अगस्त से 19 अगस्त 2024 तक**

**दक्षिणायन — वर्षा ऋतु**

| तिथि | वार | समाप्ति घं. | मि. | नक्षत्र | समाप्ति घं. | मि. | योग | समाप्ति घं. | मि. | सू.उ. घ.मि. | सू.अ. घ.मि. | चन्द्रराशि प्रवेश | सूर्य स्पष्ट स्टे.टा ५/३० | | | अगस्त | यहाँ पर दिया गया, सभी समय, भा.स्टे.स्टा.में है जो सम्पूर्ण भारत में समान रूप से ग्राहय रहेगा । |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ०१ | सोम | १८ | ०३ | श्ले | १५ | १८ | व्य | १० | ३६ | ०६ ०३ | १९ ०२ | सिं.१५।२० | ०३ | १८ | ५३ | 05 | चन्द्रदर्शन, श्री महाकालेश्वर सवारी, बुध वक्री १०।२९ |
| ०२ | मंगल | १९ | ५२ | मघा | १७ | ४१ | वरी | १० | ५७ | ०४ | ०२ | सिंह | ०३ | १९ | ५० | 06 | श्री शिवमनसा (सोलह सोमवार) व्रत, शृंगार द्वितीया |
| ०३ | बुध | २२ | ०५ | पूफा | २० | २८ | परि | ११ | ३८ | ०४ | ०२ | कं.२७।१५ | ०३ | २० | ४८ | 07 | मधुस्त्रवा तृतीया, संधारा तीज, हरियाली तीज, जीवंतिका पूजन |
| ०४ | गुरू | २४ | ३५ | उफा | २३ | ३२ | शिव | १२ | ३६ | ०४ | ०१ | कन्या | ०३ | २१ | ४५ | 08 | भ. ११।२२ से २४।३७ तक, श्री विनायक चतुर्थीव्रत, |
| ०५ | शुक्र | २७ | १३ | हस्त | २६ | ४३ | सिद्ध | १३ | ४३ | ०५ | १९ ०२ | कन्या | ०३ | २२ | ४३ | 09 | श्री नागपंचमी व्रत, रवियोग २६।४३ से, जाग्रतगौरी नागचन्द्रश्वर दर्शन (अवंतिका) |
| ०६ | शनि | २९ | ४३ | चित्रा | २९ | ४६ | साध्य | १४ | ५० | ०५ | १९ ०२ | तु.१०।१६ | ०३ | २३ | ४० | 10 | श्री कल्कि जयंती, रवियोग २९।४८ तक, वर्ण षष्ठी |
| ०७ | रवि | अ. | रा. | स्वा | अ. | रा. | शुभ | १५ | ४६ | ०६ | ५८ | तुला | ०३ | २४ | ३८ | 11 | गो. तुलसीदास जयंती, बुधास्त पश्चि. में १९।४४, शुक्र पू.फा. में ११।८ |
| ०७ | सोम | ०७ | ५३ | स्वा | ०८ | ३२ | शुक्ल | १६ | २३ | ०६ | ५८ | वृ.२८।१५ | ०३ | २५ | ३५ | 12 | भ. ७।५५ से २२।४४ तक, श्री महाकालेश्वर सवारी |
| ०८ | मंगल | ०९ | ३० | विशा | १० | ४२ | ब्रह्म | १६ | ३० | ०६ | ५७ | वृश्चिक | ०३ | २६ | ३३ | 13 | श्री दुर्गाष्टमी, रवियोग १०।४५ से |
| ०९ | बुध | १० | २१ | अनु | १२ | ११ | ऐन्द्र | १६ | ०२ | ०७ | ५६ | वृश्चिक | ०३ | २७ | ३१ | 14 | सर्वार्थसिद्धि ०६।०७ से १२।१३ तक     रवियोग १२।५२ तक, नकुल नवमी |
| १० | गुरू | १० | २४ | ज्ये | १२ | ५० | वैधृ | १४ | ५६ | ०७ | ५५ | ध.१२।५२ | ०३ | २८ | २८ | 15 | भ. २२।०३ से, भा. स्वतंत्रता दिवस, मंगल मृगशीर्ष में २८।३४, |
| ११ | शुक्र | ०९ | ३७ | मूल | १२ | ४३ | विष्कु | १३ | ०८ | ०७ | ५५ | धनु | ०३ | २९ | २६ | 16 | भ. ९।३९ तक, पवित्रा एकादशीव्रत (सिंघाड़ा) |
| १२ | शनि | ०८ | ०४ | पूषा | ११ | ४८ | प्रीति | १० | ४५ | ०८ | ५४ | म.१७।२९ | ०४ | ०० | २३ | 17 | शनिप्रदोष व्रत, पवित्रा द्वादशी, विष्णु पवित्रारोपण |
| १३ | शनि | २९ | ४९ | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | 00 | त्रयोदशी का क्षय   वाहन हस्ति वर्षा श्रेष्ठ  वक्री शनि पूभा १ में २९।०४ |
| १४ | रवि | २७ | ०२ | उषा | १० | १५ | आया सौभा | ०७ २८ | ५१ २७ | ०८ | ५३ | मकर | ०४ | ०१ | २१ | 18 | भ. २७।०४ से, शिवरात्रि व्रत, शिवपवित्रारोपण, सर्वार्थसिद्धि ६८ से |
| १५ | सोम | २३ | ५३ | श्रवण धनि | ०८ २९ | ०९ ४३ | शोभ | २४ | ४५ | ०६ ०८ | १८ ५२ | कुं.१९।०० | ०४ | ०२ | १९ | 19 | भ. १३।३० तक, श्री सत्यनारायण पूर्णिमा व्रत, यजुर्वेदीय उपाकर्म, रक्षाबंधन |

दि.१२/०८/२०२४स्टे.टा. ०५/३०

| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ०३ | ०६ | ०१ | ०४ | ०१ | ०४ | १० | ११ |
| २५ | १८ | २० | ०७ | २२ | १४ | २३ | १४ |
| ३६ | २७ | ४५ | ५२ | ०३ | १६ | ४६ | ४८ |
| २४ | ५८ | ०९ | ३२ | ३८ | २६ | ४४ | ३६ |
| ५७ | ७३० | ३९ | ३७ | ०९ | ७३ | ०३ | ०३ |
| ५३ | २० | १६ | ०३ | ३४ | ४० | ४२ | ११ |
| श्ले | स्वा | रोह | मघा | रोह४ | पूफा | पूभा२ | उभा४ |
| - | - | मा | व | मा | मा | व | व |






### श्री विक्रम शुभ सम्वत्  2081

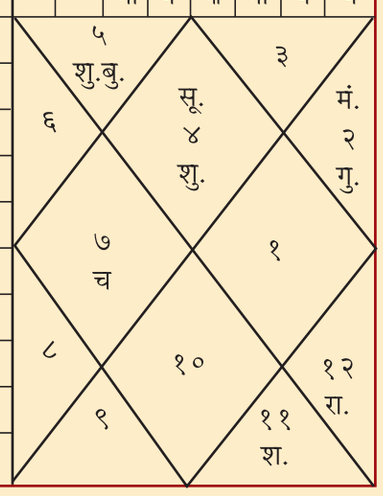

**20 अगस्त से 03 सितम्बर 2024 तक**

**दक्षिणायन — वर्षा/शरद ऋतु**

| तिथि | वार | समाप्ति घं. | मि. | नक्षत्र | समाप्ति घं. | मि. | योग | समाप्ति घं. | मि. | सू.उ. घ.मि. | सू.अ. घ.मि. | चन्द्रराशि प्रवेश | सूर्य स्पष्ट स्टे.टा ५/३० | | | अगस्त सितम्बर | यहाँ पर दिया गया, सभी समय, भा.स्टे.स्टा.में है जो सम्पूर्ण भारत में समान रूप से ग्राहय रहेगा । |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ०१ | मंगल | २० | ३० | शत | २७ | ०९ | अति | २० | ५३ | ०६ ०९ | १८ ५१ | कुम्भ | ०४ | ०३ | १७ | 20 | भाद्रपद में दधिभक्षण त्याग, गुरू मृगशीर्ष १ में १६।१५ |
| ०२ | बुध | १७ | ०५ | पूभा | २४ | ३४ | शुक | १७ | ०० | ०९ | ५४ | मी.१९।१० | ०४ | ०४ | १४ | 21 | भ. २७।२८ से, अशून्यशयन व्रत |
| ०३ | गुरू | १३ | ४६ | उभा | २२ | ०६ | धृति | १३ | १० | १० | ५० | मीन | ०४ | ०५ | १२ | 22 | भ. १३।४८ तक, कज्जली तीज, सतुआ तीज, श्री संकष्ट चतुर्थीव्रत, चन्द्रोदय २०।५२ |
| ०४ | शुक्र | १० | ३७ | रेव | १९ | ५३ | शूल गण्ड | ०९ ३० | ३१ ०७ | १० | ४९ | मे.१९।५३ | ०४ | ६ | १० | 23 | पंचक स.१९।५३ |
| ०५ | शनि | ०७ | ५१ | अश्वि | १८ | ०५ | वृद्धि | २७ | ०४ | १० | ४८ | मेष | ०४ | ०७ | ०८ | 24 | भ. २९।३० से, चन्द्रषष्ठी, चन्द्रोदय २२।१०, हलषष्ठी, शुक्र कन्या में २५।१६ |
| ०६ | शनि | २९ | २८ | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०४ | ०० | ०० | 00 | षष्ठी का क्षय   अमृतसिद्धि ६१० से १९।५३ तक |
| ०७ | रवि | २७ | ३९ | भर | १६ | ४५ | ध्रुव | २४ | २६ | ११ | ४७ | वृ.२२।३० | ०४ | ०८ | ०६ | 25 | भ. १६।३५ तक, रवियोग १६।४५ तक   रवियोग १८।६ से |
| ०८ | सोम | २६ | १८ | कृति | १५ | ५५ | व्या | २२ | १४ | ११ | ४६ | वृष | ०४ | ०९ | ०३ | 26 | श्री कृष्ण जन्माष्टमी (रोहिणी युत अष्टमी), श्री महाकालेश्वर सवारी, दूर्वा अष्टमी |
| ०९ | मंगल | २५ | ३१ | रोहि | १५ | ३९ | हर्ष | २० | २९ | ११ | ४५ | मि.२७।३९ | ०४ | १० | ०१ | 27 | नन्दोत्सव, गोगा नवमी |
| १० | बुध | २५ | १७ | मृग | १५ | ५२ | वज्र | १९ | ०९ | १२ | ४४ | मिथुन | ०४ | १० | ५९ | 28 | भ. १३।२६ से २५।१९ तक, बुध मार्गी २६।४५, सर्वार्थसिद्धि ६।१२ से १५।५२ तक |
| ११ | गुरू | २५ | ३६ | आर्द्रा | १६ | ४० | सिद्धि | १८ | १५ | १२ | ४३ | मिथुन | ०४ | ११ | ५७ | 29 | अजाएकादशीव्रत (खारक), सर्वार्थसिद्धि १६।४१ से |
| १२ | शुक्र | २६ | २५ | पुन | १७ | ५६ | व्य | १७ | ४४ | १२ | ४२ | क.११।३३ | ०४ | १२ | ५५ | 30 | गोवत्सद्वादशी, सूर्य पू.फा. में १५।४६ वाहन चातक वर्षा श्रेष्ठ सर्वार्थसिद्धि १७।५६ तक |
| १३ | शनि | २७ | ३९ | पुष्य | १९ | ३९ | वरी | १७ | ३६ | १२ | ४१ | कर्क | ०४ | १३ | ५३ | 31 | भ. २७।४१ से, शनिप्रदोष व्रत |
| १४ | रवि | २९ | २१ | श्ले | २१ | ४९ | परि | १७ | ४८ | १३ | ४१ | सिं.२१।४९ | ०४ | १४ | ५१ | 01 | भ. १६।३२ तक, मास शिवरात्रि व्रत, सितम्बर मास प्रा., शुक्र हस्त में २९।१२ |
| ३० | सोम | अ. | रा. | मघा | २४ | २० | शिव | १८ | १७ | १३ | ४० | सिंह | ०४ | १५ | ४९ | 02 | कुशग्रहणी पितृ अमावस्या पुण्य, पिठोरी, श्री महाकालेश्वर सवारी |
| ३० | मंगल | ०७ | २५ | पूफा | २७ | ०९ | सिद्ध | १९ | ०२ | ०६ १३ | १८ ३९ | सिंह | ०४ | १६ | ४७ | 03 | देवकार्य अमावस्या |

दि.०२/०९/२०२४स्टे.टा. ०५/३०

| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ०४ | ०४ | ०२ | ०३ | ०१ | ०५ | १० | ११ |
| १५ | ०३ | ०४ | २८ | २४ | १० | २२ | १३ |
| ४९ | ५२ | ०५ | २२ | ५६ | ०० | १८ | ४१ |
| २३ | ५९ | ०४ | ३९ | १४ | ५८ | ०३ | ५७ |
| ५८ | ७२१ | ३६ | ३८ | ०६ | ७३ | ०४ | ०३ |
| ०६ | ३५ | ३९ | १४ | ४६ | ३१ | ३८ | ११ |
| पूफा ज | मघा अ | मृग द | श्ले अ | मृग द | हस्त सौ | पूभा१ नी | उभा४ सौ |
| - | - | मा | मा | मा | मा | व | व |

# विक्रम पंचांग



श्री भीमशंकर मंदिर

**भाद्रपद शुक्ल पक्ष**
04 सितम्बर 2024 से 18 सितम्बर 2024
(शरद ऋतु)

## सम्राट विक्रमादित्य सम्वत् 2081

पिंगल नाम सम्वत्सर
• कलि संवत 5125 • सृष्टि आरम्भ 1955885125 • राजा – मंगल • मंत्री – शनि

**आश्विन कृष्ण पक्ष**
19 सितम्बर 2024 से 02 अक्टूबर 2024
(शरद ऋतु)

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | 08 सितम्बर पंचमी (विश्व साक्षरता दिवस, ऋषि पंचमी) | 15 सितम्बर द्वादशी (वामन जयंती) | रविवार | | 22 सितम्बर पंचमी | 29 सितम्बर द्वादशी |
| | 09 सितम्बर षष्ठी | 16 सितम्बर त्रयोदशी (ईद मिलादुन्नबी) | सोमवार | | 23 सितम्बर षष्ठी | 30 सितम्बर त्रयोदशी |
| | 10 सितम्बर सप्तमी (नवाखाई) | 17 सितम्बर चतुर्दशी (अनंत चतुर्दशी, विश्वकर्मा जयंती) | मंगलवार | | 24 सितम्बर सप्तमी | 01 अक्टूबर चतुर्दशी (प्राणनाथ जयंती) |
| 04 सितम्बर प्रतिपदा | 11 सितम्बर अष्टमी | 18 सितम्बर पूर्णिमा प्रतिपदा | बुधवार | | 25 सितम्बर अष्टमी (पं. दिनदयाल उपाध्याय जयंती) | 02 अक्टूबर अमावस्या (गांधी जयंती, लाल बहादुर शास्त्री जयंती, सर्वपितृ मोक्ष अमावस्या) |
| 05 सितम्बर द्वितीया (डॉ. राधाकृष्णन जयंती, शिक्षक दिवस) | 12 सितम्बर नवमी | | गुरुवार | 19 सितम्बर द्वितीया | 26 सितम्बर नवमी | |
| 06 सितम्बर तृतीया | 13 सितम्बर दशमी (तेजा दशमी) | | शुक्रवार | 20 सितम्बर तृतीया | 27 सितम्बर दशमी (विश्व पर्यावरण दिवस, गुरुनानक पुण्यतिथि) | |
| 07 सितम्बर चतुर्थी (गणेश चतुर्थी) | 14 सितम्बर एकादशी | | शनिवार | 21 सितम्बर चतुर्थी | 28 सितम्बर एकादशी (भगतसिंह जयंती) | |

## श्री भीमशंकर ज्योतिर्लिंग

यह ज्योतिर्लिंग महाराष्ट्र के सह्याद्री पर्वत पर भीमा नदी के तट पर स्थित है। भीमशंकर ज्योतिर्लिंग का वर्णन शिवपुराण में मिलता है। शिवपुराण में कहा गया है कि पुराने समय में कुंभकर्ण का पुत्र भीम नाम का एक राक्षस था। उसका जन्म ठीक उसके पिता की मृत्यु के बाद हुआ था। अपने पिता की मृत्यु श्री भगवान राम के हाथों होने की घटना की उसे जानकारी नहीं थी। बाद में अपनी माता से इस घटना की जानकारी हुई तो वह श्री भगवान राम का वध करने के लिए आतुर हो गये। अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिए उसने अनेक वर्षों तक कठोर तपस्या की जिससे प्रसन्न होकर उसे ब्रह्मा जी ने विजयी होने का वरदान दिया। वरदान पाने के बाद राक्षस निरंकुश हो गया। उससे मनुष्यों के साथ-साथ देवी-देवता भी भयभीत रहने लगे। धीरे-धीरे सभी जगह उसके आंतक की चर्चा होने लगी। युद्ध में उसने देवताओं को भी परास्त करना प्रारंभ कर दिया। उसने सभी तरह के पूजा पाठ बंद करवा दिए। अत्यंत परेशान होने के बाद सभी देव भगवान शिव की शरण में गए। भगवान शिव ने सभी को आश्वासन दिलाया कि वे इस का उपाय निकालेंगे। भगवान शिव ने राक्षस तानाशाह भीम से युद्ध करने की ठानी। लड़ाई में भगवान शिव ने दुष्ट राक्षस को राख कर दिया और इस तरह अत्याचार की कहानी का अंत हुआ। भगवान शिव से सभी देवों ने आग्रह किया कि वे इसी स्थान पर शिवलिंग रूप में विराजित हो। उनकी इस प्रार्थना को भगवान शिव ने स्वीकार किया और वे भीमाशंकर ज्योतिर्लिंग के रूप में आज भी यहाँ विराजित हैं।

### श्री विक्रम शुभ सम्वत् 2081

**04 सितम्बर से 18 सितम्बर 2024 तक**

**दक्षिणायन — शरद ऋतु**

| तिथि | वार | समाप्ति घं. | समाप्ति मि. | नक्षत्र | समाप्ति घं. | समाप्ति मि. | योग | समाप्ति घं. | समाप्ति मि. | सू.उ. घ.मि. | सू.अ. घ.मि. | चन्द्रराशि प्रवेश | सूर्य स्पष्ट स्टे.टा ५/३० | | | सितम्बर | यहाँ पर दिया गया, सभी समय, भा.स्टे.स्टा.में है जो सम्पूर्ण भारत में समान रूप से ग्राह्य रहेगा । |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ०१ | बुध | ०९ | ४५ | उफा | ३० | ११ | साध्य | २० | ०० | ०६ १४ | १८ ३८ | कं.९।५५ | ०४ | १७ | ४६ | 04 | चन्द्रदर्शन, नवीन चन्द्र दर्शन |
| ०२ | गुरू | १२ | १९ | हस्त | अ. | रा. | शुभ | २१ | ०६ | १४ | ३७ | कन्या | ०४ | १८ | ४४ | 05 | श्री रामदेवजी बीज, साम उपाकर्म, श्री विश्वकर्मा जयंती |
| ०३ | शुक्र | १५ | ०० | हस्त | ०९ | २२ | शुक्ल | २२ | १२ | १४ | ३६ | तु.२३।०० | ०४ | १९ | ४२ | 06 | भ.२८।१४ से, हरितालिका तीज व्रत, श्री वराहजयंती |
| ०४ | शनि | १७ | ३५ | चित्रा | १२ | ३१ | ब्रह्म | २३ | १३ | १५ | ३५ | तुला | ०४ | २० | ४० | 07 | भ. १७।३७ तक, श्रीगणेश चतुर्थीव्रत, पार्थिव गणेश स्थापना, कलंक चतुर्थी |
| ०५ | रवि | २० | ०० | स्वा | १५ | २८ | ऐन्द्र | २४ | ०३ | १५ | ३४ | तुला | ०४ | २१ | ३८ | 08 | ऋषि पंचमीव्रत, रवियोग १५।३१ से, सप्तऋषी माता अरूंधती पूजा |
| ०६ | सोम | २१ | ५३ | विशा | १८ | ०२ | वैधृ | २४ | ३० | १५ | ३३ | वृ.११।२९ | ०४ | २२ | ३७ | 09 | सूर्यषष्ठी, चम्पा बदलेद ६, कृषक दिवस, सर्वार्थसिद्धि १८।५ से ३०।१५ तक |
| ०७ | मंगल | २३ | ११ | अनु | २० | ०२ | विष्कु | २४ | २८ | १६ | ३२ | वृश्चिक | ०४ | २३ | ३५ | 10 | भ. २३।१३ से, सन्तान सप्तमी, मुक्त भरण सप्तमी, ललीत सप्तमी |
| ०८ | बुध | २३ | ४४ | ज्ये | २१ | २० | प्रीति | २३ | ५३ | १६ | ३१ | ध.२१।२२ | ०४ | २४ | ३३ | 11 | भ. ११।३० तक, श्रीदुर्गाष्टमी, श्री राधाष्टामी, श्री महालक्ष्मी व्रतारम्भ |
| ०९ | गुरू | २३ | ३१ | मूल | २१ | ५० | आयु | २२ | ४० | १६ | ३० | धनु | ०४ | २५ | ३२ | 12 | श्री चन्द्रनवमी, शुक्र चित्रा में २६।५१ |
| १० | शुक्र | २२ | २८ | पूषा | २१ | ३३ | सौभा | २० | ४५ | १७ | २९ | मं.२७/२४ | ०४ | २६ | ३० | 13 | तेजादशमी, सूर्य उत्तराफाल्गुनी में ९।३५ वाहन जम्बुक वर्षा मध्यम |
| ११ | शनि | २० | १९ | उषा | २० | ३१ | शोभ | १८ | १४ | १७ | २८ | मकर | ०४ | २७ | २८ | 14 | भ.०९।३६ से २०।४१ तक, जलझुलनी एकादशीव्रत (बालनककड़ी) |
| १२ | रवि | १८ | ११ | श्रव | १८ | ४८ | अति | १५ | १० | १७ | २७ | कुं.२९।४५ | ०४ | २८ | २७ | 15 | वामन जयंती, श्रवण द्वादशी, प्रदोषव्रत, पंचक प्रा. २९।४५ से बुधास्त पूर्व में |
| १३ | सोम | १५ | ०८ | धनि | १६ | ३२ | सुक | ११ | ३९ | १८ | २६ | कुम्भ | ०४ | २९ | २५ | 16 | गोत्रिरात्रव्रत प्रा., सूर्य कन्या में १९।४२, रवियोग १६।३५ से |
| १४ | मंगल | १० | ४३ | शत | १३ | ३१ | धृति | ०६ १८ | १६ २२ | १८ | २५ | मी.२९।४३ | ५० | ०० | २४ | 17 | भ. ११।४५ से २१।५५ तक, श्री अनंतचतुर्दशीव्रत, पार्थिव गणेश विसर्जन |
| १५ | बुध | ०८ | ०२ | पूभा | ११ | ०० | शूल | २३ | २८ | ०६ १८ | १८ २८ | मीन | ५० | ०१ | २२ | 18 | पूर्णिमा व्रत, भागवत सप्ताह पूर्ण, प्रतिपदा का श्राद्ध, शुक्र तुला में १३।५६ |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | संजा व्रत प्रारंभ |

दि.१६/०९/२०२४स्टे.टा. ०५/३०

| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ०४ | ०९ | ०२ | ०४ | ०१ | ०५ | १० | ११ |
| २९ | २९ | १२ | १६ | २६ | २७ | २१ | १२ |
| २५ | ५१ | २३ | ४५ | १५ | ०७ | १३ | ५७ |
| २५ | ०५ | ३३ | १६ | ०४ | ५७ | ४९ | २६ |
| ५८ | ८९३ | ३४ | १९८ | ०४ | ७३ | ०४ | ०३ |
| ३० | ०५ | २७ | ०५ | २५ | १५ | ३३ | ११ |
| उफा नी | धनि अ | आर्द्रा सौ | पूफा ज | मृग१ द | चित्रा द | पूभा१ सौ | उभा३ सौ |
| - | - | मा | मा | मा | मा | व | व |

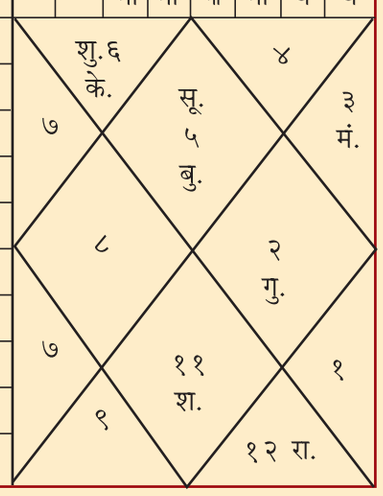




### श्री विक्रम शुभ सम्वत् 2081

**19 सितम्बर से 02 अक्टूबर 2024 तक**

**दक्षिणायन — हेमन्त ऋतु**

| तिथि | वार | समाप्ति घं. | समाप्ति मि. | नक्षत्र | समाप्ति घं. | समाप्ति मि. | योग | समाप्ति घं. | समाप्ति मि. | सू.उ. घ.मि. | सू.अ. घ.मि. | चन्द्रराशि प्रवेश | सूर्य स्पष्ट स्टे.टा ५/३० | | | सितम्बर अक्टूबर | यहाँ पर दिया गया, सभी समय, भा.स्टे.स्टा.में है जो सम्पूर्ण भारत में समान रूप से ग्राह्य रहेगा । |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ०१ | बुध | २८ | १८ | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | 00 | प्रतिपदा का क्षय, अश्विन मु दुग्ध भक्षण त्याग |
| ०२ | गुरू | २४ | ३७ | उभा रव | ०८ २९ | २१ १३ | वृद्धि | १९ | १६ | ०६ १८ | १८ २३ | मे.२९।१५ | ०५ | ०२ | २१ | 19 | पंचक स. २९।१५ पर, द्वितीया का श्राद्ध, सर्वार्थसिद्धि ८।२४ से |
| ०३ | शुक्र | २१ | १३ | अश्वि | २६ | ४० | ध्रुव | १५ | १५ | १९ | २२ | मेष | ०५ | ०३ | २० | 20 | भ. १०।५७ से २१।१५ तक, तृतीया का श्राद्ध, सर्वार्थसिद्धि २६।४२ तक |
| ०४ | शनि | १८ | १२ | भर | २४ | ३५ | व्या | ११ | ३४ | १९ | २१ | वृ.३०/०७ | ०५ | ०४ | १८ | 21 | श्री संकष्टाचतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय २०।४७, चतुर्थी का श्राद्ध, बुध उफा में १५।७ |
| ०५ | रवि | १५ | ४२ | कृति | २३ | ०१ | धृति शूल | ०८ २९ | १४ २७ | १९ | २० | वृष | ०५ | ०५ | १७ | 22 | पंचमी का श्राद्ध, कुमार पंचमी, सायन तुला में रवि १८।०९, दक्षिण गोलारंभ, |
| ०६ | सोम | १३ | ४९ | रोहि | २२ | ०५ | सिद्धि | २७ | ०८ | १९ | १९ | वृष | ०५ | ०६ | १५ | 23 | षष्ठी का श्राद्ध स्टे.टा. १३।५१ क बाद सप्तमी का श्राद्ध |
| ०७ | मंगल | १२ | ३७ | मृग | २१ | ५२ | व्य | २५ | २४ | २० | १८ | मि.९/५५ | ०५ | ०७ | १४ | 24 | कालाष्टमी, अष्टमी का श्राद्ध, श्री महालक्ष्मीव्रत पूर्ण |
| ०८ | बुध | १२ | ०९ | आर्द्रा | २२ | २१ | वरी | २४ | १६ | २० | १७ | मिथुन | ०५ | ०८ | १३ | 25 | नवमी एवं सौभाग्यवती का श्राद्ध १२।११ बाद |
| ०९ | गुरू | १२ | २४ | पुन | २३ | ३१ | परि | २३ | ३९ | २० | १६ | क.१७/१२ | ०५ | ०९ | १२ | 26 | दशमी का श्राद्ध, १२।२६ बाद सूर्य हस्त में २५।१० वाहन मूषक वर्षा मध्यम |
| १० | शुक्र | १३ | १८ | पुष्य | २५ | १८ | शिव | २३ | ३० | २१ | १५ | कर्क | ०५ | १० | ११ | 27 | भ. १३।२० तक, एकादशी का श्राद्ध |
| ११ | शनि | १४ | ४८ | श्ले | २७ | ३६ | सिद्ध | २३ | ४८ | २१ | १४ | सिं.२७/३८ | ०५ | ११ | १० | 28 | इंदिरा एकादशीव्रत कलांकर, एकादशी का एकोद्दिष्ट, श्रद्ध |
| १२ | रवि | १६ | ४५ | मघा | ३० | १६ | साध्य | २४ | २५ | २१ | १३ | सिंह | ०५ | १२ | ०८ | 29 | द्वादशी एवं सन्यासियों का श्राद्ध, मघा श्राद्ध |
| १३ | सोम | १९ | ०४ | पूफा | अ. | रा. | शुभ | २५ | १६ | २२ | १२ | सिंह | ०५ | १३ | ०७ | 30 | भ. १९।०६से, सोमप्रदोष व्रत, शिवरात्रि व्रत, त्रयोदशी का श्राद्ध |
| १४ | मंगल | २१ | ३७ | पूफा | ०९ | १३ | शुक्ल | २६ | १४ | २२ | ११ | कं.१६/०० | ०५ | १४ | ०६ | 01 | भ.८।२३ तक, केवल अग्नि, जल व दुर्घटना से मृतकों का श्राद्ध, अक्टूबर मास प्रा. |
| ३० | बुध | २४ | १६ | उफा | १२ | २१ | ब्रह्म | २७ | १९ | ०६ २२ | १८ १० | कन्या | ०५ | १५ | ०५ | 02 | सर्वपितृ अमावस्या, अमा का श्राद्ध योग, पितृपक्ष पूर्ण |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | |

दि.३०/०९/२०२४स्टे.टा. ०५/३०

| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ०५ | ०४ | ०२ | ०५ | ०१ | ०६ | १० | ११ |
| १३ | १२ | २० | १२ | २६ | १४ | २० | १२ |
| ०७ | ५५ | ०७ | २५ | ५९ | ११ | १३ | १२ |
| २५ | ५० | २७ | १६ | ३२ | २८ | २५ | ५१ |
| ५९ | ७१२ | ३१ | १०६ | ०१ | ७३ | ०४ | ०३ |
| ०० | ४७ | ४० | ५२ | ४६ | ०४ | ०५ | ११ |
| हस्त सौ | मघा अ | पुन नी | हस्त सौ | मृग२ द | स्वा वा | पूभा१ नी | उभा३ सौ |
| - | - | मा | मा | मा | मा | मा | व |

**आश्विन शुक्ल पक्ष**
03 अक्टूबर 2024 से 17 अक्टूबर 2024
(शरद ऋतु)

# सम्राट विक्रमादित्य सम्वत् 2081

पिंगल नाम सम्वत्सर

• कलि संवत 5125 • सृष्टि आरम्भ 1955885125 • राजा – मंगल • मंत्री – शनि

**कार्तिक कृष्ण पक्ष**
18 अक्टूबर 2024 से 01 नवम्बर 2024
(शरद/हेमंत ऋतु)

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| रविवार | | 06 अक्टूबर चतुर्थी | 13 अक्टूबर एकादशी | | 20 अक्टूबर तृतीया करवा चतुर्थी व्रत | 27 सितम्बर दशमी |
| सोमवार | | 07 अक्टूबर पंचमी | 14 अक्टूबर द्वादशी | | 21 अक्टूबर चतुर्थी | 28 सितम्बर एकादशी |
| मंगलवार | | 08 अक्टूबर पंचमी वायुसेना दिवस | 15 अक्टूबर त्रयोदशी डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जयंती | | 22 अक्टूबर पंचमी षष्ठी | 29 अक्टूबर द्वादशी धन्वन्तरी जयंती धनतेरस |
| बुधवार | | 09 अक्टूबर षष्ठी | 16 अक्टूबर चतुर्दशी विश्व खाद्य दिवस | | 23 अक्टूबर सप्तमी डॉ. सैयदना साहब जयंती | 30 अक्टूबर त्रयोदशी |
| गुरुवार | 03 अक्टूबर प्रतिपदा नवरात्र आरंभ अग्रसेन जयंती | 10 अक्टूबर सप्तमी राष्ट्रीय डाक दिवस | 17 अक्टूबर पूर्णिमा महर्षि वाल्मिकी जयंती महाराजा अजमोढ देव जयंती टेकचंद महाराजा समाधि उत्सव | | 24 अक्टूबर अष्टमी अहोई अष्मी व्रत | 31 अक्टूबर चतुर्दशी दीपावली सरदार वल्लभ भाई पटेल जयंती स्वामी दयानंद निर्वाणोत्सव |
| शुक्रवार | 04 अक्टूबर द्वितीया | 11 अक्टूबर अष्टमी नवमी दुर्गा महाष्मी नवमी व्रत | | 18 अक्टूबर प्रतिपदा | 25 अक्टूबर नवमी गुरु हरराय पुण्यतिथि | 01 नवम्बर अमावस्या |
| शनिवार | 05 अक्टूबर तृतीया रानी दूर्गावती जयंती | 12 अक्टूबर दशमी विजयादशमी | | 19 अक्टूबर द्वितीया गुरु रामदास जयंती | 26 अक्टूबर दशमी गणेश शंकर विद्यार्थी जयंती | |

## श्री काशी विश्वनाथ ज्योतिर्लिंग

सप्तपुरियों में सर्वश्रेष्ठ पुरी काशी को यह मान्यता प्राप्त है कि यह काशी भगवान शिव के त्रिशूल पर बसी हुई है। समस्त भारतवर्ष में काशी अपनी ज्ञान परंपरा और शिव की नगरी के रूप में हजारों सालों से परम आदर और श्रद्धा से सम्मानित रही है और आज भी है। काशी को संसार के सबसे पुरानी नगरों में माना जाता है। भारत की यह जगत्प्रसिद्ध प्राचीन नगरी गंगा के वाम (उत्तर) तट पर उत्तरप्रदेश के दक्षिण-पूर्वी कोने में वरुणा और असी नदियों के गंगा संगमों के बीच बसी हुई है। हरिवंशपुराण के अनुसार काशी को बसाने वाले भरतवंशी राजा 'काश' थे। कुछ विद्वानों के मत में काशी वैदिक काल से भी पूर्व की नगरी है। शिव की उपासना का प्राचीनतम केंद्र होने के कारण ही इस धारणा का जन्म हुआ जान पड़ता है; क्योंकि सामान्य रूप से शिवोपासना को पूर्व वैदिककालीन माना जाता है। काशी का इतना माहात्म्य है कि सबसे बड़े पुराण स्कन्दमहापुराण में काशीखण्ड के नाम से एक विस्तृत पृथक विभाग ही है। इस पुरी के बारह प्रसिद्ध नाम- काशी, वाराणसी, अविमुक्त क्षेत्र, आनन्दकानन, महाश्मशान, रुद्रावास, काशिका, तपस्थली, मुक्तिभूमि, शिवपुरी, त्रिपुरारिराज नगरी और विश्वनाथ नगरी हैं। काशी विश्वनाथ ज्योतिर्लिंग के विषय में शिवपुराण में जो वर्णन आता है, उसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि यह सृष्टि का सबसे पहला स्थापित ज्योतिर्लिंग है। स्वयं शिव ने अपने तेज से काशी नगरी का निर्माण किया और उसमें तेजस्वरूप अविमुक्तेश्वर नाम के शिवलिंग की स्थापना की। इसी प्रकार काशी के लिए यह कहा जाता है कि जब सारा जगत प्रलय में नष्ट हो जाता है, उस समय भगवान शिव काशी को अपने त्रिशूल पर धारण कर लेते हैं और जब ब्रह्मा द्वारा नई सृष्टि का निर्माण किया जाता है, तब भगवान शिव इसे त्रिशूल से उतारकर पुनः स्थापित कर देते हैं। इसी प्रकार काशी में अविमुक्तेश्वर सदा विराजमान रहते हैं। जिनके पूजन से जीवों को सायुज्य नाम की सर्वोत्तम मुक्ति सुलभ होती है। स्कन्दपुराण काशी खण्ड के अनुसार भी अविमुक्तेश्वर काशी के शिवलिंग की प्राचीनता प्रामाणित होती है। कहा गया है कि सूर्यवंश के प्राचीन काल में जो राजा दिवोदास थे, वे इस लिंग का पूजन करते थे। काशी खण्ड के अध्याय में यह सूचना मिलती है कि प्राचीन काल में एक बार भयंकर अकाल पड़ा था, उसी समय दिवोदास (रिपुंजय) का अभिषेक हुआ। इस भीषण अकाल के कारण यज्ञ यजन आदि कार्य प्रायः बन्द हो गये थे। राजा रिपुंजय की प्रार्थना पर ब्रह्मा ने भगवान शिव से प्रार्थना की थी कि वे ऐसे समय भूतल पर वाराणसी में ही रहे। शिव ने उनकी प्रार्थना पर अविमुक्तेश्वर शिवलिंग में अपने आपको स्थापित किया था, जिसके कारण ही तब वह दुर्भिक्ष दूर हुआ था। तब से यह प्रसिद्ध है कि वाराणसी में अविमुक्तेश्वर सदा वास करते तथा भक्तों का सदा उद्धार करते हैं।

**श्री विक्रम शुभ सम्वत् 2081** — 03 अक्टूबर से 17 अक्टूबर 2024 तक — दक्षिणायन — शरद ऋतु

| दि. | वार | समाप्ति घं. | समाप्ति मि. | नक्षत्र | समाप्ति घं. | समाप्ति मि. | योग | समाप्ति घं. | समाप्ति मि. | सू.उ. घ.मि. | सू.अ. घ.मि. | चन्द्रराशि प्रवेश | सूर्य स्पष्ट स्टे.टा ५/३० | | | अक्टूबर | यहाँ पर दिया गया, सभी समय, भा.स्टे.स्टा.में है जो सम्पूर्ण भारत में समान रूप से ग्राह्य रहेगा । |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ०१ | गुरू | २७ | ०० | हस्त | १५ | ३० | ऐन्द्र | २८ | २२ | ०६ २३ | १८ ०९ | तु.२९।०६ | ०५ | १६ | ०४ | 03 | शारदीय नवरात्र प्रा. घटस्थापना, मातामह का श्राद्ध, श्री अग्रसेन जयंती, |
| ०२ | शुक्र | २९ | २९ | चित्रा | १८ | ३५ | वैधृ | २९ | १९ | २३ | ०८ | तुला | ०५ | १७ | ०४ | 04 | चन्द्रदर्शन, नवीन |
| ०३ | शनि | अ. | रा. | स्वा | २१ | ३० | विष्कु | ३० | ०५ | २३ | ०७ | तुला | ०५ | १८ | ०३ | 05 | सर्वार्थसिद्धि ६।२३ से २१।३२ तक, रवियोग २१।३३ से |
| ०३ | रवि | ०७ | ४७ | विशा | २४ | ०९ | प्रीति | अ. | रा. | २४ | ०६ | वृ.१७।३२ | ०५ | १९ | ०२ | 06 | भ. २०।४८ से, श्री विनायक चतुर्थीव्रत, बुध चित्रा में ११।४६, रवियोग २४।११ तक |
| ०४ | सोम | ०९ | ४५ | अनु | २६ | २३ | प्रीति | ०६ | ३८ | २४ | ०५ | वृश्चिक | ०५ | २० | ०१ | 07 | भ. ९।४७ तक, श्री ललिता पंचमी व्रत, सर्वार्थसिद्धि ६।२४ से २६।२४ तक, |
| ०५ | मंगल | ११ | १६ | ज्ये | २८ | ०६ | आयु | ०६ | ४९ | २५ | ०४ | ध.२५।०८ | ०५ | २१ | ० | 08 | श्री सरस्वती आवाहन |
| ०६ | बुध | १२ | १२ | मूल | २९ | १२ | सौभा शोभ | ०६ २९ | ३६ ५२ | २५ | ०३ | धनु | ०५ | २१ | ५९ | 09 | श्री सरस्वती आवाहन, गुरू वक्री १२।३७ |
| ०७ | गुरू | १२ | ३० | पूषा | २९ | ३८ | अति | २८ | ३४ | २५ | ०२ | धनु | ०५ | २२ | ५९ | 10 | भ. १२।३२ से २४।२० तक, सरस्वती पूजन, वाहन मेष, भद्रकाली प्राकट्य |
| ०८ | शुक्र | १२ | ०५ | उषा | २९ | २२ | सुक | २६ | ४४ | २६ | ०१ | म.११।४१ | ०५ | २३ | ५८ | 11 | श्री दुर्गाष्टमी, महाअष्टमी |
| ०९ | शनि | ११ | ०० | श्रव | २८ | २५ | धृति | २४ | २० | २६ | १८ ०० | मकर | ०५ | २४ | ५७ | 12 | महानवमी पूज्य, श्री सरस्वती विसर्जन, नवरात्र उत्थापन, विजयादशमी (दशहरा) पर्व |
| १० | रवि | ०९ | ०८ | धनि | २६ | ४९ | शूल | २१ | २२ | २६ | १७ ५९ | कुं.१५।४३ | ०५ | २५ | ५७ | 13 | भ. १९।५७ से पापाकुंश एकादशीव्रत स्मार्त (फूटकाचरी), पंचक प्रा. १५।४३ से |
| ११ | सोम | ०६ | ४१ | शत | २४ | ४१ | गण्ड | १८ | ०० | २७ | ५८ | कुम्भ | ०५ | २६ | ५६ | 14 | भ. ६।४३ तक, पापाकुंश एकादशीव्रत वैष्ण व्रत |
| १२ | सोम | २७ | ४१ | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०५ | ०० | ०० | 00 | द्वादशी का क्षय |
| १३ | मंगल | २४ | १७ | पूभा | २२ | ०६ | वृद्धि | १४ | १३ | २७ | ५८ | मी१६।४८ | ०५ | २७ | ५६ | 15 | भौमप्रदोष व्रत, सर्वार्थसिद्धि २२९ से ३०।२७ तक A कार्तिक स्नान प्रारंभ |
| १४ | बुध | २० | ३९ | उभा | १९ | १५ | ध्रुव व्या | १० २९ | ११ ५६ | २८ | ५७ | मीन | ०५ | २८ | ५५ | 16 | भ. २०।४१ से, श्री शरदपूर्णिमा व्रत, कोजागरी व्रत A पंचक समाप्त १६।२०पर |
| १५ | गुरू | १६ | ४१ | रेव | १६ | १८ | हर्ष | २५ | ४० | ०६ २८ | १७ ४३ | मे.१६।२० | ५० | २९ | ५५ | 17 | भ. ६।४४ तक, श्री सत्यनारायण व्रत, आश्विन पूर्णिमा व्रत, श्री वाल्मिकि जयंती A |

दि.२७/११/२०२३स्टे.टा. ०५/३०

| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ०५ | १० | ०२ | ०६ | ०१ | ०७ | १० | ११ |
| २६ | ०८ | २७ | ०६ | २६ | ०१ | १९ | ११ |
| ५६ | १५ | २७ | ०६ | ०५ | ११ | २२ | २८ |
| १३ | ४१ | ०५ | २८ | ४६ | १५ | ४९ | २२ |
| ५९ | ८८१ | २८ | ९५ | ०१ | ७२ | ०३ | ०३ |
| २५ | ५० | ०५ | ५८ | १० | ४२ | ०५ | ११ |
| चित्रा | शत | पुन | चित्रा | मृग२ | विशा | शत४ | उभा३ |
| - | - | मा | मा | व | मा | व | व |

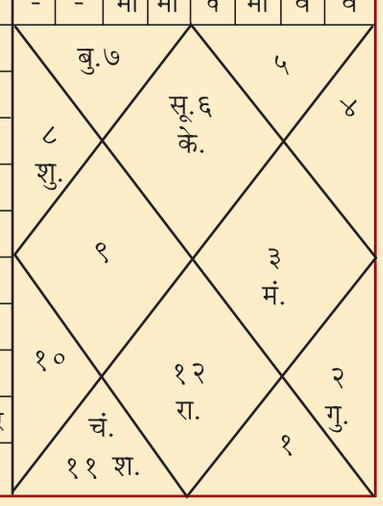




**श्री विक्रम शुभ सम्वत् 2081** — 18 अक्टूबर से 01 नवम्बर 2024 तक — दक्षिणायन — शरद/हेमन्त ऋतु

| दि. | वार | समाप्ति घं. | समाप्ति मि. | नक्षत्र | समाप्ति घं. | समाप्ति मि. | योग | समाप्ति घं. | समाप्ति मि. | सू.उ. घ.मि. | सू.अ. घ.मि. | चन्द्रराशि प्रवेश | सूर्य स्पष्ट स्टे.टा ५/३० | | | अक्टूबर नवम्बर | यहाँ पर दिया गया, सभी समय, भा.स्टे.स्टा.में है जो सम्पूर्ण भारत में समान रूप से ग्राह्य रहेगा । |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ०१ | शुक्र | १३ | १३ | अश्वि | १३ | २५ | वज्र | २१ | ३२ | ०६ २९ | १७ ५५ | मेष | ०६ | ०० | ५४ | 18 | द्विदल (दाल) भक्षण त्याग, सर्वार्थसिद्धि ६२९ से १३।२७ तक |
| ०२ | शनि | ०९ | ४८ | भर | १० | ४५ | सिद्धि | १७ | ४० | २९ | ५४ | वृ.१६।१० | ०६ | ०१ | ५४ | 19 | भ. २०।१९ से |
| ०३ | रवि | ०६ | ४६ | कृति | ०८ | ३० | व्य | १४ | ०९ | ३० | ५३ | वृष | ०६ | ०२ | ५३ | 20 | भं. ६।४८ तक, करवा चौथ, श्री संकष्टातुर्थी व्रत, चन्द्रोदय २०।१६ |
| ०४ | रवि | २८ | १६ | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | 0 | चतुर्थी का क्षय |
| ०५ | सोम | २६ | २७ | रोहि मृग | ०६ २९ | ४८ ४८ | वरी | ११ | ०९ | ३० | ५३ | मि.२४।०२ | ०६ | ०३ | ५३ | 21 | सर्वार्थसिद्धि ६३० से ६।५० तत्पश्चात् अमृतसिद्धि |
| ०६ | मंगल | २५ | २६ | आर्द्रा | २९ | ३५ | परि | ०८ | ४४ | ३० | ५२ | मिथुन | ०६ | ०४ | ५३ | 22 | भ.२५।२८ से, हेमन्त ऋतु प्रा., बुध विशा. में २८।०० |
| ०७ | बुध | २५ | १६ | पुन | ३० | १३ | शिव सिद्ध | ०६ २९ | ५७ ४९ | ३१ | ५१ | क.२४।०२ | ०६ | ०५ | ५२ | 23 | भ. १३।२३ तक, रवियोग २५।४२ से ३०।१५ तक |
| ०८ | गुरू | २५ | ५६ | पुष्य | अ. | रा. | साध्य | २९ | २० | ३१ | ५० | कर्क | ०६ | ०६ | ५२ | 24 | कालाष्टी, अहोई अष्टी (काली पूजा) गुरू पुष्य योग दिन-रात |
| ०९ | शुक्र | २७ | २० | पुष्य | ०७ | ३७ | शुभ | २९ | २३ | ३२ | ५० | कर्क | ०६ | ०७ | ५२ | 25 | वक्री गुरू मृग१ में २८।४२ |
| १० | शनि | २९ | २३ | श्ले | ०९ | ४४ | शुक्ल | २९ | ५५ | ३२ | ४९ | सिं०९।४६ | ०६ | ०८ | ५२ | 26 | भ. १६।२४ से २९।२५ तक, |
| ११ | रवि | अ | रा. | मघा | १२ | २२ | ब्रह्म | अ. | रा. | ३३ | ४८ | सिंह | ०६ | ०९ | ५१ | 27 | - |
| ११ | सोम | ०७ | ४९ | पूफा | १५ | २१ | ब्रह्म | ०६ | ४५ | ३३ | ४८ | कं.२२।१० | ०६ | १० | ५१ | 28 | रमाएकादशीव्रत (केला) |
| १२ | मंगल | १० | ३० | उफा | १८ | ३१ | ऐंद्र | ०७ | ४५ | ३४ | ४७ | कन्या | ०६ | ११ | ५१ | 29 | भौमप्रदोष व्रत, धनतेरत, गोवत्स द्वादशी, सायं यमप्रीव्यर्थ दीपदान, बुध वृश्चिक में २२।३९ |
| १३ | बुध | १३ | १४ | हस्त | २१ | ४१ | वैधृ | ०८ | ४९ | ३५ | ४६ | कन्या | ०६ | १२ | ५१ | 30 | भ.१३।१५ से २६।३४ तक, स.सि. ६।३५ से २१।४३ तक, नरकहरा रूपचतुर्दशी, रूप १४ |
| १४ | गुरू | १५ | ४० | चित्रा | २८ | ४२ | विष्कु | ०९ | ४८ | ३५ | ४६ | तु.११।१५ | ०६ | १३ | ५१ | 31 | दीपावली, महापर्व लक्ष्मी व कुबेर पूजन |
| ३० | शुक्र | १८ | १५ | स्वा | २७ | २८ | प्रीति | १० | ३९ | ०६ ३६ | १७ ४५ | तुला | ०६ | १४ | ५१ | 1 | नवम्बर मा.प्रा., गोवर्धन पूजा, अन्नकुट उत्सव, गोक्रीड़ा, बलि पूजा |

दि.२८/१०/२०२४स्टे.टा. ०५/३०

| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ०६ | ०४ | ०३ | ०६ | ०१ | ०७ | १० | ११ |
| १० | २१ | ०३ | २७ | २६ | १८ | १८ | १० |
| ५१ | ४७ | ०९ | ३० | ३३ | ०५ | ४७ | ४३ |
| २१ | ३६ | ५७ | ५८ | ०४ | ३३ | २७ | ५० |
| ५९ | ७०८ | २३ | ५७ | ०३ | ७२ | ०१ | ०३ |
| ५६ | ०२ | २३ | १५ | ५२ | १६ | ५८ | ११ |
| स्वा | पूफा | पुन | विशा | मृग१ | ज्ये | शत.४ | उभा३ |
| - | - | मा | मा | व | मा | व | व |

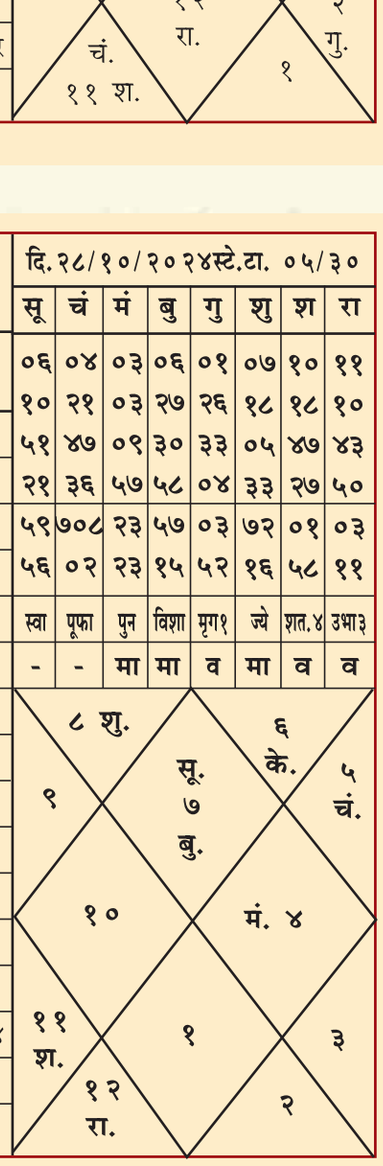

# विक्रम पंचांग



त्र्यम्बकेश्वर मन्दिर

| कार्तिक शुक्ल पक्ष | सम्राट विक्रमादित्य सम्वत् 2081 | अगहन कृष्ण पक्ष |
|---|---|---|
| 02 नवम्बर 2024 से 15 नवम्बर 2024 (शरद ऋतु) | पिंगल नाम सम्वत्सर<br>• कलि संवत 5125 • सृष्टि आरम्भ 1955885125 • राजा – मंगल • मंत्री – शनि | 16 नवम्बर 2024 से 01 दिसम्बर 2024 (हेमंत ऋतु) |

| वार | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| रविवार | | 03 नवम्बर द्वितीया भाई दूज | 10 नवम्बर नवमी | 01 दिसम्बर अमावस्या | 17 नवम्बर द्वितीया लाला लाजपतराय बलिदान दिवस | 24 नवम्बर नवमी गुरु तेगबहादुर जयंती |
| सोमवार | | 04 नवम्बर तृतीया विश्वामित्र जयंती | 11 नवम्बर दशमी | | 18 नवम्बर तृतीया | 25 नवम्बर दशमी |
| मंगलवार | | 05 नवम्बर चतुर्थी | 12 नवम्बर एकादशी देवप्रबोधिनी एकादशी संत नामदेव जयंती | | 19 नवम्बर चतुर्थी रानी लक्ष्मीबाई जयंती | 26 नवम्बर एकादशी संविधान दिवस |
| बुधवार | | 06 नवम्बर पंचमी गुरु गोविंदसिंह पुण्यतिथि | 13 नवम्बर द्वादशी | | 20 नवम्बर पंचमी | 27 नवम्बर द्वादशी |
| गुरुवार | | 07 नवम्बर षष्ठी छठ पूजा | 14 नवम्बर त्रयोदशी चतुर्दशी बालदिवस | | 21 नवम्बर षष्ठी | 28 नवम्बर त्रयोदशी महात्मा ज्योतिबा फुले पुण्यतिथि |
| शुक्रवार | | 08 नवम्बर सप्तमी भगवान सहस्त्रबाहु जयंती | 15 नवम्बर पूर्णिमा बिरसामुण्डा जयंती गुरुनानक देव जयंती कार्तिक पूर्णिमा राष्ट्रीय जनजातिय गौरव दिवस | | 22 नवम्बर सप्तमी वीरांगना झलकारी जयंती | 29 नवम्बर त्रयोदशी |
| शनिवार | 02 नवम्बर प्रतिपदा गोवर्धन पूजन | 09 नवम्बर अष्टमी गोपाष्टमी | | 16 नवम्बर प्रतिपदा | 23 नवम्बर अष्टमी | 30 नवम्बर चतुर्दशी |

## श्री त्र्यम्बकेश्वर ज्योर्तिलिंग

श्री त्र्यम्बकेश्वर ज्योर्तिलिंग मन्दिर महाराष्ट्र-प्रान्त के नासिक जिले में त्र्यम्बक गाँव में स्थित हैं। यहाँ के निकटवर्ती ब्रह्म गिरि नामक पर्वत से गोदावरी नदी का उद्गम है। इन्हीं पुण्यतोया गोदावरी के उद्गम-स्थान के समीप स्थित त्र्यम्बकेश्वर-भगवान की भी बड़ी महिमा हैं गौतम ऋषि तथा गोदावरी के प्रार्थनानुसार भगवान शिव ने इस स्थान में वास करने की कृपा की और त्र्यम्बकेश्वर नाम से विख्यात हुए। मन्दिर के अन्दर एक छोटे से गड्ढे में तीन छोटे-छोटे लिंग है, ब्रह्मा, विष्णु और शिव। त्र्यम्बक नाम का ऋग्वेद में, यजुर्वेद सहित इस नाम का स्मरण किया जाता है। प्रसिद्ध महामृत्युंजय मंत्र के देवता भगवान त्र्यम्बक ही हैं। ये यथा नाम तथा गुण के मृत्यु के भय को दूर करने वाले भाव रोग दोषों के हन्ता शिव के स्वरूप के अनुसार स्मरण में आते हैं। ऐसा माना जाता है कि जन्म कुंडली में जो भी शास्त्र के अनुसार कालसर्प दोष होता है, यह दोष त्र्यम्बकेश्वर के दर्शन से दूर होता है। पुराण के अनुसार त्र्यम्बकेश्वर शिवलिंग के उद्भव की कथा इस प्रकार है- प्राचीन काल में गौतम नाम के एक श्रेष्ठ ऋषि रहते थे। वे बड़े तपस्वी थे। एक समय जब पृथ्वी पर भयानक अकाल पड़ा और सौ वर्ष तक वर्षा नहीं हुई तो उस स्थान से सब जीव-जन्तु भागकर दूसरी जगह चले गये। उस क्षेत्र में हरियाली का पूर्णतः अभाव हो गया। तब ऋषि ने इस स्थिति को देखकर करुणा वश वरुण देवता की उपासना की। छह महीने की कठोर उपासना से वरुण देव प्रसन्न हुए। उन्होंने ऋषि गौतम से वर माँगने को कहा। ऋषि ने वृष्टि के लिए प्रार्थना की। वरुण ने कहा-यह विधि का विधान है, फिर भी मैं आपकी इच्छा को ऐन-केन प्रकारेण पूरा करता हूँ। आप एक गड्ढा खोदिए। मैं इसे दिव्य अक्षय जल से पूर्ण करता हूँ। आज से यह स्थान तीर्थ के रूप में स्वीकृत होगा। यहाँ पर किए हुए दान-पुण्य पूजन-श्राद्ध सभी अक्षय होंगे। ऐसा कहकर वरुण देव अंतर्ध्यान हो गये।

### श्री विक्रम शुभ सम्वत् 2081

**02 नवम्बर से 15 नवम्बर 2024 तक**

दक्षिणायन — हेमन्त ऋतु

यहाँ पर दिया गया, सभी समय, भा.स्टे.स्टा.में है जो सम्पूर्ण भारत में समान रूप से ग्राह्य रहेगा ।

| तिथि | वार | समाप्ति घं. | मि. | नक्षत्र | समाप्ति घं. | मि. | योग | समाप्ति घं. | मि. | सू.उ. घ.मि. | सू.अ. घ.मि. | चन्द्रराशि प्रवेश | सूर्य स्पष्ट स्टे.टा ५/३० | | | नवम्बर | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ०१ | शनि | २० | १९ | विशा | २९ | ५६ | आयु | ११ | १६ | ०६ ३६ | १७ ४४ | वृ.२३।२३ | ०६ | १५ | ५१ | 02 | गोवर्धन पूजा, अन्नकूट महोत्सव, बलिपूजा, गोक्रीड़ा |
| ०२ | रवि | २२ | ०३ | अनु | अ. | रा. | सौभा | ११ | ३७ | ३६ | ४४ | वृश्चिक | ०६ | १६ | ५१ | 03 | चन्ददर्शन, भाईदूज, यमद्वितीया, चित्रगुप्त पूजा, विश्वकर्मा पूजा |
| ०३ | सोम | २३ | २३ | अनु | ०८ | ०३ | शोभ | ११ | ४० | ३६ | ४३ | वृश्चिक | ०६ | १७ | ५१ | 04 | सर्वार्थसिद्धि ६३७ से ८।५ तक, रवियोग ८।६ से |
| ०४ | मंगल | २४ | १६ | ज्ये | ०९ | ४३ | अति | ११ | २४ | ३८ | ४३ | ध.०९।४५ | ०६ | १८ | ५२ | 05 | भ. ११।५२ से २४।१८ तक, श्री विनायक चतुर्थीव्रत, रवियोग ९।४५ तक |
| ०५ | बुध | २४ | ५१ | मूल | ११ | ०० | सुक | १० | ४८ | ३८ | ४२ | धनु | ०६ | १९ | ५२ | 06 | सौभाग्य पंचमी, पाण्डव पंचमी, सूर्य विशा. में ८।४६, शुक्र मूलधनु में २७।३२ |
| ०६ | गुरू | २४ | ३३ | पूषा | ११ | ४४ | धृति | ०९ | ४९ | ३९ | ४२ | म.१७/५२ | ०६ | २० | ५२ | 07 | सूर्यषष्ठी, छठ पूजा, रवियोग ११।४७ से |
| ०७ | शुक्र | २३ | ५५ | उषा | १२ | ०० | शूल गण्ड | ०८ ३० | २५ ३४ | ४० | ४१ | मकर | ०६ | २१ | ५२ | 08 | भ. २३।५७ से, सर्वार्थसिद्धि १२।०२ से, रवियोग १२।०२ तक |
| ०८ | शनि | २२ | ४३ | श्रव | ११ | ४५ | वृद्धि | २८ | २० | ४० | ४१ | कुं.२३/२७ | ०६ | २२ | ५३ | 09 | भ. ११।२१ तक, दुर्गाष्टी, गोपाष्टमी, पंचक प्रा. २३।२७ से, सर्वार्थसिद्धि ११।४७ तक |
| ०९ | रवि | २१ | ०० | धनि | ११ | ०० | ध्रुव | २५ | ४० | ४१ | ४० | कुम्भ | ०६ | २३ | ५३ | 10 | कूष्माण्ड (अक्षय) नवमी, आवँला नवमी, बुध ज्ये.में. ३०।२१, राहु उभा २ |
| १० | सोम | १८ | ४४ | शत | ०९ | ३९ | व्या | २२ | ३६ | ४१ | ४० | मी.२६/२१ | ०६ | २४ | ५३ | 11 | भ. २९।२६ से, भीष्म पंचक व्रत प्रा. |
| ११ | मंगल | १६ | ०३ | पूभा उभा | ०७ २९ | ४९ ३८ | हर्ष | १९ | ०७ | ४२ | ४० | मीन | ०६ | २५ | ५३ | 12 | भ. १६।५तक, देवप्रबोधिनी एकादशीव्रत (बिल्वपत्र), तुलसी विवाह, कालिदास स्मृति |
| १२ | बुध | १३ | ०० | रेव | २७ | ०८ | वज्र | १५ | २३ | ४२ | ३९ | मे.२७।१० | ०६ | २६ | ५४ | 13 | प्रदोषव्रत, चातुर्मासव्रत नियम स., रवियोग २७।११ से |
| १३ | गुरू | ०९ | ४३ | अश्वि | २४ | ३१ | सिद्धि | ११ | २८ | ४३ | ३९ | मेष | ०६ | २७ | ५४ | 14 | भ. ३०।१९ से, वैकुण्ठ चतुर्दशी (मध्यरात्रि में हरिहरमिलाप) |
| १४ | गुरू | ३० | १७ | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | 00 | चतुर्दशी का क्षय |
| १५ | शुक्र | २६ | ५६ | भर | २१ | ५६ | व्यु वरी | ०७ २७ | २८ ३० | ०६ ४४ | १७ ३९ | वृ.२७।१७ | ०६ | २८ | ५५ | 15 | भ. १६।३९ तक, श्रीसत्यनारायण-पूर्णिमा व्रत, त्रिपुरोत्सव, श्री गुरूनानक जयंती |

दि.११/११/२०२४स्टे.टा. ०५/३०

| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ०६ | १० | ०३ | ०७ | ०१ | ०८ | १० | ११ |
| २४ | १७ | ०७ | १६ | २५ | ०४ | १८ | ०९ |
| ५३ | ३१ | ५६ | ३७ | २३ | ५२ | ३० | ५९ |
| ०६ | ३० | ५२ | २८ | ५० | ५७ | ३१ | २० |
| ६० | ८६२ | १७ | ५२ | ०६ | ७१ | ०० | ०३ |
| १८ | १७ | ०५ | ५२ | १० | ३३ | ३५ | ११ |
| विशा | शत | पुष्य | ज्ये | मृग१ | मूल | शत.४ | उभा२ |
| - | - | मा | मा | व | मा | व | व |

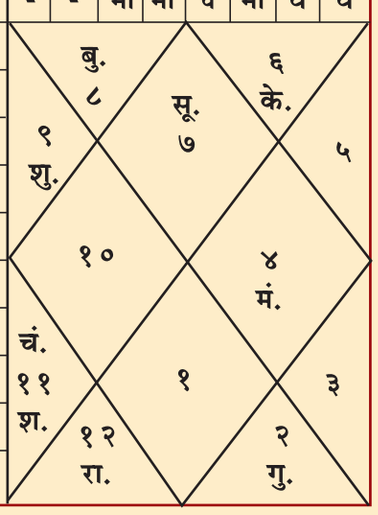




### श्री विक्रम शुभ सम्वत् 2081

**16 नवम्बर से 01 दिसम्बर 2024 तक**

दक्षिणायन — हेमन्त ऋतु

यहाँ पर दिया गया, सभी समय, भा.स्टे.स्टा.में है जो सम्पूर्ण भारत में समान रूप से ग्राह्य रहेगा ।

| तिथि | वार | समाप्ति घं. | मि. | नक्षत्र | समाप्ति घं. | मि. | योग | समाप्ति घं. | मि. | सू.उ. घ.मि. | सू.अ. घ.मि. | चन्द्रराशि प्रवेश | सूर्य स्पष्ट स्टे.टा ५/३० | | | नवम्बर दिसम्बर | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ०१ | शनि | २३ | ४९ | कृति | १९ | २५ | परि | २३ | ४५ | ०६ ४५ | १७ ३९ | वृष | ०६ | २९ | ५५ | 16 | सूर्य वृश्चिक में ७।३०, अमृतसिद्धि १९।२८ से ३०।४५ तक |
| ०२ | रवि | २१ | ०५ | रोहि | १७ | २० | शिव | २० | १७ | ४६ | ३९ | मि.२८।३१ | ०७ | ०० | ५५ | 17 | - |
| ०३ | सोम | १८ | ५४ | मृग | १५ | ४६ | सिद्ध | १७ | १९ | ४७ | ३८ | मिथुन | ०७ | ०१ | ५६ | 18 | भ. ०८।०२ से १८।५६ तक, श्री संकष्टातुर्थीव्रत, चन्द्रोदय १९।५६ |
| ०४ | मंगल | १७ | २६ | आर्द्रा | १४ | ५४ | साध्य | १४ | ५४ | ४७ | ३८ | मिथुन | ०७ | ०२ | ५६ | 19 | सूर्य अनुराधा में १४।५३ |
| ०५ | बुध | १६ | ४८ | पुन | १४ | ४८ | शुभ | १३ | ०६ | ४८ | ३८ | क.८।४६ | ०७ | ०३ | ५७ | 20 | - |
| ०६ | गुरू | १७ | ०३ | पुष्य | १५ | ३५ | शुक्ल | १२ | ०० | ४८ | ३८ | कर्क | ०७ | ०४ | ५७ | 21 | भ. १७।५ से २९।३६ तक, गुरू पुष्य ६।४८ से १५।३६ तक |
| ०७ | शुक्र | १८ | ०५ | श्ले | १७ | ०८ | ब्रह | ११ | ३० | ४९ | ३८ | सिं.१७।१० | ०७ | ०५ | ५८ | 22 | रवियोग १७।१० तक |
| ०८ | शनि | १९ | ५७ | मघा | १९ | २५ | ऐन्द्र | ११ | ३८ | ४९ | ३८ | सिंह | ०७ | ०६ | ५९ | 23 | श्री कालभैरवाष्टामी, श्री कालभैरव जयंती |
| ०९ | रवि | २२ | १७ | पूफा | २२ | १४ | वैधृ | १२ | १५ | ५० | ३८ | कं.२९।०० | ०७ | ०७ | ५९ | 24 | सर्वार्थसिद्धि २२।१६ से ३०।५० तक |
| १० | सोम | २५ | ०० | उफा | २५ | २१ | विष्कु | १३ | ०८ | ५१ | ३७ | कन्या | ०७ | ०९ | ०० | 25 | भ. ११।४१ से २५।०२ तक |
| ११ | मंगल | २७ | ४५ | हस्त | २८ | ३२ | प्रीति | १४ | ११ | ५१ | ३७ | कन्या | ०७ | १० | ०१ | 26 | उत्पत्ति एकादशीव्रत (बादाम), बुध वक्री ८।१५ |
| १२ | बुध | ३० | २१ | चित्रा | अ. | रा. | आयु | १५ | ११ | ५२ | ३७ | तु.१८।७ | ०७ | ११ | ०१ | 27 | - |
| १३ | गुरू | अ. | रा. | चित्रा | ०७ | ३३ | सौभा | १६ | ०० | ५३ | ३७ | तुला | ०७ | १२ | ०२ | 28 | प्रदोषव्रत, वक्री गुरू रोहि. ४ में १४।३१ |
| १३ | शुक्र | ०८ | ३८ | स्वा | १० | १६ | शोभ | १६ | ३० | ५४ | ३७ | वृ.३०।०१ | ०७ | १३ | ०३ | 29 | भ. ८।४० से २१।३६ तक, शिवरात्रि व्रत, शुक्र उ.षा में १५।२९ |
| १४ | शनि | १० | २९ | विशा | १२ | ३३ | अति | १६ | ४२ | ५४ | ३७ | वृश्चिक | ०७ | १४ | ०४ | 30 | पितृ अमावस्या |
| ३० | रवि | ११ | ४८ | अनु | १४ | २१ | सुक | १६ | ३१ | ०६ ५५ | १७ ३८ | वृश्चिक | ०७ | १५ | ०५ | 1 | अगहनी अमावस्या, दिसम्बर मास प्रारंभ |

दि.२५/११/२०२४स्टे.टा. ०५/३०

| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ०७ | ०५ | ०३ | ०७ | ०१ | ०८ | १० | ११ |
| ०८ | ०० | ११ | २८ | २३ | २१ | १८ | ०९ |
| ५९ | १३ | ०२ | २२ | ४६ | २९ | ३४ | १४ |
| ५९ | ४२ | ५६ | २२ | १९ | ०५ | ०४ | ५० |
| ६० | ७०७ | ०८ | २२ | ०७ | ७० | ०१ | ०३ |
| ४० | ०३ | ४० | ५२ | ४३ | ३९ | ०३ | ११ |
| अनु | उफा | पुष्य | ज्ये | मृग१ | पूषा | शत.४ | उभा२ |
| - | - | मा | मा | व | मा | मा | व |

# ॥ विक्रम पंचांग ॥

श्री वैद्यनाथ मंदिर

**अगहन शुक्ल पक्ष**
02 दिसम्बर 2024 से 15 दिसम्बर 2024
(हेमंत ऋतु)

# सम्राट विक्रमादित्य सम्वत् 2081

पिंगल नाम सम्वत्सर

• कलि संवत 5125 • सृष्टि आरम्भ 1955885125 • राजा – मंगल • मंत्री – शनि

**पौष कृष्ण पक्ष**
16 दिसम्बर 2024 से 30 दिसम्बर 2024
(हेमंत/शिशिर ऋतु)

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | 08 दिसम्बर सप्तमी | 15 दिसम्बर पूर्णिमा – सरदार वल्लभभाई पटेल पुण्यतिथि | रविवार | | 22 दिसम्बर सप्तमी – श्री निवास रामानुजन जयंती | 29 दिसम्बर चतुर्दशी |
| 02 दिसम्बर प्रतिपदा | 09 दिसम्बर अष्टमी | | सोमवार | 16 दिसम्बर प्रतिपदा | 23 दिसम्बर अष्टमी | 30 दिसम्बर अमावस्या |
| 03 दिसम्बर द्वितीया – विश्व दिव्यांग दिवस, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जयंती | 10 दिसम्बर नवमी – मानवअधिकार दिवस | | मंगलवार | 17 दिसम्बर द्वितीया | 24 दिसम्बर नवमी | |
| 04 दिसम्बर तृतीया – टंट्या भील बलिदान दिवस, नौसेना दिवस | 11 दिसम्बर दशमी – गीता जयंती | | बुधवार | 18 दिसम्बर तृतीया – गुरु घासीदास जयंती | 25 दिसम्बर दशमी – क्रिसमस डे, पं. मदनमोहन मालवीय जयंती, पं. अटल बिहारी वाजपेयी जयंती | |
| 05 दिसम्बर चतुर्थी | 12 दिसम्बर एकादशी | | गुरुवार | 19 दिसम्बर चतुर्थी | 26 दिसम्बर एकादशी | |
| 06 दिसम्बर पंचमी – डॉ. अंबेडकर पुण्यतिथि | 13 दिसम्बर द्वादशी | | शुक्रवार | 20 दिसम्बर पंचमी | 27 दिसम्बर द्वादशी – महाराजा श्वेतसिंह खंगार जयंती | |
| 07 दिसम्बर षष्ठी | 14 दिसम्बर त्रयोदशी चतुर्दशी – दत्तात्रेय जयंती | | शनिवार | 21 दिसम्बर षष्ठी | 28 दिसम्बर त्रयोदशी | |

## श्री वैद्यनाथ ज्योतिर्लिंग



श्री वैद्यनाथ ज्योतिर्लिंग झारखण्ड राज्य के देवघर नामक स्थान में स्थित है। शिव का एक नाम 'बैद्यनाथ' भी है, इस कारण लोग इसे 'वैद्यनाथ धाम' भी कहते हैं। यह एक सिद्धपीठ है। इस कारण इस लिंग को 'कामना लिंग' भी कहा जाता हैं। इस ज्योतिर्लिंग की स्थापना का इतिहास यह है कि एक बार राक्षसराज रावण ने हिमालय पर जाकर शिवजी की प्रसन्नता के लिये घोर तपस्या की और अपने सिर काट-काटकर शिवलिंग पर चढ़ाने शुरू कर दिये। एक-एक करके नौ सिर चढ़ाने के बाद दसवाँ सिर भी काटने को ही था कि शिवजी प्रसन्न होकर प्रकट हो गये। उन्होंने उसके दसों सिर ज्यों-के-त्यों कर दिये और उससे वरदान माँगने को कहा। रावण ने लंका में जाकर उस लिंग को स्थापित करने के लिये उसे ले जाने की आज्ञा माँगी। शिवजी ने अनुमति तो दे दी, पर इस चेतावनी के साथ दी कि यदि मार्ग में इसे पृथ्वी पर रख दोगे तो वह वहीं अचल हो जाएगा। अन्ततोगत्वा वही हुआ। रावण शिवलिंग लेकर चले पर मार्ग में एक चिताभूमि आने पर उसे लघुशंका निवृत्ति की आवश्यकता हुई। रावण उस लिंग को एक व्यक्ति को थमा लघुशंका-निवृत्ति करने चले गये। इधर उस व्यक्ति ने ज्योतिर्लिंग को बहुत अधिक भारी अनुभव कर भूमि पर रख दिया। फिर क्या था, लौटने पर रावण पूरी शक्ति लगाकर भी उसे न उखाड़ सका और निराश होकर मूर्ति पर अपना अँगूठा गड़ाकर लंका को चला गया। इधर ब्रह्मा, विष्णु आदि देवताओं ने आकर उस शिवलिंग की पूजा की। शिवजी के दर्शन होते ही सभी देवी-देवताओं ने शिवलिंग की वहीं उसी स्थान पर प्रतिस्थापना कर दी और शिव-स्तुति करते हुए वापस स्वर्ग को चले गये। जनश्रुति व लोक-मान्यता के अनुसार यह वैद्यनाथ-ज्योतिर्लिंग मनोवांछित फल देने वाला है।

### श्री विक्रम शुभ सम्वत् 2081

**02 दिसम्बर से 15 दिसम्बर 2024 तक**

दक्षिणायन — हेमन्त ऋतु

यहाँ पर दिया गया, सभी समय, भा.स्टे.स्टा.में है जो सम्पूर्ण भारत में समान रूप से ग्राहय रहेगा ।

| तिथि | वार | समाप्ति घं. | मि. | नक्षत्र | समाप्ति घं. | मि. | योग | समाप्ति घं. | मि. | सू.उ. घ.मि. | सू.अ. घ.मि. | चन्द्रराशि प्रवेश | सूर्य स्पष्ट स्टे.टा ५/३० | | | दिसम्बर | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ०१ | सोम | १२ | ४१ | ज्ये | १५ | ४४ | धृति | १६ | ०० | ०६ ५६ | १७ ५५ | ध.१५।४६ | ०७ | १६ | ०५ | 02 | चन्द्रदर्शन, सूर्य ज्येष्ठा में १९।०७, शुक्र मकर में ११।५७ |
| ०२ | मंगल | १३ | ०७ | मूल | १६ | ४० | शूल | १५ | ०५ | ५६ | ३८ | धनु | ०७ | १७ | ०६ | 03 | |
| ०३ | बुध | १३ | ०९ | पूषा | १७ | १२ | गण्ड | १३ | ५४ | ५७ | ३८ | म.२३।२० | ०७ | १८ | ०७ | 04 | भ. २५।०१ से, रवियोग १७।१५ से |
| ०४ | गुरू | १२ | ४८ | उषा | १७ | २६ | वृद्धि | १२ | २५ | ५८ | ३८ | मकर | ०७ | १९ | ०८ | 05 | भ. १२।५० तक, श्री विनायक चतुर्थी व्रत, रवियोग १७।२८ तक |
| ०५ | शुक्र | १२ | ०५ | श्रव | १७ | १६ | ध्रुव | १० | ४० | ५९ | ३८ | कुं.२९।०५ | ०७ | २० | ०९ | 06 | विवाह पंचमी, मंगल वक्री २९।०५, पंचक प्रा. २९।०५ से, सर्वार्थसिद्धि |
| ०६ | शनि | ११ | ०४ | धनि | १६ | ४८ | व्या हर्ष | ०८ ३० | ४० २३ | ५९ | ३८ | कुम्भ | ०७ | २१ | १० | 07 | चम्पाषष्ठी, स्कन्दषष्ठी , रवियोग १६।५० तक |
| ०७ | रवि | ०९ | ४३ | शत | १६ | ०२ | वज्र | २७ | ५१ | ०७ ०० | ३९ | कुम्भ | ०७ | २२ | ११ | 08 | भ. ०९।४५ से २०।५५ तक मित्र भानु सप्तमी बक्री बुध अनु |
| ०८ | सोम | ०८ | ०२ | पूभा | १४ | ५३ | सिद्धि | २५ | ०३ | ०७ ०० | ३९ | मी.०९।१४ | ०७ | २३ | १२ | 09 | श्री दुर्गाष्टमी, रवियोग १४।५६ से |
| ०९ | सोम | ३० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | 00 | नवमी का क्षय |
| १० | मंगल | २७ | ४१ | उभा | १३ | २७ | य | २२ | ०१ | ०१ | ३९ | मीन | ०७ | २४ | १३ | 10 | शुक्र श्रवण में २७।१९, सर्वर्थसिद्धि ०७।०१ से १३।२९ तक |
| ११ | बुध | २५ | ०८ | रेव | ११ | ४६ | वरी | १८ | ४५ | ०१ | ३९ | मे.११/४८ | ०७ | २५ | १४ | 11 | भ. १४।२७ से २५।१० तक, मोक्षदा एकादशी व्रत (राजगरा) |
| १२ | गुरू | २२ | २५ | अश्वि | ०९ | ५० | परि | १५ | २१ | ०२ | ४० | मेष | ०७ | २६ | १५ | 12 | सर्वार्थसिद्धि ०७।०२ से ०९।५२ तक |
| १३ | शुक्र | १९ | ३८ | भर कृति | ०६ २९ | ४७ ४५ | शिव | ११ | ५२ | ०३ | ४० | वृ.१३।१८ | ०७ | २७ | १६ | 13 | प्रदोष व्रत, रवियोग ७।५० से २९।४७ तक |
| १४ | शनि | १६ | ५६ | रोहि | २७ | ५२ | सिद्ध साध्य | ०८ २९ | २४ ०५ | ०४ | ४० | वृष | ०७ | २८ | १७ | 14 | भ. १६।५८ से २७।४५ तक, श्री दत्तोत्रेय जयंती श्री सत्यनारायणव्रत |
| १५ | रवि | १४ | २९ | मृग | २६ | १७ | शुभ | २६ | ०१ | ०७ ०४ | १७ ४१ | मि.१५।०४ | ०७ | २९ | १८ | 15 | पूर्णिमा व्रत, श्री अन्नपूर्णा जयंती, सूर्य मूलधनु में २२।१० |

दि.०९/१२/२०२४स्टे.टा. ०५/३०

| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ०७ | १० | ०३ | ०७ | ०१ | ०९ | १० | ११ |
| २३ | २७ | ११ | १६ | २१ | ०७ | १८ | ०८ |
| ११ | ४८ | ५६ | २५ | ५३ | ४८ | ५८ | ३० |
| ४७ | ४५ | २१ | ०५ | ४९ | २२ | ०८ | १९ |
| ६० | ८४० | ०२ | ६७ | ०८ | ६९ | ०२ | ०३ |
| ५७ | १५ | ०३ | २२ | ०७ | १० | ३२ | ११ |
| ज्ये | पूभा | पुष्य | अनु | रोहि४ | उषा | शत.४ | उभा२ |
| - | - | व | व | व | मा | मा | व |

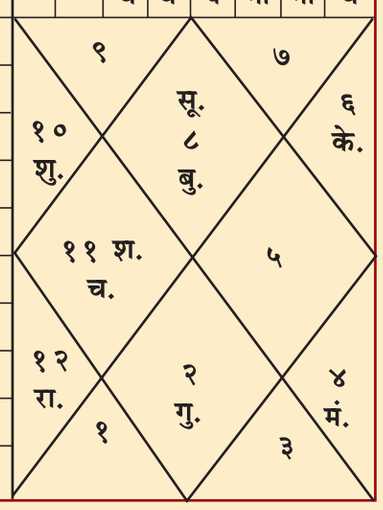




### श्री विक्रम शुभ सम्वत् 2081

**16 दिसम्बर से 30 दिसम्बर 2024 तक**

दक्षिणायन/उत्तरायण — हेमन्त/शिशिर ऋतु

यहाँ पर दिया गया, सभी समय, भा.स्टे.स्टा.में है जो सम्पूर्ण भारत में समान रूप से ग्राहय रहेगा ।

| तिथि | वार | समाप्ति घं. | मि. | नक्षत्र | समाप्ति घं. | मि. | योग | समाप्ति घं. | मि. | सू.उ. घ.मि. | सू.अ. घ.मि. | चन्द्रराशि प्रवेश | सूर्य स्पष्ट स्टे.टा ५/३० | | | दिसम्बर | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ०१ | सोम | १२ | २५ | आद्र | २५ | १२ | शुक्ल | २३ | २० | ०७ ०५ | १७ ४१ | मिथुन | ०८ | ०० | १९ | 16 | - |
| ०२ | मंगल | १० | ५४ | पुन | २४ | ४२ | ब्रह्म | २१ | ०९ | ०५ | ४१ | क.१८।४६ | ०८ | ०१ | २० | 17 | भ. २२।३१ से |
| ०३ | बुध | १० | ०४ | पुष्य | २४ | ५५ | ऐन्द्र | १९ | ३२ | ०६ | ४२ | कर्क | ०८ | ०२ | २१ | 18 | भ. १०।६ तक, श्री सकंष्टचतुर्थीव्रत, चन्द्रोदय २०।४६ |
| ०४ | गुरू | १० | ०१ | श्ले | २६ | ०० | वैधृ | १८ | ३२ | ०६ | ४२ | सि.२६।०१ | ०८ | ०३ | २२ | 19 | - |
| ०५ | शुक्र | १० | ४७ | मघा | २७ | ४४ | विष्कु | १८ | ०८ | ०७ | ४३ | सिंह | ०८ | ०४ | २३ | 20 | रवियोग २७।४७ से |
| ०६ | शनि | १२ | २० | पूफा | ३० | ११ | प्रीति | १८ | १९ | ०७ | ४३ | सिंह | ०८ | ०५ | २४ | 21 | भ. १२।२२ से २५।२८ तक, सायन मकर में रवि १४।५१ तक |
| ०७ | रवि | १४ | ३२ | उफा | अ. | रा. | आयु | १९ | ०० | ०८ | ४४ | कं.१२।५४ | ०८ | ०६ | २५ | 22 | कालाष्टमी, शुक्र धनिष्ठा में २२।१८, सर्वार्थसिद्धि दिन रात |
| ०८ | सोम | १७ | ०७ | उफा | ०९ | ०६ | सौभा | १९ | ५२ | ०८ | ४४ | कन्या | ०८ | ०७ | २६ | 23 | श्री हनुमान अष्टमी, वक्री गुरू रोहिणी ३ में १६।१२ |
| ०९ | मंगल | १९ | ५१ | हस्त | १२ | १४ | शोभ | २० | ५१ | ०९ | ४५ | तु.२५।५१ | ०८ | ०८ | २७ | 24 | बुध ज्येष्ठा में ८।२५ |
| १० | बुध | २२ | २८ | चित्रा | १५ | १९ | अति | २१ | ४३ | ०९ | ४५ | तुला | ०८ | ०९ | २८ | 25 | भ. ९।१२ से २२।३० तक |
| ११ | गुरू | २४ | ४१ | स्वा | १८ | ०८ | सुक | २२ | २० | १० | ४६ | तुला | ०८ | १० | ३० | 26 | सफला एकादशीव्रत (तिल-शक्कर) |
| १२ | शुक्र | २६ | २४ | विशा | २० | २७ | धृति | २२ | ३४ | १० | ४६ | वृ.१३।५८ | ०८ | ११ | ३१ | 27 | शनि पू.भा. १ में २०।१६, महापात दोष १४।३७ से २१।३३ तक |
| १३ | शनि | २७ | ३० | अनु | २२ | १० | शूल | २२ | २१ | ११ | ४७ | वृश्चिक | ०८ | १२ | ३२ | 28 | भ. २७।३२ से, शनिप्रदोष व्रत, शुक्र कुम्भ में २३।३९, सूर्य पू.षा में २४।२५ |
| १४ | रवि | २८ | ०० | ज्ये | २३ | २० | गण्ड | २१ | ३९ | ११ | ४७ | ध.२३।२२ | ०८ | १३ | ३३ | 29 | भ. १५।४७ तक, शिवरात्रि व्रत |
| ३० | सोम | २७ | ५६ | मूल | २३ | ५५ | वृद्धि | २० | ३० | ०७ ११ | १७ ४८ | धनु | ०८ | १४ | ३४ | 30 | सोमवती अमावस्या पुण्य |

दि.२३/१२/२०२४स्टे.टा. ०५/३०

| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ०८ | ०५ | ०३ | ०७ | ०१ | ०९ | १० | ११ |
| ०७ | ०८ | १० | १५ | २० | २३ | १९ | ०७ |
| २६ | १२ | १२ | ३९ | ०३ | ४० | ४१ | ४५ |
| १० | ०३ | १५ | ०५ | १२ | ०७ | ४५ | ५० |
| ६१ | ७०८ | १३ | ५४ | ०७ | ६६ | ०३ | ०३ |
| ०७ | ०२ | ४५ | ०५ | २६ | ३३ | ५१ | ११ |
| मूल | उफा | पुष्य | अनु | रोहि४ | धनि | शत४ | उभा२ |
| - | - | व | मा | व | मा | मा | व |

**पौष शुक्ल पक्ष**
31 दिसम्बर 2024 से 13 जनवरी 2025
(शिशिर ऋतु)

# सम्राट विक्रमादित्य सम्वत् 2081

पिंगल नाम सम्वत्सर

• कलि संवत 5125 • सृष्टि आरम्भ 1955885125 • राजा – मंगल • मंत्री – शनि

**माघ कृष्ण पक्ष**
14 जनवरी 2025 से 29 जनवरी 2025
(शिशिर ऋतु)

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| | 05 जनवरी षष्ठी परमहंस योगानंद जयंती | 12 जनवरी चतुर्दशी स्वामी विवेकानंद जयंती | रविवार | 19 जनवरी पंचमी | 26 जनवरी द्वादशी गणतंत्र दिवस |
| | 06 जनवरी सप्तमी गुरूगोविंद सिंह जयंती | 13 जनवरी पूर्णिमा लोहड़ी उत्सव | सोमवार | 20 जनवरी षष्ठी | 27 जनवरी त्रयोदशी |
| 31 दिसम्बर प्रतिपदा बेरवा दिवस संत बालिनाथ जयंती | 07 जनवरी अष्टमी | | मंगलवार | 14 जनवरी प्रतिपदा मकर संक्रांति पोंगल पर्व | 21 जनवरी सप्तमी जगतगुरु रामांदाचार्य जयंती वीर हेमू कालाणी शहीद दिवस | 28 जनवरी चतुर्दशी लाला लाजपतराय जयंती |
| 01 जनवरी द्वितीया | 08 जनवरी नवमी | | बुधवार | 15 जनवरी द्वितीया थल सेना दिवस | 22 जनवरी अष्टमी | 29 जनवरी अमावस्या मौनी अमावस्या |
| 02 जनवरी तृतीया | 09 जनवरी दशमी | | गुरुवार | 16 जनवरी तृतीया | 23 जनवरी नवमी नेताजी सुभाषचंद्र बोस जयंती | |
| 03 जनवरी चतुर्थी सावित्रीबाई फुले जयंती | 10 जनवरी एकादशी विश्व हिन्दी दिवस | | शुक्रवार | 17 जनवरी चतुर्थी | 24 जनवरी दशमी राष्ट्रीय बालिका दिवस | |
| 04 जनवरी पंचमी | 11 जनवरी द्वादशी | | शनिवार | 18 जनवरी पंचमी | 25 जनवरी एकादशी | |

## श्री नागेश्वर ज्योतिर्लिंग

श्री नागेश्वर ज्योतिर्लिंग का भगवान शिव के बारह ज्योतिर्लिंग में दसवाँ स्थान है। यह ज्योतिर्लिंग प्रसिद्ध तीर्थ द्वारकापुरी के पास स्थित है। स्कंधपुराण में इन्हीं नागेश लिंग का वर्णन एवं महत्व वर्णित है। इसके उद्भव की कथा कुछ ऐसी है कि प्राचीन काल में दारूका नाम की एक प्रसिद्ध राक्षिसी थी उसने पार्वती देवी की सेवा करके उनसे वरदान प्राप्त कर लिया था। पार्वती के वरदान से शक्तिशालिनी यह राक्षसी सदा घमण्ड में भरी रहती थी। वह पश्चिम समुद्र के तट पर एक वन में रहती थी। वह वन भी उसी राक्षसी के नाम से दारूका वन कहलाने लगा था। वह पश्चिम समुद्र का तट सम्पूर्ण समृद्धियों से भरा रहता था। उसका विस्तार सोलह योजन का था। दारूका का पति दारूक नाम का राक्षस था, जो स्वभाव से बहुत दुष्ट था। उस वन की रक्षा का भार देवी पार्वती ने अपनी सेविका दारूका को दे दिया था। दारूका में पार्वती की कृपा से इतनी शक्ति थी कि वह उस इन को अपनी इच्छानुसार कहीं भी ले जा सकती थी। राक्षस दारूक अपनी पत्नी के साथ जहाँ भी रहता, वहीं प्रजा को पीड़ित करता रहता था। एक बार दारूक ने भार्गव कुल में उत्पन्न आर्यऋषि को पीड़ा पहुँचाने का प्रयत्न किया तो आर्यऋषि ने श्राप दे दिया-दारूक! तुम व तुम्हारी सेना जब जहाँ कहीं भी प्राणियों की हिंसा या यज्ञ का विध्वन्स करेगी, तो उसी समय ये सभी अपने प्राणों से हाथ धो बैठेंगे। देवताओं ने जब यह बात सुनी तो उन्होंने राक्षसों पर चढ़ाई कर दी। उन्होंने सोचा कि यदि राक्षस देवों को मारेंगे तो ऋषि के आप से मर जायेंगे और यदि न मरेंगे तो भूखों मर जायेंगे। दारूक ने यह बात सुन ली। दारूका अपने पति, परिवार और दारूका वन को लेकर समुद्र में जा बसी। अब राक्षस लोग पृथ्वी पर न रहकर जल में निर्भय होकर रहने लगे। कुछ समय बाद ऐसा हुआ कि एक सुप्रिय नाम का एक सिद्ध व्यापारी वैश्य अपने बेड़े के साथ समुद्र में वहाँ से निकला। दारूक राक्षस ने उसका बेटा देखा तो उसने कैद कर कारागार में डाल दिया। व्यापारी पुत्र सुप्रिय शिव भक्त था। उसने कारागार में भगवान शिव की आराधना की। आराधना से भगवान शिव प्रसन्न हुए और वे दारूक और दारूक की सेना का संहार करने के लिए उद्यत हुए। उसी समय दारूका ने देवी की प्रार्थना की-आप मेरे वंश की रक्षा करें। भगवती प्रसन्न हुई, उन्होंने तत्काल भगवान शिव से कहा कि यह दारूका मेरी भक्त है, यह राक्षसों का राज्य है ये राक्षस पत्नियाँ जिन पुत्रों को यहाँ पैदा करेगी, वे सब मिलकर इस वन में निर्भय होकर रहे। राक्षस दारूक मारा जा चुका है, शेष यह उसकी सेना और संतान यही रहेंगी। मैं भी तुम्हारे साथ इस वन में रहूँगी। लिंग जो वैश्य सुप्रिय ने बनाया है वह ज्योतिर्लिंग नागेश्वर नाम से विख्यात होगा, हम तुम नागेश्वर के रूप में वास करेंगे।

### श्री विक्रम शुभ सम्वत् 2081

**31 दिसम्बर 2024 से 13 जनवरी 2025 तक**
**उत्तरायण — शिशिर ऋतु**

| तिथि | वार | समाप्ति घं. | समाप्ति मि. | नक्षत्र | समाप्ति घं. | समाप्ति मि. | योग | समाप्ति घं. | समाप्ति मि. | सू.उ. घ.मि. | सू.अ. घ.मि. | चन्द्रराशि प्रवेश | सूर्य स्पष्ट स्टे.टा ५/३० | | | दिसम्बर जनवरी | यहाँ पर दिया गया, सभी समय, भा.स्टे.स्टा.में है जो सम्पूर्ण भारत में समान रूप से ग्राह्य रहेगा। |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ०१ | मंगल | २७ | १९ | पूषा | २४ | ०२ | ध्रुव | १८ | ५६ | ०७ १२ | १७ ५५ | म.३०।०० | ०८ | १५ | ३५ | 31 | - |
| ०२ | बुध | २६ | २२ | उषा | २३ | ४५ | व्या | १७ | ०४ | १२ | ४९ | मकर | ०८ | १६ | ३६ | 01 | चन्ददर्शन, जनवरी सन् २०२५ ई.प्रा. |
| ०३ | गुरू | २५ | ०७ | श्रव | २३ | १० | हर्ष | १४ | ५६ | १२ | ४९ | मकर | ०८ | १७ | ३८ | 02 | रवियोग २३।१३ से |
| ०४ | शुक्र | २३ | ३८ | धनि | २२ | २० | वज्र | १२ | ३७ | १२ | ५० | कुं.१०।४८ | ०८ | १८ | ३९ | 03 | भ. १२।२५ से २३।४० तक, श्री विनायक चतुर्थीव्रत, पंचक प्रा. १०।४८ से |
| ०५ | शनि | २२ | ०१ | शत | २१ | २२ | सिद्धि | १० | ०५ | १२ | ५१ | कुम्भ | ०८ | १९ | ४० | 04 | बुध मूलधनु में १२।४, रवियोग २१।२५ से |
| ०६ | रवि | २० | १५ | पूभा | २० | १५ | व्याघा | ०७ २८ | ३० ४९ | १३ | ५१ | मी.१४।३५ | ०८ | २० | ४१ | 05 | सर्वार्थसिद्धि २०।१८ से ३१।१२ तक, रवियोग २०।१७ तक |
| ०७ | सोम | १८ | २२ | उभा | १९ | ०४ | परि | २६ | ०३ | १३ | ५२ | मीन | ०८ | २१ | ४२ | 06 | भ. १८।२४ से २९।२६ तक |
| ०८ | मंगल | १६ | २५ | रेव | १७ | ४७ | शिव | २३ | १२ | १३ | ५३ | मे.१७।४९ | ०८ | २२ | ४३ | 07 | श्री दुर्गाष्टमी, पंचक समाप्त १७।४९ पर अमृतसिद्धि १७।५० से ३१।१२ तक |
| ०९ | बुध | १४ | २३ | अश्वि | १६ | २८ | सिद्ध | २० | २१ | १३ | ५३ | मेष | ०८ | २३ | ४५ | 08 | - |
| १० | गुरू | १२ | २० | भर | १५ | ०५ | साध्य | १७ | २६ | १४ | ५४ | वृ.२०।४६ | ०८ | २४ | ४६ | 09 | भ.२३।२१ से महापात दोष १४।२ से १९।२५ तक, रवियोग १५।७ तक |
| ११ | शुक्र | १० | १८ | कृति | १३ | ४५ | शुभ | १४ | ३३ | १४ | ५५ | वृष | ०८ | २५ | ४७ | 10 | भ.१०।२० तक, पुत्रदा एकादशी व्रत (गोछाछ), सूर्य उत्तराषाढा में २६।२१ |
| १२ | शनि | ०८ | २० | रोहि | १२ | २८ | शुक्ल | ११ | ४५ | १४ | ५५ | मि.२३।५५ | ०८ | २६ | ४८ | 11 | शनि प्रदोष व्रत, अमृतसिद्धि ७।१४ से १२।३० तक |
| १३ | शनि | ३० | ३१ | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०८ | ०० | ०० | 00 | त्रयोदशी का क्षय |
| १४ | रवि | २९ | ०० | मृग | ११ | २३ | ब्रह्मा ऐन्द्र | ०९ ३० | ०७ ४२ | १४ | ५६ | मिथुन | ०८ | २७ | ४९ | 12 | भ. २९।२से, वक्री मंगल पुन.में२४।१४, राहु अ.भा१व केतु उ.फा.३ में |
| १५ | सोम | २७ | ५४ | आर्द्रा | १० | ३५ | वैधृ | २८ | ३७ | ०७ १४ | १७ ५७ | क.२८।१८ | ०८ | २८ | ५० | 13 | भ.१६।२९ तक, श्री शाकंभरी सोमवती पूर्णिमा व्रत, श्री सत्यनारायण व्रत |

दि.१३/०१/२०२५ स्टे.टा. ०५/३०

| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ०८ | ०२ | ०३ | ०८ | ०१ | १० | १० | ११ |
| २८ | १७ | ०३ | १२ | १७ | १५ | २१ | ०६ |
| ५० | ०४ | १४ | २४ | ५५ | ५८ | १९ | ३९ |
| १४ | २० | ४३ | १५ | ०८ | ४३ | ०४ | ०३ |
| ६१ | ८१५ | २३ | ८८ | ०४ | ५९ | ०५ | ०३ |
| ०६ | १६ | ५७ | ५२ | २७ | ५० | २५ | ११ |
| उषा | आर्द्रा | पुन | मूल | रोहि३ | शत | पूभा१ | उभा१ |
| - | - | व | मा | व | मा | मा | व |

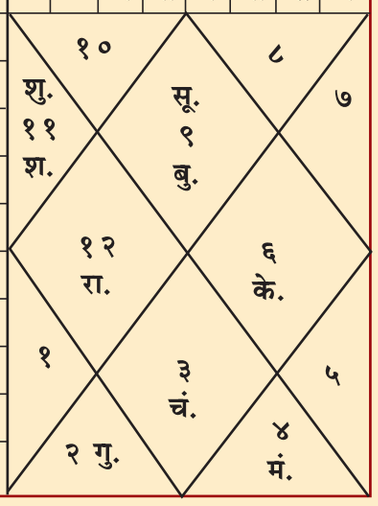


### श्री विक्रम शुभ सम्वत् 2081

**14 जनवरी से 29 जनवरी 2025 तक**
**उत्तरायण — शिशिर ऋतु**

| तिथि | वार | समाप्ति घं. | समाप्ति मि. | नक्षत्र | समाप्ति घं. | समाप्ति मि. | योग | समाप्ति घं. | समाप्ति मि. | सू.उ. घ.मि. | सू.अ. घ.मि. | चन्द्रराशि प्रवेश | सूर्य स्पष्ट स्टे.टा ५/३० | | | जनवरी | यहाँ पर दिया गया, सभी समय, भा.स्टे.स्टा.में है जो सम्पूर्ण भारत में समान रूप से ग्राह्य रहेगा। |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ०१ | मंगल | २७ | १९ | पुन | १० | १६ | विष्कु | २६ | ५६ | ०७ १४ | १७ ५५ | कर्क | ०८ | २९ | ५१ | 14 | सूर्य मकर में ८।५४ पुण्यकाल दिनभर, मलमास समाप्त |
| ०२ | बुध | २७ | २१ | पुष्य | १० | २७ | प्रीति | २५ | ४४ | १४ | ५८ | कर्क | ०९ | ०० | ५२ | 15 | - |
| ०३ | गुरू | २८ | ०५ | श्ले | ११ | १६ | आयु | २५ | ०८ | १४ | १७ ५९ | सिं.११।१८ | ०९ | ०१ | ५४ | 16 | भ. १५।४५ से २८।७ तक |
| ०४ | शुक्र | २९ | २९ | मघा | १२ | ४३ | सौभा | २४ | ५४ | १४ | १८ ०० | सिंह | ०९ | ०२ | ५५ | 17 | श्री संकष्टचतुर्थी व्रत चन्द्रोदय २१।२०, शुक्र पू.भा.में ७।४२ |
| ०५ | शनि | अ. | रा. | पूफा | १४ | ५० | शोभ | २५ | १३ | १४ | १८ ०० | कं.२१।२८ | ०९ | ०३ | ५६ | 18 | - |
| ०५ | रवि | ०७ | २९ | उफा | १७ | २८ | अति | २५ | ५५ | १४ | ०१ | कन्या | ०९ | ०४ | ५७ | 19 | बुधास्त पूर्व में ७।५०, सायन कुम्भ में रवि २५।२९, सर्वार्थसिद्धि ७।१४ |
| ०६ | सोम | १० | ०० | हस्त | २० | २७ | सुक | २६ | ५० | १४ | ०२ | कन्या | ०९ | ०५ | ५८ | 20 | भ.१०।०० से २३।२० तक, सूर्य अभिजित् में २२।५, रवियोग २०।२९ तक |
| ०७ | मंगल | १२ | ३८ | चित्रा | २३ | ३४ | धृति | २७ | ४७ | १४ | ०३ | तु.१०।०२ | ०९ | ०६ | ५९ | 21 | श्री कालाष्टमी, श्री रामानंदाचार्य जयंती, वक्री भौम मिथुन में १०।०१ |
| ०८ | बुध | १५ | १८ | स्वा | २६ | ३१ | शूल | २८ | ३५ | १४ | ०३ | तुला | ०९ | ०८ | ०० | 22 | बुध उ.षा. में १४।५०, महापात दोष २३।२३ से २८।४८ तक |
| ०९ | गुरू | १७ | ३६ | विशा | २९ | ०५ | गण्ड | २९ | ०३ | १३ | ०४ | वृ.२२।३१ | ०९ | ०९ | ०१ | 23 | भ. ३०।३२ से, सूर्य श्रवण में २८।४३ |
| १० | शुक्र | १९ | २४ | अनु | ३१ | ०५ | वृद्धि | २९ | ०६ | १३ | ०५ | वृश्चिक | ०९ | १० | ०२ | 24 | भ. १९।२३ तक, सूर्य की अभिजित् से निवृत्ति २५।४२, बुध मकर में १७।३९ |
| ११ | शनि | २० | ३१ | ज्ये | अ. | रा. | ध्रुव | २८ | ३५ | १३ | ०५ | वृश्चिक | ०९ | ११ | ०३ | 25 | षट्तिला एकादशीव्रत (खोपरा) |
| १२ | रवि | २० | ५२ | ज्ये | ०८ | २३ | व्या | २७ | ३१ | १२ | ०६ | ध.०८।२५ | ०९ | १२ | ०४ | 26 | भा. गणतंत्र दिवस, सर्वार्थसिद्धि ८।२६ से ३१।११ तक |
| १३ | सोम | २० | ३२ | मूल | ०९ | ०० | हर्ष | २५ | ५३ | १२ | ०७ | धनु | ०९ | १३ | ०५ | 27 | भ. २०।३४ से, सोमप्रदोषव्रत, शिवरात्रि व्रत, शुक्र मीन में ३१।०० |
| १४ | मंगल | १९ | ३५ | पूषा | ०९ | ०० | वज्र | २३ | ४९ | १२ | ०७ | म.१४।५२ | ०९ | १४ | ०६ | 28 | भ. ८।०६ तक |
| ३० | बुध | १८ | ०३ | उषा | ०८ | १८ | सिद्धि | २१ | १८ | ०७ १२ | १८ ०८ | मकर | ०९ | १५ | ०७ | 29 | मौनी अमावस्या, प्रयागराज में कुम्भ महापर्व का मुख्य स्नान |

दि.२७/०१/२०५ स्टे.टा. ०५/३०

| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ०९ | ०८ | ०२ | ०९ | ०१ | १० | १० | ११ |
| १३ | ११ | २७ | ०३ | १७ | २९ | २२ | ०५ |
| ०५ | २३ | ५१ | ५९ | ११ | ०५ | ४१ | ५४ |
| ०२ | ३६ | ५१ | ०४ | ३२ | २७ | ०३ | ३१ |
| ६१ | ७९९ | २० | ९७ | ०१ | ५१ | ०६ | ०३ |
| ०० | ०३ | ३४ | ०२ | ४० | २५ | २१ | ११ |
| श्रव | मूल | पुन | उषा | रोहि३ | पूभा | पूभा१ | उभा१ |
| - | - | व | मा | व | मा | मा | व |

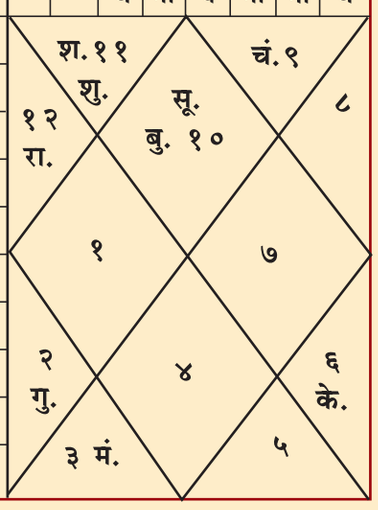

# विक्रम पचांग



श्री रामेश्वर मंदिर

**माघ शुक्ल पक्ष**
30 जनवरी 2025 से 12 फरवरी 2025
(हेमंत ऋतु)

## सम्राट विक्रमादित्य सम्वत् 2081
पिंगल नाम सम्वत्सर
• कलि संवत 5125 • सृष्टि आरम्भ 1955885125 • राजा – मंगल • मंत्री – शनि

**फाल्गुन कृष्ण पक्ष**
13 फरवरी 2025 से 27 फरवरी 2025
(हेमंत/शिशिर ऋतु)

| वार | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| रविवार | | 02 फरवरी चतुर्थी पंचमी (वसंत पंचमी) | 09 फरवरी द्वादशी | 16 फरवरी चतुर्थी | 23 फरवरी दशमी (स्वामी दयानंद सरस्वती जयंती) |
| सोमवार | | 03 फरवरी षष्ठी | 10 फरवरी त्रयोदशी | 17 फरवरी पंचमी | 24 फरवरी एकादशी |
| मंगलवार | | 04 फरवरी सप्तमी (नर्मदा जयंती) | 11 फरवरी चतुर्दशी (पं. दिनदयाल उपाध्याय पुण्यतिथि) | 18 फरवरी षष्ठी | 25 फरवरी द्वादशी |
| बुधवार | | 05 फरवरी अष्टमी | 12 फरवरी पूर्णिमा | 19 फरवरी षष्ठी (गुरु गोलवरकर जयंती, छत्रपति शिवाजी जयंती) | 26 फरवरी त्रयोदशी (वीर सावरकर पुण्यतिथि, महाशिवरात्रि) |
| गुरुवार | 30 जनवरी प्रतिपदा (महात्मा गांधी पुण्यतिथि, गुप्त नवरात्रि आरंभ) | 06 फरवरी नवमी (लता मंगेश्कर पुण्यतिथि) | 13 फरवरी प्रतिपदा | 20 फरवरी सप्तमी | 27 फरवरी चतुर्दशी अमावस्या |
| शुक्रवार | 31 जनवरी द्वितीया | 07 फरवरी दशमी | 14 फरवरी द्वितीया | 21 फरवरी अष्टमी | |
| शनिवार | 01 फरवरी तृतीया | 08 फरवरी एकादशी | 15 फरवरी तृतीया (कवियत्री सुभद्राकुमारी चौहान पुण्यतिथि) | 22 फरवरी नवमी (समर्थ गुरु रामदास जयंती) | |

## श्री रामेश्वर ज्योतिर्लिंग

श्री रामेश्वर ज्योतिर्लिंग तमिलनाडु राज्य के रामनाथपुरम नामक स्थान पर स्थित है। इस स्थान की गणना देश के चार प्रमुख धर्मों में की जाती है। इस ज्योतिर्लिंग की स्थापना स्वयं भगवान श्रीराम ने लंका पति विश्व विजय रावण पर विजय पाने के लिए लंका आक्रमण से पूर्व एक अनुष्ठान के रूप में की थी। रामेश्वर ज्योतिर्लिंग के विषय में अनेक प्रकार की कथाएँ हैं, जिनमें परस्पर भेद है। पर उन कथाओं पर गहराई से विचार करें तो कथा का यह सामान्य तत्व ज्ञात होता है। राम-रावण युद्ध दो वृहद शक्तियों के बीच था। भगवान श्रीराम के सामने शिव भक्त शक्तिशाली रावण शत्रु रूप में था। रावण शिव की कृपा से असाधारण शक्तिशाली, बलशाली, मायावी, भयंकर सहयोगियों के सहित एक बहुत बड़ी त्रिलोक्य विजयनी सेना के साथ था। फलस्वरूप उसके ऊपर विजय प्राप्त करने के लिए श्रीराम को दिव्य शक्तियों की आवश्यकता थी और इसके लिए ही उन्होंने युद्ध के पूर्व समुद्र तट पर पार्थिव शिवलिंग के रूप में भगवान शिव की प्रतिष्ठा की और उनकी उपासना की। शिवलिंग की स्थापना करने के पश्चात इस लिंग को काशी विश्वनाथ के समान मान्यता देने हेतु, उन्होंने हनुमानजी को काशी से एक शिवलिंग लाने को कहा। हनुमान पवन-सुत थे। बड़े वेग से आकाश मार्ग से चल पड़े और शिवलिंग ले आए। यह देखकर श्रीराम बहुत प्रसन्न हुए और रामेश्वर ज्योतिर्लिंग के साथ काशी के लिंग की भी स्थापना कर दी। फलस्वरूप भगवान शिव प्रसन्न हुए और श्रीराम को युद्ध में विजयश्री प्राप्त हुई। यह श्रीराम द्वारा प्रतिष्ठित पार्थिव शिवलिंग श्री रामेश्वर ज्योतिर्लिंग के रूप में प्रसिद्ध हुआ और तब से आज तक पूजित हो रहा है।

### श्री विक्रम शुभ सम्वत् 2081

30 जनवरी से 12 फरवरी 2025 तक

उत्तरायण — शिशिर ऋतु

| तिथि | वार | समाप्ति घं. | समाप्ति मि. | नक्षत्र | समाप्ति घं. | समाप्ति मि. | योग | समाप्ति घं. | समाप्ति मि. | सू.उ. घ.मि. | सू.अ. घ.मि. | चन्द्रराशि प्रवेश | सूर्य स्पष्ट स्टे.टा ५/३० | | | जनवरी फरवरी | यहाँ पर दिया गया, सभी समय, भा.स्टे.स्टा.में है जो सम्पूर्ण भारत में समान रूप से ग्राह्य रहेगा । |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ०१ | गुरू | १६ | ०८ | श्रव धनि | ०७ २९ | १३ ४८ | व्य | १८ | ३३ | ०७ १२ | १८ ०९ | कु.१८।३५ | ०९ | १६ | ०८ | 30 | चन्द्रदर्शन, पंचक प्रा. १८।३५ से, बुध श्रव. में २२।५ |
| ०२ | शुक्र | १४ | ०० | शत | २८ | ११ | वरी | १५ | ३२ | १२ | ०९ | कुम्भ | ०९ | १७ | ०९ | 31 | रवियोग २८।१४ से |
| ०३ | शनि | ११ | ३६ | पूभा | २६ | ३२ | परि | १२ | २४ | ११ | १० | मी.२०।५७ | ०९ | १८ | १० | 01 | भ. २२।२६ से, गौरी तृतीया, वरदतिलकुन्दचतुर्थी व्रत, विनायक चतुर्थी व्रत |
| ०४ | रवि | ०९ | १२ | उभा | २४ | ५१ | शिव सिद्ध | ०९ ३० | १३ ०५ | ११ | ११ | मीन | ०९ | १९ | ११ | 02 | भ. ९।१४ तक, श्री वसंत पंचमी, श्री सरस्वती पूजन, खटवांग जयंती, शनि पू.भा.२ |
| ०५ | रवि | ३० | ५० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | 00 | पंचमी का क्षय |
| ०६ | सोम | २८ | ३५ | रेव | २३ | १५ | साध्य | २७ | ०२ | १० | ११ | मे.२३।१७ | ०९ | २० | १२ | 03 | पंचक स. २३।१७ पर, रवियोग २३।१७ तक |
| ०७ | मंगल | २६ | २९ | अश्वि | २१ | ४८ | शुभ | २४ | ०५ | १० | १२ | मेष | ०९ | २१ | १२ | 04 | भ. २६।३१ से नर्मदा जयंती, रथ-आरोग्य सप्तमी, गुरू मार्गी १५।१२ |
| ०८ | बुध | २४ | ३४ | भर | २० | ३० | शुक्ल | २१ | १८ | ०९ | १३ | वृ.२६।१६ | ०९ | २२ | १३ | 05 | भ. १३।३४ तक, श्री दुर्गाष्टमी, भीष्माष्टमी, सर्वार्थसिद्धि २०।३३ से ३१।०८ तक |
| ०९ | गुरू | २२ | ५२ | कृति | १९ | २७ | ब्रह्म | १८ | ४२ | ०९ | १३ | वृष | ०९ | २३ | १४ | 06 | सूर्य धनि. में ७।४९, रवियोग ७।४८ तक बाद में १९।३० से |
| १० | शुक्र | २१ | २६ | रोहि | १८ | ३७ | ऐंद्र | १६ | १६ | ०८ | १४ | मि.३०।१९ | ०९ | २४ | १५ | 07 | बुध धनि. में १८।३२ |
| ११ | शनि | २० | १४ | मृग | १८ | ०५ | वैधृ | १४ | ०४ | ०८ | १५ | मिथुन | ०९ | २५ | १६ | 08 | भ. ८।५२ से २०।१६ तक, जया एकादशीव्रत (गन्ने का रस), रवियोग १८।७ तक |
| १२ | रवि | १९ | २३ | आर्द्रा | १७ | ५१ | विष्कु | १२ | ०७ | ०७ | १५ | मिथुन | ०९ | २६ | १६ | 09 | भीष्मद्वादशी |
| १३ | सोम | १८ | ५५ | पुन | १८ | ०० | प्रीति | १० | २५ | ०७ | १६ | क.११/५७ | ०९ | २७ | १७ | 10 | सोमप्रदोष व्रत, श्री विश्वकर्मा जयंती, सर्वार्थसिद्धि १८।३६ से ३१।४ तक |
| १४ | मंगल | १८ | ५४ | पुष्य | १८ | ३३ | आयु | ०९ | ०६ | ०६ | १७ | कर्क | ०९ | २८ | १८ | 11 | भ. १८।५३ से, बुध कुम्भ में १२।५४, सर्वार्थसिद्धि १८।३६ से ३१।४ तक |
| १५ | बुध | १९ | २० | श्ले | १९ | ३४ | सौभ | ०८ | ०७ | ०७ ०५ | १८ १७ | सिं.१९।३६ | ०९ | २९ | १९ | 12 | भ. ०७।०९तक, दाण्डारोपिणी पूर्णिमा-श्री सत्यनारायण व्रत, श्री ललिता जयंती |

दि.१०/०२/२०२५स्टे.टा. ०५/३०

| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ०९ | ०२ | ०२ | ०९ | ०१ | ११ | १० | ११ |
| २७ | २६ | २४ | २७ | १७ | ०९ | २४ | ०५ |
| १७ | २६ | ०५ | ३९ | ०७ | ४० | १३ | १० |
| १० | ४८ | ०८ | ५१ | २७ | ५६ | १४ | ०३ |
| ६० | ७८९ | १० | १०७ | ०१ | ३७ | ०६ | ०३ |
| ४२ | १५ | ३८ | ०५ | २२ | ०७ | ५१ | ११ |
| धनि | पुन | पुन | धनि | रोहि३ | उभा | पूभा२ | उभा१ |
| - | - | व | मा | मा | मा | मा | व |

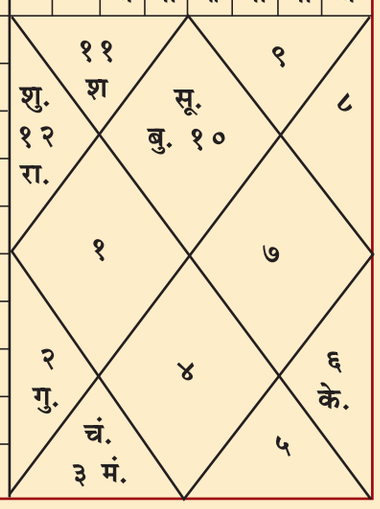


### श्री विक्रम शुभ सम्वत् 2081

13 फरवरी से 27 फरवरी 2025 तक

उत्तरायण — शिशिर/वसन्त ऋतु

| तिथि | वार | समाप्ति घं. | समाप्ति मि. | नक्षत्र | समाप्ति घं. | समाप्ति मि. | योग | समाप्ति घं. | समाप्ति मि. | सू.उ. घ.मि. | सू.अ. घ.मि. | चन्द्रराशि प्रवेश | सूर्य स्पष्ट स्टे.टा ५/३० | | | फरवरी | यहाँ पर दिया गया, सभी समय, भा.स्टे.स्टा.में है जो सम्पूर्ण भारत में समान रूप से ग्राह्य रहेगा । |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ०१ | गुरू | २० | २१ | मघा | २१ | ०५ | शोभ | ०७ | २९ | ०७ ०५ | १८ १८ | सिंह | १० | ०० | १९ | 13 | - |
| ०२ | शुक्र | २१ | ५२ | पूफा | २३ | ०७ | अति | ०७ | १८ | ०४ | १८ | कं.२९।४२ | १० | ०१ | २० | 14 | बुध शत.मे २९।६, सर्वार्थसिद्धि ७।४ से २३।९ तक |
| ०३ | शनि | २३ | ५१ | उफा | २५ | ३७ | सुक | ०७ | ३० | ०४ | १९ | कन्या | १० | ०२ | २० | 15 | भ. १०।५४ से २३।५३ तक |
| ०४ | रवि | २६ | १४ | हस्त | २८ | २८ | धृति | ०८ | ०४ | ०३ | १९ | कन्या | १० | ०३ | २१ | 16 | श्री संकष्टातुर्थीव्रत, चन्द्रोदय २१।४२, अमृतसिद्धि ७।३ से २६।१६ तक |
| ०५ | सोम | २८ | ५१ | चित्रा | अ. | रा. | शूल | ०८ | ५१ | ०२ | २० | तु.१८।०२ | १० | ०४ | २२ | 17 | महापात दोष १६।४४ से २१।१२ तक |
| ०६ | मंगल | अ. | रा. | चित्रा | ०७ | ३२ | गण्ड | ०९ | ५० | ०१ | २१ | तुला | १० | ०५ | २२ | 18 | श्री महाकालेश्वर नवरात्र एवं हरिकथा प्रा. |
| ०६ | बुध | ०७ | ३१ | स्वा | १० | ३८ | वृद्धि | १० | ४५ | ०१ | २१ | वृ.३०।४८ | १० | ०६ | २३ | 19 | भ. ७।३३ से २०।४६ तक, सूर्य शतभिषा में १२।२५, रवियोग १०।४० |
| ०७ | गुरू | १० | ०० | विशा | १३ | २८ | ध्रुव | ११ | ३१ | ०७ ०० | २२ | वृश्चिक | १० | ०७ | २३ | 20 | कालाष्टमी, सर्वार्थसिद्धि १३।३१ से ३०।५८ तक, रवियोग १३।३० तक |
| ०८ | शुक्र | ११ | ५६ | अनु | १५ | ५१ | व्या | ११ | ५७ | ०६ ५९ | २२ | वृश्चिक | १० | ०८ | २४ | 21 | - |
| ०९ | शनि | १३ | १७ | ज्ये | १७ | ३७ | हर्ष | ११ | ५४ | ५९ | २३ | ध.१७।३९ | १० | ०९ | २४ | 22 | भ. २५।३७ से, बुध पू.भा. में ९।५० |
| १० | रवि | १३ | ५३ | मूल | १८ | ४१ | वज्र | ११ | १७ | ५८ | २३ | धनु | १० | १० | २४ | 23 | भ. १३।५५ तक, शनि अस्त ९।५३, सर्वार्थसिद्धि ६।५८ से १८।४३ तक |
| ११ | सोम | १३ | ४३ | पूषा | १९ | ०० | सिद्धि | १० | ०३ | ५७ | २४ | म.२४।५६ | १० | ११ | २५ | 24 | विजया एकादशीव्रत (पेड़ा), मंगल मार्गी ७।३२ |
| १२ | मंगल | १२ | ४५ | उषा | १८ | २८ | व्य वरी | ०८ २९ | १५ ५१ | ५६ | २४ | मकर | १० | १२ | २६ | 25 | भैमप्रदोष व्रत, बुधोदय पिश्चम में १९।२३ |
| १३ | बुध | ११ | ०७ | श्रव | १७ | २१ | परि | २६ | ५६ | ५५ | २५ | कुं.२८।३७ | १० | १३ | २६ | 26 | भ. ११।९ से २२।२ तक, श्री महाशिवरात्रिव्रत, मध्यरात्रि २४।१५ से |
| १४ | गुरू | ०८ | ५२ | धनि | १५ | ४१ | शिव | २३ | ३८ | ०६ ५५ | १८ २५ | कुम्भ | १० | १४ | २६ | 27 | अमावस्या पुण्य |
| ३० | गुरू | ३० | १२ | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | 00 | अमावस्या का क्षय |

दि.२४/०२/२०२५स्टे.टा. ०५/३०

| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १० | ०८ | ०२ | १० | ०१ | ११ | १० | ११ |
| ११ | १९ | २२ | २३ | १७ | १५ | २५ | ०४ |
| २४ | १२ | ४८ | २० | ४२ | ५५ | ५२ | २५ |
| ४९ | २९ | २५ | ३९ | ३२ | ०४ | २१ | ३२ |
| ६० | ८०२ | ०० | १०८ | ०३ | १२ | ०७ | ०३ |
| २२ | ०६ | २२ | ४५ | ५८ | ४६ | २३ | ११ |
| शत | पूषा | पुन | पूभा | रोहि३ | उभा | पूभा२ | उभा१ |
| - | - | व | मा | मा | मा | मा | व |

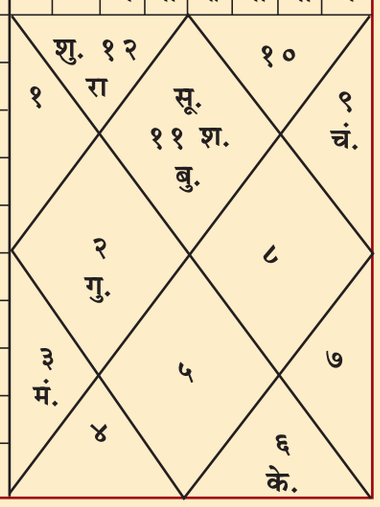

# विक्रम पंचांग

*श्री घृष्णेश्वर मंदिर*

फाल्गुन शुक्ल पक्ष
28 फरवरी 2025 से 14 मार्च 2025
(हेमंत ऋतु)

## सम्राट विक्रमादित्य सम्वत् 2081

पिंगल नाम सम्वत्सर

• कलि संवत 5125 • सृष्टि आरम्भ 1955885125 • राजा – मंगल • मंत्री – शनि

चैत्र कृष्ण पक्ष
15 मार्च 2025 से 29 मार्च 2025
(हेमंत/शिशिर ऋतु)

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| रविवार | 02 मार्च तृतीया | 09 मार्च दशमी | 16 मार्च द्वितीया | 23 मार्च नवमी भगतसिंह, सुखदेव, राजगुरु शहीद दिवस | | |
| सोमवार | 03 मार्च चतुर्थी | 10 मार्च एकादशी सावित्रीबाई फुले पुण्यतिथि | 17 मार्च तृतीया | 24 मार्च दशमी | | |
| मंगलवार | 04 मार्च पंचमी | 11 मार्च द्वादशी | 18 मार्च चतुर्थी | 25 मार्च एकादशी गणेश शंकर विद्यार्थी बलिदान दिवस पापमोचनीय एकादशी | | |
| बुधवार | 05 मार्च षष्ठी | 12 मार्च त्रयोदशी | 19 मार्च पंचमी रंगपंचमी | 26 मार्च द्वादशी | | |
| गुरुवार | 06 मार्च सप्तमी | 13 मार्च चतुर्दशी होलिका दहन | 20 मार्च षष्ठी | 27 मार्च त्रयोदशी | | |
| शुक्रवार | 28 फरवरी प्रतिपदा राष्ट्रीय विज्ञान दिवस | 07 मार्च अष्टमी | 14 मार्च पूर्णिमा धुलेड़ी चेतन्य महाप्रभू जयंती | 21 मार्च सप्तमी विश्व वानिकी दिवस शीतला सप्तमी | 28 मार्च चतुर्दशी | |
| शनिवार | 01 मार्च द्वितीया रामकृष्ण परमहंस जयंती | 08 मार्च नवमी अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस | 15 मार्च प्रतिपदा | 22 मार्च अष्टमी विश्व जल दिवस | 29 मार्च अमावस्या | |

## श्री घृष्णेश्वर ज्योतिर्लिंग

यह ज्योतिर्लिंग महाराष्ट्र के औरंगाबाद के पास एलौरा गुफाओं के पास वेरूल नाम के गाँव में स्थित है। शिवजी के बारह ज्योतिर्लिंगों में से यह आखिरी ज्योतिर्लिंग है। इस ज्योतिर्लिंग के लिए यह कथा वर्णित है। एक अत्यंत तेजस्वी तपोनिष्ठ ब्राह्मण सुधर्मा दक्षिण देश में देवगिरिपर्वत के पास रहता था। इसकी पत्नी का नाम सुदेहा था। ये दोनों आपस में बेहद प्रेम करते थे। इनकी कोई संतान नहीं थी। ज्योतिष गणना से यह पता चला था कि सुदेहा गर्भवती नहीं हो सकती है। लेकिन फिर भी वो संतान चाहती थी। तब सुदेहा ने अपने पति यानी सुधर्मा से कहा कि वो उसकी छोटी बहन से दूसरा विवाह कर लें। सुधर्मा ने पहले तो यह बात नहीं मानी लेकिन सुदेहा की बार-बार की जिद ने सुधर्मा को झुका ही दिया। सुधर्मा अपनी पत्नी की छोटी बहन घुश्मा को विवाह कर घर ले आये। घुश्मा अत्यंत विनीत और सदाचारिणी स्त्री थी। साथ ही शिव शंकर की परम भक्त भी थी। घुश्मा प्रतिदिन 101 पार्थिव शिवलिंग बनाती थी और पूरे मन के साथ उनका पूजन करती थी। शिवजी की कृपा ऐसी रही कि कुछ ही समय बाद उसके घर में एक बालक ने जन्म लिया। दोनों बहनों की खुशी का ठिकाना न रहा। दोनों बेहद स्नेह से रह रही थीं। लेकिन पता नहीं कैसे सुदेहा के मन में एक गलत विचार घर कर गया। उसने सोचा कि इस घर में सब तो घुश्मा का ही है मेरा कुछ भी नहीं। इस बात को सुदेहा ने इतना सोचा की यह बात उसके मन में घर कर गई। सुदेहा सोच रही थी कि संतान भी उसकी है और उसके पति पर भी घुश्मा ने हक जमा रखा है। घुश्मा का बालक भी बड़ा हो गया है और उसका विवाह भी हो गया है। इन्हीं सब कुविचारों के साथ एक दिन उसने घुश्मा के युवा पुत्र को रात में सोते समय ही मौत के घाट उतार दिया। वहीं, उसके शव को तालाब में फेंक दिया। यह वही तालाब था जहाँ घुश्मा हर रोज पार्थिव शिवलिंगों को डाला करती थी। जब सुबह हुई तो पूरे घर में कोहराम मच गया। घुश्मा और उसकी बहू फूट-फूटकर रोने लगे। लेकिन घुश्मा ने शिव में अपनी आस्था नहीं छोड़ी। उसने हर दिन की तरह ही इस दिन भी शिव की भक्ति की। पूजा समाप्त होने के बाद जब वो पार्थिव शिवलिंगों को विसर्जित करने तालाब पर गई तो उसका बेटा तालाब के अंदर से निकलकर आता हुआ दिखाई पड़ा। बाहर आकर वो हमेशा की तरह घुश्मा के चरणों पर गिर पड़ा। ऐसा लग रहा था कि वो कहीं से घूमकर आ रहा हो। तभी शिव जी प्रकट हुए। उन्होंने घुश्मा से वर माँगने को कहा। लेकिन शिव जी सुदेहा की इस करतूत से बेहद क्रोधित थे और वो अपने त्रिशूल से सुदेहा का गला काटने के लिए उद्यत थे। लेकिन घुश्मा ने शिवजी से हाथ जोड़कर विनती की कि वो उसकी बहन को क्षमा कर दें। जो उसने किया है वो जघन्य पाप है लेकिन शिवजी की दया से ही उसे उसका पुत्र वापस मिला है। अब सुदेहा को माफ कर दें। घुश्मा ने शिव जी से प्रार्थना की कि लोक-कल्याण के लिए वो इसी स्थान पर हमेशा के लिए निवास करें। शिवजी ने घुश्मा की दोनों बातें मान लीं और ज्योतिर्लिंग के रूप मे प्रकट होकर वहीं निवास करने लगे। शिवभक्त घुश्मा के आराध्य होने के कारण ही इनका नाम घुश्मेश्वर महादेव पड़ा। इसे घृष्णेश्वर के नाम से भी जाना जाता है।

### श्री विक्रम शुभ सम्वत् 2081

**28 फरवरी से 14 मार्च 2025 तक**

**उत्तरायण** — **वसन्त ऋतु**

| तिथि | वार | समाप्ति घं. | मि. | नक्षत्र | समाप्ति घं. | मि. | योग | समाप्ति घं. | मि. | सू.उ. घ.मि. | सू.अ. घ.मि. | चन्द्रराशि प्रवेश | सूर्य स्पष्ट स्टे.टा ५/३० | | | फरवरी मार्च | यहाँ पर दिया गया, सभी समय, भा.स्टे.स्टा.में है जो सम्पूर्ण भारत में समान रूप से ग्राह्य रहेगा । |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ०१ | शुक्र | २७ | १४ | शत | १३ | ३८ | सिद्ध | २० | ०५ | ०६<br>५४ | १८<br>२६ | मी.२९।५६ | १० | १५ | २६ | 28 | - |
| ०२ | शनि | २४ | ०७ | पूभा | ११ | २१ | साध्य | १६ | २२ | ५३ | २७ | मीन | १० | १६ | २६ | 01 | चन्द्रदर्शन, फूलेरा २, श्री रामकृष्ण परमहंस जयंती, मार्च मा.प्रा. |
| ०३ | रवि | २१ | ०० | उभा<br>रव | ०९<br>३० | ००<br>३७ | शुभ | १२ | ३७ | ५२ | २७ | मे.३०।३९ | १० | १७ | २७ | 02 | शनि पू.भा.३ में १८।४२, महापात दोष १२।५० से १६।१४ तक |
| ०४ | सोम | १८ | ०१ | अश्वि | २८ | २७ | शुक्ल<br>ब्रह्म | ०८<br>२९ | ५५<br>२१ | ५१ | २७ | मेष | १० | १८ | २७ | 03 | भ. ७।३२ से १८।३ तक, श्री विनायक चतुर्थीव्रत, रवियोग २८।३० से |
| ०५ | मंगल | १५ | १६ | भर | २६ | ३५ | ऐंद्र | २६ | ०५ | ५० | २८ | मेष | १० | १९ | २७ | 04 | सूर्य पू.भा. में १८।४०, सर्वार्थसिद्धि २६।३८ से, रवियोग १८।३९ तक |
| ०६ | बुध | १२ | ५१ | कृति | २५ | ०५ | वैधृ | २३ | ०६ | ४९ | २८ | वृ.८।१३ | १० | २० | २७ | 05 | सर्वार्थसिद्धि दिन-रात, रवियोग २५।०७ तक |
| ०७ | गुरू | १० | ४९ | रोहि | २४ | ०३ | विष्कु | २० | २६ | ४८ | २९ | वृष | १० | २१ | २७ | 06 | भ. १०।५१ से २२।५ तक |
| ०८ | शुक्र | ०९ | १७ | मृग | २३ | २९ | प्रीति | १८ | १२ | ४७ | २९ | मि.११।४५ | १० | २२ | २७ | 07 | श्री दुर्गाष्टमी, होलाष्टक प्रा., रवियोग २३।३२ से |
| ०९ | शनि | ०८ | १५ | आर्द्रा | २३ | २७ | आयु | १० | २२ | ४६ | ३० | मिथुन | १० | २३ | २७ | 08 | - |
| १० | रवि | ०७ | ४३ | पुन | २३ | ५३ | सौभा | १४ | ५५ | ४५ | ३० | क.१७।४५ | १० | २४ | २७ | 09 | भ. १९।४५ से, रवि पुष्य २३।५६ से ३०।४४ तक, रवियोग २३।५५ तक |
| ११ | सोम | ०७ | ४३ | पुष्य | २४ | ४९ | शोभ | १३ | ५३ | ४४ | ३१ | कर्क | १० | २५ | २७ | 10 | भ. ७।४५ तक, आमलकी एकादशीव्रत (आँवला) |
| १२ | मंगल | ०८ | १२ | श्ले | २६ | १२ | अति | १३ | १५ | ४३ | ३१ | सिं.२६।१४ | १० | २६ | २७ | 11 | भौमप्रदोषव्रत, सर्वार्थसिद्धि ६।४३ से २६।१४ तक, |
| १३ | बुध | ०९ | १० | मघा | २८ | ०३ | सुक | १३ | ०० | ४२ | ३१ | सिंह | १० | २७ | २७ | 12 | रवियोग २६।१५ से २८।५ तक |
| १४ | गुरू | १० | ३४ | पूफा | ३० | १८ | धृति | १३ | ०१ | ४१ | ३२ | सिंह | १० | २८ | २७ | 13 | भ. १०।३६ से २३।३० तक, होली होलिका दहन भद्रोत्तर २३।३० बाद |
| १५ | शुक्र | १२ | २२ | उफा | अ. | रा. | शूल | १३ | २० | ०६<br>४० | १८<br>३२ | कं.१२।५६ | १० | २९ | २७ | 14 | फाल्गुनी पूर्णिमाव्रत, धूलेण्डी (धूलोत्सव) श्री चैतन्य महाप्रभु जयंती, होलाष्टक स. |

दि.१०/०३/२०२५स्टे.टा. ०५/३०

| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १० | ०३ | ०२ | ११ | ०१ | ११ | १० | ११ |
| २४ | ०६ | २३ | १३ | १८ | १५ | २७ | ०३ |
| २७ | २० | ५६ | २२ | ५३ | १८ | ३५ | ४० |
| २१ | २२ | ०७ | ४० | ३२ | १४ | १३ | ५७ |
| ५९ | ७६७ | ०९ | ४१ | ०६ | २१ | ०७ | ०३ |
| ५६ | ०५ | ४६ | ०६ | २० | ०६ | २६ | ११ |
| पूभा | पुष्य | पुन | उभा | रोहि३ | उभा | पूभा३ | उभा१ |
| - | - | मा | मा | मा | व | मा | व |

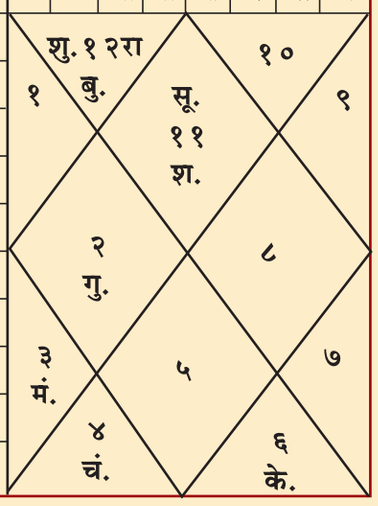




### श्री विक्रम शुभ सम्वत् 2081

**15 मार्च से 29 मार्च 2025 तक**

**उत्तरायण** — **वसन्त ऋतु**

| तिथि | वार | समाप्ति घं. | मि. | नक्षत्र | समाप्ति घं. | मि. | योग | समाप्ति घं. | मि. | सू.उ. घ.मि. | सू.अ. घ.मि. | चन्द्रराशि प्रवेश | सूर्य स्पष्ट स्टे.टा ५/३० | | | मार्च | यहाँ पर दिया गया, सभी समय, भा.स्टे.स्टा.में है जो सम्पूर्ण भारत में समान रूप से ग्राह्य रहेगा । |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ०१ | शनि | १४ | ३३ | उफा | ०८ | ५३ | मण्ड | १४ | ०० | ०६<br>३९ | २८<br>३२ | कन्या | ११ | ०० | २७ | 15 | आम्रकुसुमप्राशन, वसन्तोत्सव, बुध वक्री १२।१८, महापात दोष ६।१० से |
| ०२ | रवि | १७ | ०० | हस्त | ११ | ४३ | वृद्धि | १४ | ४५ | ३८ | ३३ | तु.२५।१५ | ११ | ०१ | २६ | 16 | भ.३०।१७ से, राहु पू.भा. ४ व केतु उफा२ में २१।४, शुक्र का वार्धक्य प्रा. |
| ०३ | सोम | १९ | ३२ | चित्रा | १४ | ४४ | ध्रुव | १५ | ५३ | ३७ | ३३ | तुला | ११ | ०२ | २६ | 17 | श्री सकंष्टातुर्थीव्रत, चंद्रोदय २१।१६, सूर्य उभा. में २७।११ |
| ०४ | मंगल | २२ | ०८ | स्वा | १७ | ४९ | व्या | १६ | ४२ | ३७ | ३४ | तुला | ११ | ०३ | २६ | 18 | अमृतसिद्धि ६।३८ से ११।४५ तक |
| ०५ | बुध | २४ | ३५ | विशा | २० | ४८ | हर्ष | १७ | ३५ | ३६ | ३४ | वृ. १४।०६ | ११ | ०४ | २५ | 19 | श्री रंगपंचमी, श्री चिन्तामण गणेश यात्रा, शुक्रास्त पश्चिम में १९।६ |
| ०६ | गुरू | २६ | ४२ | अनु | २३ | २९ | वज्र | १८ | १७ | ३५ | ३५ | वृश्चिक | ११ | ०५ | २५ | 20 | भ. २६।४५ से, सायन मेष में रवि १४।२३, उत्तरगोलारम्भ |
| ०७ | शुक्र | २८ | २१ | ज्ये | २५ | ४३ | सिद्धि | १८ | ३९ | ३४ | ३५ | ध.२५।४५ | ११ | ०६ | २५ | 21 | भ.१५।३४ तक, श्री शील सप्तमी (श्री शीतलामाता पूजन), रवियोग |
| ०८ | शनि | २९ | २२ | मूल | २७ | २२ | व्य | १८ | ३४ | ३३ | ३५ | धनु | ११ | ०७ | २४ | 22 | कालाष्टमी, शीतलाष्टमी |
| ०९ | रवि | २९ | ३७ | पूषा | २८ | १६ | वरी | १७ | ५६ | ३२ | ३५ | धनु | ११ | ०८ | २४ | 23 | शुक्रोदय पूर्व में ६।३५, सर्वार्थसिद्धि २८।१९ से ३०।३० तक |
| १० | सोम | २९ | ०२ | उषा | २८ | २४ | परि | १६ | ४२ | ३१ | ३६ | म.१०।२५ | ११ | ०९ | २३ | 24 | दशामाता पूजन, सर्वार्थसिद्धि २८।२७ से ३०।२९ तक |
| ११ | मंगल | २७ | ४३ | श्रव | २७ | ४७ | शिव | १४ | ५१ | ३० | ३६ | मकर | ११ | १० | २३ | 25 | पापमोचिनी एकादशीव्रत स्मार्त (चारोली) |
| १२ | बुध | २५ | ४० | धनि | २६ | २८ | सिद्ध | १२ | २३ | २९ | ३६ | कुं. १५।१५ | ११ | ११ | २२ | 26 | पापमोचिनी एकादशी वैष्ण (पंचक प्रा. १५।१५ से, श्री चिन्तामण गणेश यात्रा |
| १३ | गुरू | २३ | ०२ | शत | २४ | ३१ | साध्य<br>शुभ | ०९<br>२९ | २२<br>५४ | २८ | ३६ | कुम्भ | ११ | १२ | २२ | 27 | भ. २३।४ से, प्रदोष व्रत शिवरात्रि व्रत |
| १४ | शुक्र | १९ | ५४ | पूभा | २२ | ०७ | शुक्ल | २६ | ०५ | २७ | ३७ | मी. १६।४८ | ११ | १३ | २१ | 28 | भ. ९।३० तक, महापात दोष १३।१२ से १६।२९ तक |
| ३० | शनि | १६ | २६ | उभा | १९ | २४ | ब्रह्म | २२ | ०१ | ०६<br>२६ | १६<br>३५ | मीन | ११ | १४ | २० | 29 | शनैश्चरी अमावस्या पुण्य, शनि पूभा ४ मीन में २१।४१, शनि उदय २३।८ |

दि.२४/०३/२०२५स्टे.टा. ०५/३०

| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ११ | ०८ | ०२ | ११ | ०१ | ११ | १० | ११ |
| ०९ | २७ | २६ | १० | २० | ०७ | २९ | ०२ |
| २३ | १९ | ५९ | ५५ | ३५ | ५० | १८ | ५६ |
| २० | ०१ | ०५ | १५ | ४५ | ३३ | ४० | २६ |
| ५९ | ७८६ | १६ | ५२ | ०८ | ३७ | ०७ | ०३ |
| ३० | ३२ | ४६ | १४ | २८ | २६ | २२ | ११ |
| उभा | उषा | पुन | उभा | रोहि४ | उभा | पूभा३ | पूभा४ |
| - | - | मा | व | मा | व | मा | व |

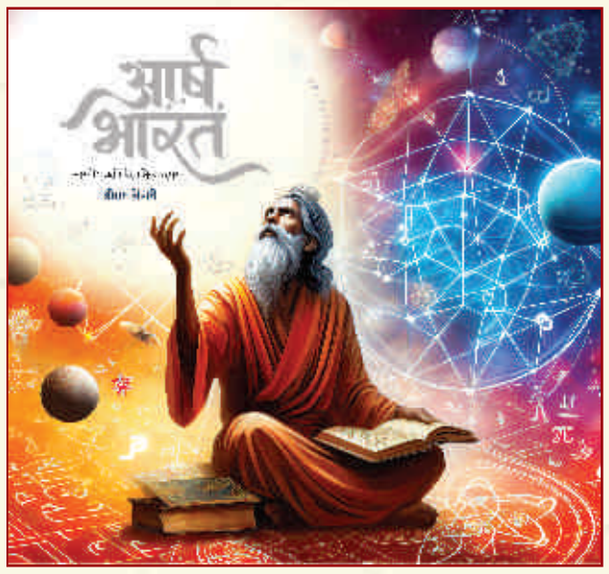


## आर्ष भारत

भारतीय ऋषि विज्ञानिकों की अतिदुर्लभ
और अत्यंत मूल्यवान परम्परा
पर केन्द्रित गौरवपूर्ण प्रकाशन

## भारत विक्रम यूट्यूब चैनल

विक्रमादित्य, उनके युग,
भारत उत्कृर्ष, नवजागरण और
भारत विद्या पर एकाग्र

## विक्रमादित्य वैदिक घड़ी

*भारतीय काल गणना*
*पर केन्द्रित*

## बहुविध पुस्तकमाला

विक्रमादित्य, उनके युग, भारत उत्कर्ष
नवजागरण और भारत विद्या पर केन्द्रित

**दिन का चौघड़िया**

| समय | रविवार | सोमवार | मंगलवार | बुधवार | गुरुवार | शुक्रवार | शनिवार |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 6 से 7:30 तक | उद्वेग | अमृत | रोग | लाभ | शुभ | चर | काल |
| 7:30 से 9 तक | चर | काल | उद्वेग | अमृत | रोग | लाभ | शुभ |
| 9 से 10:30 तक | लाभ | शुभ | चर | काल | उद्वेग | अमृत | रोग |
| 10:30 से 12 तक | अमृत | रोग | लाभ | शुभ | चर | काल | उद्वेग |
| 12 से 1:30 तक | काल | उद्वेग | अमृत | रोग | लाभ | शुभ | चर |
| 1:30 से 3 तक | शुभ | चर | काल | उद्वेग | अमृत | रोग | लाभ |
| 3 से 4:30 तक | रोग | लाभ | शुभ | चर | काल | उद्वेग | अमृत |
| 4:30 से 6 तक | उद्वेग | अमृत | रोग | लाभ | शुभ | चर | काल |

**रात का चौघड़िया**

| समय | रविवार | सोमवार | मंगलवार | बुधवार | गुरुवार | शुक्रवार | शनिवार |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 6 से 7:30 तक | शुभ | चर | काल | उद्वेग | अमृत | रोग | लाभ |
| 7:30 से 9 तक | अमृत | रोग | लाभ | शुभ | चर | काल | उद्वेग |
| 9 से 10:30 तक | चर | काल | उद्वेग | अमृत | रोग | लाभ | शुभ |
| 10:30 से 12 तक | रोग | लाभ | शुभ | चर | काल | उद्वेग | अमृत |
| 12 से 1:30 तक | काल | उद्वेग | अमृत | रोग | लाभ | शुभ | चर |
| 1:30 से 3 तक | लाभ | शुभ | चर | काल | उद्वेग | अमृत | रोग |
| 3 से 4:30 तक | उद्वेग | अमृत | रोग | लाभ | शुभ | चर | काल |
| 4:30 से 6 तक | शुभ | चर | काल | उद्वेग | अमृत | रोग | लाभ |

**चौघड़िया** - चौघड़िया वैदिक ज्योतिषीय समय गाइड है जो 24 घंटे के शुभ मुहूर्त के बारे में जानकारी देता है। यह प्रत्येक दिन और रात को 8 बराबर अवधि में विभाजित करता है। सूर्योदय से सूर्यास्त तक के समय को दिन का समय चौघड़िया कहा जाता है और सूर्यास्त से लेकर अगले दिन के सूर्योदय तक के समय को रात का चौघड़िया कहा जाता है।

### चौघड़िया का अर्थ

चौघड़िया का अर्थ चार घड़ी से है जिसमें कुल 96 मिनट होते हैं। हिंदी शब्दों से व्युत्पन्न, चौघड़िया में 'चै', का अर्थ चार है और 'घड़ी' का अर्थ है समय अवधि। इसे 'चतुर्षिका मुहूर्त' के रूप में भी जाना जाता है। ज्योतिषीय दृष्टि से अच्छे और बुरे सात चौघड़िया हैं। वो हैं:

**उदवेग** - चौघड़िया में, उदवेग पहला मुहूर्त है जो कि सूर्य ग्रह द्वारा शासित है। इस घड़ी को अशुभ माना जाता है। हालांकि, उदवेग में सरकार से संबंधित कार्य करने से फलदायक परिणाम मिलते हैं।

**लाभ** - लाभ दूसरा चौघड़िया है जो बुध ग्रह द्वारा शासित है। यह समय शुभ माना जाता है और किसी भी व्यावसायिक या शैक्षिक संबंधित कार्य को शुरू करने के लिए बहुत उपयुक्त है।

**चर** - शुक्र द्वारा शासित, चर तीसरा चौघड़िया है जिसे यात्रा के प्रयोजनों के लिए शुभ मुहूर्त माना जाता है।

**रोग**- चौघड़िया का चैथा मुहूर्त रोग, मंगल ग्रह द्वारा शासित है। इस अशुभ मुहूर्त में व्यक्ति को कोई भी शुभ काम शुरू नहीं करना चाहिए और न ही चिकित्सकीय परामर्श लेना चाहिए। इस अवधि में युद्ध और शत्रु से संघर्ष होता है।

**शुभ**- शुभ चौघड़िया बृहस्पति ग्रह द्वारा शासित है और किसी भी कार्य को करने के लिए बहुत ही शुभ माना जाता है। इस दौरान विवाह, पूजा, यज्ञ और अन्य धार्मिक गतिविधियां की जानी चाहिए।

**काल** - काल एक अशुभ चौघड़िया है जो कि शनि ग्रह द्वारा शासित है। धन संचय के लिए, इस अवधि को शुभ मुहूर्त या फलदायी समय माना जाता है।

**अमृत** - चौघड़िया के इस अंतिम मुहूर्त पर चंद्रमा ग्रह का शासन होता है। यह दिन का सबसे शुभ समय है। इस अवधि में किया गया कोई भी काम सकारात्मक परिणाम देता है।

# वीर भारत

## युगयुगीन भारत के कालजयी महानायकों की तेजस्विता का संग्रहालय

विक्रम पंचांग

**महाराजा विक्रमादित्य शोधपीठ**
स्वराज संस्थान संचालनालय, संस्कृति विभाग
मध्यप्रदेश शासन का प्रकाशन
बिड़ला भवन, देवास रोड, उज्जैन-456010
दूरभाष : 0734-2521499